

सर्वेक्षण परिवार

अंक नवम

वर्ष - 2025

पूर्वी क्षेत्र कार्यालय एवं
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-रूथानिक निदेशालय
भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता



आवरण पृष्ठ छायांकन : सुपर्णा चौधरी

सर्वेक्षण परिवार

अके जयम

वर्ष - 2025



சர்வேக்ஷன் பரிவார்

ಸರ್ವೇಕ್ಷನ್ ಪರಿವಾರ

സരവേഷ പരിവാർ

ਸਰਵੇਕਸ਼ਨ ਪਰਿਵਾਰ

સર્વેક્ષન પરિવાર

ସର୍ବେକ୍ଷଣ ପରିବାର

सर्वेक्षण परिवारम्

સર્વેક્ષણ પરિવાર

సర్వేక్షన్ పరివార్

સર્વેક્ષણ પરિવાર

सर्वेक्षण परीवार

سارپيکسهان پارگصار

Sarvekshan Pariwar

سر وکشن پریوار

आ सेतु

हिमाचलम्

1767

पूर्वी क्षेत्र कार्यालय एवं

पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय
भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता

सर्वेक्षाण परिवार

अंक - नवम्

वर्ष - 2025

बंगभूमि से प्रारम्भ हुआ
258 बसंत के पार हुआ
भारत का पठारी प्रदेश, या फिर हो हिमालय पहाड़
गंगा का मैदान, या फिर विशाल मरुभूमि थार
तटीय प्रदेश हो, या तंग दर्रे
हमारे सर्वेक्षकों ने किया सबका सर्वे
विविधताओं से भरा हमारा देश
सर्वेक्षण कार्य आसां नहीं 'शुभेश'
फिर भी पग-पग का किया सर्वेक्षण
भारत भूमि का सुन्दर, सटीक मानचित्रण
राष्ट्र की सेवा में सतत् समर्पित हमारा 'सर्वेक्षण परिवार'
पत्रिका का **नवम्** अंक प्रस्तुत है आपको साभार।



पूर्वी क्षेत्र कार्यालय एवं पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू - स्थानिक निदेशालय
भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता

सर्वेक्षण परिवार

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बंधित लेखकों के स्वयं के हैं। भारतीय सर्वेक्षण विभाग का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है। लेखों/रचनाओं की मौलिकता के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे। यह पत्रिका विभागीय वेबसाइट www.surveyofindia.gov.in पर उपलब्ध है।

संरक्षक

डॉ. एम. के. स्टालिन

अपर महासर्वेक्षक, पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता

प्रेरक

श्री संजय कुमार

निदेशक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम

भू-स्थानिक निदेशालय, कोलकाता

प्रधान सम्पादक

श्रीमती स्वर्णिमा बाजपेयी

अधीक्षण सर्वेक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम

भू-स्थानिक निदेशालय, कोलकाता

सम्पादक

एवं पत्रिका की साज-सज्जा

श्री शुभेश कुमार

कार्यालय अधीक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम

भू-स्थानिक निदेशालय, कोलकाता

सम्पादन सहयोग

श्री अमरजीत कुमार

प्रवर श्रेणी लिपिक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम

भू-स्थानिक निदेशालय, कोलकाता

सम्पर्क-सूत्र

पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, 13 बुड स्ट्रीट, कोलकाता

ई-मेल: wbs.gdc soi@gov.in

❖ संदेश

❖ सम्पादकीय

6-8

9

क्रम सं.	शीर्षक	रचनाकार (श्री/श्रीमती)	पृष्ठ
1.	प्रार्थना- राम राम अविराम कहो	शुभेश कुमार	10
2.	हम हैं कौन - इंडियन, भारतीय, हिंदुस्तानी,.....	संजय कुमार	11
3.	सर्वेक्षण कार्य की बदलती तकनीक	रूप कुमार दास	18
4.	मेरी मुश्किल	उदित प्रकाश श्रेयांश	20
5.	राधानाथ सिकंदर - महान गणितज्ञ	स्वर्णिमा बाजपेयी	21
6.	तीन अध्याय	सुजीत सरकार	25
7.	बेसहारा	शुचि दास	27
8.	हमारी हिंदी	अमरजीत कुमार	28
9.	पर्यावरण	धिरन राम	28
10.	मधुर वाणी	सागरिका पैतल	29
11.	मौन मानव	सुपर्णा रॉय	31
12.	ऑपरेशन सिंदूर की जय	शांति दास	32
13.	AEBAS बाबा से कुछ अनुरोध	अमृता मण्डल	33
14.	माँ - सबसे प्यारी	शिखा	35
15.	जगत जननी जगदम्बा - बड़की दादी	शुभेश कुमार	36
16.	बोट पार्टी	गोवर्धन साहा	39
17.	विज्ञान: वरदान या प्रश्न	प्रलय कुमार दास	42
18.	प्रवासी श्रमिक	राजेश रंजन	43
19.	गरीबी और शिक्षा का अनोखा संबंध	अमरजीत कुमार	44
20.	किताबों की दुनिया की मेरी पहली यात्रा	शुचि दास	45
21.	पृथ्वी	सत्य प्रकाश राउत	46
22.	ई-ऑफिस	सत्य प्रकाश राउत	46
23.	पालने से विरासत तक	अनिरुद्ध बासु	47
24.	मायाजाल	गोवर्धन साहा	49
25.	राष्ट्रीय भू-स्थानिक नीति, 2022	राहुल शर्मा	50
26.	नक्शा एवं अमृत परियोजना	संतोष प्रसाद	54
27.	आँख	सत्य प्रकाश राउत	56
28.	बातें उनकी, सहना हमारा	अनिरुद्ध बासु	57
29.	दुर्गा माँ	राणा दास	59
30.	मेरे जीवन की पराकाष्ठा	जय प्रकाश राउत	60
31.	अंतरिक्ष में भारत के बढ़ते कदम	अंशुमन सरकार	61
32.	बुद्ध की बुद्धिमानी	अनुपम बैरागी	62
33.	चंद्रयान 3 : भारत का महत्वाकांक्षी अंतरिक्ष मिशन	प्रलय कुमार दास	63
34.	उद्यान भ्रमण	अभिजीत राय	65

क्रम सं.	शीर्षक	रचनाकार (श्री/श्रीमती)	पृष्ठ
35.	खिचड़ी का भोग	काली प्रसाद मिश्र	66
36.	विज्ञान के लाभ	सुजॉय दे	67
37.	भारतीय सर्वेक्षण विभाग में नियुक्ति का प्रथम दिन	सुमन श्रीवास्तव	68
38.	ऐतिहासिक तथ्यों के आईने में 'बिहार'	सजल कुमार घोष	69
39.	भारतीय सर्वेक्षण विभाग	सुमन श्रीवास्तव	70
40.	जिंदगी	पूनम कुमारी	71
41.	कलम या कि तलवार	पूनम कुमारी	71
42.	धनतेरस	शशांक साहा	72
43.	बेटियां	सरिता कुमारी राम	72
44.	स्वास्थ्य का महत्व एक स्वस्थ जीवन के लिए	दुर्गादास चटर्जी	73
45.	लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका	शशांक साहा	74
46.	महाकाल	आशुतोष रावत	75
47.	लेकिन बीज किसने बोया	आर. के. पाण्डेय	75
48.	मोबाईल फोन: वरदान या अभिशाप	राजेश सिंह	76
49.	महादानी	काली प्रसाद मिश्र	78
50.	प्रतिभा के धनी : सर आशुतोष मुखर्जी	स्वपन कुमार सरकार	79
51.	सरकारी कार्यालयों में AI का उपयोग	अनिरुद्ध बासु	81
52.	महाबतार बाबाजी	सुभाष चन्द्र संतरा	83
53.	भारतीय सर्वेक्षण विभाग की भू-स्थानिक नीति	बबलू नस्कर	85
54.	सेवा, संकल्प और संवेदना का अवसान क्षण	सुदेब नस्कर	87
55.	साइबर सुरक्षा: आज की प्रमुख चुनौतियाँ और आसन्न खतरे	उत्तम कुमार साधुखां	89

चित्रांकन :

- | | | |
|---|---|---|
| 1. सुश्री सेंजुती दास | - | सुपुत्री : श्री प्रलय कुमार दास, अधिकारी सर्वेक्षक |
| 2. सुश्री अन्विता प्रसाद | - | सुपुत्री : श्री संतोष प्रसाद, अधिकारी सर्वेक्षक |
| 3. श्री अहान प्रसाद | - | सुपुत्र : श्री संतोष प्रसाद, अधिकारी सर्वेक्षक |
| 4. सुश्री प्रीती सरकार | - | सुपुत्री : श्री स्वपन कुमार सरकार, कार्यालय अधीक्षक |
| 5. श्री कीर्तिमान सरकार | - | सुपुत्र : श्री स्वपन कुमार सरकार, कार्यालय अधीक्षक |
| 6. सुश्री शुचि दास | - | सुपुत्री : श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक |
| 7. श्री उदित प्रकाश श्रेयांश | - | सुपुत्र : श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक |
| 8. सुश्री आरिषा सरकार | - | भगिनी : श्री सुमिलन सरकार, सर्वेक्षक |
| 9. सुश्री अस्मिता मित्रा | - | सुपुत्री : श्रीमती सीमा मित्रा, भण्डारपाल |
| 10. कुमारी ज्योति कुमारी , प्रवर श्रेणी लिपिक | | |

‘ग’ क्षेत्र अर्थात अहिन्दी भाषी क्षेत्र में कार्यालय की अवस्थिति के कारण व्याकरण की अथवा भाषायी अशुद्धता हो सकती है। अतएव, आदरणीय पाठकवृंद से अनुरोध है कि इस त्रुटि की ओर ध्यान नहीं दें।

हितेश कुमार एस. मकवाना, भा.प्र.से.

भारत के महासर्वेक्षक

Hitesh Kumar S. Makwana, I.A.S.

Surveyor General of India



भारतीय सर्वेक्षण विभाग

महासर्वेक्षक का कार्यालय

हाथीबड़कला एस्टेट

देहरादून-248001(उत्तराखण्ड)

SURVEY OF INDIA

Surveyor General's Office

Hathibarkala Estate

Dehradun-248001(Uttarakhand)



संदेश

यह हर्ष की बात है कि पूर्वी क्षेत्र कार्यालय एवं पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय, कोलकाता द्वारा संयुक्त रूप से इस वर्ष विभागीय हिन्दी पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार' के नवम् अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिन्दी राजभाषा के प्रति लगाव राष्ट्र प्रेम को प्रदर्शित करता है। साथ ही राजभाषा हिन्दी, भारत की विविधता को एक सूत्र में पिरोने की भूमिका निभाती है। अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिन्दी को लोकप्रिय बनाने में हिन्दी पत्रिकाएं विशेष रूप से सहायक होती हैं। हिन्दी सरल एवं सहज होने के कारण दैनिक कार्यालयीन कार्यों के निष्पादन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारतीय सर्वेक्षण विभाग के कोलकाता स्थित कार्यालयों द्वारा हिन्दी पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार' का निरंतर प्रकाशन उनके राजभाषा के प्रति प्रेम को दर्शाता है। साथ ही कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों को प्रदर्शित करने एवं अधिकारियों/कर्मचारियों में छिपी साहित्यिक प्रतिभा को निखारने में यह पत्रिकाएं महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध होगी। उक्त हिन्दी पत्रिका के माध्यम से कार्यालय में कार्यरत कर्मियों को अपने विचार प्रकट करने एवं उनके आदान प्रदान का अवसर प्राप्त होता है जिससे अन्य पाठक भी न केवल लाभान्वित होते हैं बल्कि उनमें हिन्दी के प्रति जागरूकता को भी प्रदर्शित करते हैं।

मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सभी रचनाकारों, सम्पादक मण्डल तथा इससे जुड़े सभी कर्मिकों को शुभकामनाएं संप्रेषित करता हूं।

(हितेश कुमार एस. मकवाना)

भा.प्र.से.

भारत के महासर्वेक्षक

Tel (D) : +91-135-2744268

E-mail: sgi.soi@gov.in

डॉ. एम. के. स्टालिन

अपर महासर्वेक्षक

Dr. M. K. Stalin

Addl. Surveyor General



भारतीय सर्वेक्षण विभाग

अपर महासर्वेक्षक का कार्यालय

पूर्वी क्षेत्र कार्यालय

14, वुड स्ट्रीट, कोलकाता-16 (प. बं.)

Survey of India

Office of the Addl. Surveyor General

Eastern Zone

14, Wood Street, Kolkata-16 (WB)

ई-मेल/E-mail: zone.east.soi@gov.in



संदेश

यह अत्यंत हर्ष की बात है कि पूर्वी क्षेत्र कार्यालय तथा पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय सम्मिलित रूप से हिन्दी पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार' का प्रकाशन कर रहे हैं। कार्यालय की अहिन्दी भाषी क्षेत्र में अवस्थिति के बावजूद पत्रिका के 'नवम' अंक का प्रकाशन, कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की राजभाषा हिन्दी के प्रति प्रेम को दर्शाता है। कार्यालय में राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग हमारा कर्तव्य है और इस कर्तव्य पथ पर अग्रसर होने में हिन्दी पत्रिका एक सार्थक प्रयास हो सकता है। मैं आशा करता हूँ कि इस पत्रिका से कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मकता उभर कर सामने आएगी जो निश्चय ही कार्यालयीन दायित्वों के निर्वहन में भी सहायक होंगी।

मैं पत्रिका के सफलतापूर्वक प्रकाशन के लिए प्रकाशन कार्य से जुड़े सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

(डॉ. एम. के. स्टालिन)

अपर महासर्वेक्षक, पूर्वी क्षेत्र

संजय कुमार
निदेशक
Sanjay Kumar
Director



भारतीय सर्वेक्षण विभाग

निदेशक का कार्यालय
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय
13, वुड स्ट्रीट, कोलकाता-16 (प. बं.)

Survey of India

Office of the Director
WB & Sikkim Geo-spatial Directorate
14, Wood Street, Kolkata-16 (WB)
ई-मेल/E-mail: zone.east.soi@gov.in

संदेश

यह हर्ष की बात है कि पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय में वर्ष 2016 में जिस 'सर्वेक्षण परिवार' पत्रिका की नींव रखी गई थी वह अपनी निरंतरता बनाए रखते हुए आज नवम् सोपान पर पहुंच गई है। मेरे लिए यह और हर्ष का विषय है कि प्रथम अंक के सफलतापूर्वक प्रकाशन के पश्चात पुनः मुझे इस साहित्यिक यात्रा का सहयात्री बनने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। पत्रिकाएं सदैव से लोगों में भाषायी आकर्षण का माध्यम बनी है और यही कार्य हिन्दी पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार' बखूबी करती रही है। 'ग' क्षेत्र में कार्यालय की अवस्थिति के उपरांत भी राजभाषा हिन्दी के प्रति लोगों में आकर्षण एवं कार्मिकों का बढ़ - चढ़कर हिन्दी कार्यक्रमों में सहभागिता देना इस बात का द्योतक है। मैं आशा करता हूं कि यह पत्रिका इसी भांति कोलकाता स्थित भारतीय सर्वेक्षण विभाग के कार्यालय में अपनी उपस्थिति दर्ज कराती रहे और सभी कार्मिकों में राजभाषा के प्रति आकर्षण का माध्यम बनती रहे।

मैं पत्रिका के सफलतापूर्वक प्रकाशन के लिए इस कार्य में संलग्न सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

(संजय कुमार)

निदेशक, पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

आदरणीय पाठकवृन्द, सादर नमस्कार।

मनुष्य का अवचेतन मन निष्कपट होता है, निश्छल होता है। यह अवचेतन मन उसका वास्तविक प्रतिबिम्ब होता है। परंतु जब यह चेतनता की ओर अग्रसर होता है, तो उसमें छल-प्रपंच, भेद-भाव आदि का विकास होने लगता है। इसके मूल में उसकी आवश्यकताएं, महात्वाकांक्षाएं होती हैं। इस प्रकार किसी मनुष्य का जो रूप हमें दिखाई देता है वह उसका वास्तविक रूप न होकर इन गुणों से प्रभावित रूप होता है।

उसी प्रकार जब मनुष्य शांत चित्त होकर रचनात्मकता की ओर अग्रसर होता है, तो वह अपने अंतर झांक रहा होता है, अपने अवचेतन मन के, अपने निश्छल और निष्कपट मन के बहुत करीब होता है। इसकी झलक हमें उसकी रचनाओं में दिखाई पड़ती है।

यह रचनात्मकता हमारी जिन्दगी में चल रहे उथल-पुथल, उतार-चढ़ाव से भी प्रभावित होती है। मेरा मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति को रचनात्मक तो होना ही चाहिए। यह गुण उसको विपरीत परिस्थिति में सम्बल प्रदान करते हैं और किसी प्रकार के गलत कदम लेने से रोकते हैं।

हमारी 'सर्वेक्षण परिवार' की यह यात्रा उत्तरोत्तर आगे बढ़ते हुए नवम् सोपान पर पहुंच चुकी है। यह आप सभी का स्नेह ही है जो अहिंदी भाषी क्षेत्र में कार्यालय की अवस्थिति के बावजूद पत्रिका के प्रकाशन की निरंतरता बनाने में सहायक हो रहा है।

मैं आशा करता हूं कि विगत वर्ष के अंकों की भांति यह अंक भी ज्ञानवर्द्धक जानकारीयों से परिपूर्ण होंगे एवं संग्रहणीय होंगे।

कृपया पत्रिका के बारे में अपने विचारों से हमें अवश्य अवगत कराएं, इससे पत्रिका को हमें और बेहतर बनाने में सहायता मिलेगी। आप अपने विचार निम्नवर्णित पते पर ई-मेल से हमें भेज सकते हैं।

wbs.gdc.soi@gov.in

shubhesh.soi@gov.in

प्रार्थना : राम राम अविराम कहो

घट घट में जो रमे निरन्तर,
सब कुछ जिनके ही उर अंतर।
ऐसे घट-घट वासी जो हैं,
सहज भाव अभिलाषी जो हैं।

उन चरणों का ध्यान धरो तुम ।
राम राम अविराम कहो तुम ॥

उनकी कृपा से सब कुछ सम्भव,
कठिन भला फिर कार्य कोई कब।
हर घट में ही उनकी छवि है,
उनसे अलग फिर कहाँ कोई है।

नर नारी या बाल वृद्ध हो,
पशु पक्षी या कोई जड़ चेतन।
सब के उर में राम रमे हैं,
आदि अंत मे रचे बसे हैं।

भाव विहंगम सोच के देखो,
अपना पराया कहाँ कोई है।
जो कुछ है बस एक वही हैं॥

उन चरणों का ध्यान धरो तुम ।
राम राम अविराम कहो तुम ॥



श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

निर्मल चित्त मन मन्दिर जाओ,
राम को अपने सम्मुख पाओ।
'शुभेश' अभिलाषी तेरे शरण की,
विनती करता गहि चरणन की ।

हम हैं कौन - इंडियन, भारतीय, हिंदुस्तानी,.....



श्री संजय कुमार, निदेशक

पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

विश्व में एक ही देश के कई नाम होने के अनेक उदाहरण हैं। जर्मनी का देशी नाम Deutschland है

और यूनानियों ने इसे Germania कहा। इसी तरह चीन (China) के उनकी ही अपनी भाषा में अनेक नाम हैं Zhongguo, Zhōnghuá ("central beauty"), Huáxià ("beautiful grandness"), Shénzhōu ("divine state") और Jiǔzhōu ("nine states")। जापान का पुराना नाम Yamato (कोरियन मूल) है और दसवीं शताब्दी में Nippon/Cippan (मंदारिन मूल) नाम प्रचलन में रहा। ऐसा ही हमारे देश के साथ है। विभिन्न नाम और इनके प्रचलन को समझने के लिए हमें इतिहास में जाना होगा।

इतिहास हमेशा विजित द्वारा लिखा जाता है और वह इतिहास नहीं विजित की गौरव-गाथा होती है। भारत के साथ भी यही हुआ है पहले इस्लामिक आक्रमण और 800 वर्षों शासन और फिर अंग्रेजों के 200 वर्ष तक के शासन ने इस देश के इतिहास लेखन को इस तरह से प्रभावित किया कि आज भी लोगों को यही लगता है कि इंडिया (India) को अंग्रेजों ने बनाया। पिछले 70 वर्षों में जिस तरह से इतिहास को उसी इस्लामिक और अंग्रेजों को केंद्र में रख कर पढ़ाया गया है ये उसी का परिणाम है। ब्रिटिश-काल के इतिहासकारों ने अपने हिसाब से ही इतिहास लिखा जैसा एक विजित लिखता है यानि अपने ही गुणगान में। उनके द्वारा किताबों में यह जानबूझकर लिखा गया जिससे पढ़ने वालों को यह लगे कि उनके आने से पहले भारत नाम का कोई देश ही नहीं था और जो भी बनाया गया वह सिर्फ और सिर्फ अंग्रेजों की देन है। उनके बाद हमारे देश के चाटुकार इतिहासकारों ने भी उसी को आधार बनाकर उनका गुणगान किया। इस वजह से आज हमारे देश में जो भी इतिहास पढ़ाया जाता है उसे पढ़ कर यही भावना आती है कि ब्रिटिश के आने से पहले भारत या India था ही नहीं।

आज के अफगानिस्तान, पाकिस्तान और पंजाब (भारत) के भू-भाग से अनेक नदियों का एक समूह गुजरता है जिसे सप्त-सिंधु कहा गया है, जैसाकि नीचे मानचित्र में दर्शाया गया है, सिंधु इसमें प्रमुख नदी है। 'सिंधु (SINDHU)' संस्कृत शब्द है। फारसी भाषा में 'स' अक्षर को 'ह' उच्चारित किया जाता है, इसलिए ईरानियों (पूर्ववर्ती PERSIAN) ने सिंधु को हिंदु/हिंदू कहा और यहां रहने वालों को हिंदू कहा।



यूनानी भाषा में 'ह' को 'इ' उच्चारित किया जाता है, इसलिए यूनानियों (Greeks) ने हिंदू को इंदु (INDUS) कहा। बाद में लैटिन भाषा में इंदु (INDUS) का अपभ्रंश इंडिया (INDIA) हो गया। अरबी भाषा में हिंदुस्तान कहा गया। पश्चिमी देशों (ईरान, यूनान आदि) ने अपने ऐतिहासिक लेखों में सिंधु नदी के पूर्व के भू-

भाग में रहने वालों को हिंदू / Indoi नाम से उल्लेख किया है। फारसी ग्रंथ ज़ेन्द-अवेस्ता में सिंधु को हिंदू कहा गया है।

पांचवीं शताब्दी ईसा-पूर्व यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस (Herodotus) ने अपने ग्रंथ 'Histories' में 'India' शब्द का उल्लेख करते हुए इस क्षेत्र को मसालों और सोने (spices and gold) से समृद्ध बताया है। इसके उपरांत चौथी शताब्दी ईसा-पूर्व यूनानी इतिहासकार मेगास्थनीज (Megasthenes) मौर्य साम्राज्य में यूनानी शासक सेल्यूकस निकेटर के राजदूत के रूप में आये और उन्होंने अपने ग्रंथ 'Indika' में भूगोल, संस्कृति और समाज के बारे में विस्तृत वर्णन किया। यूनानी इतिहासकार अर्रियन (Arrian) ने भी चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में यूनानी शासक सिकंदर (Alexander) के आक्रमण के वर्णन में भी इस भू-भाग को इंडिका नाम से ही उल्लेख किया है।

आचार्य चतुरसेन की अमूल्य पुस्तक 'भारतीय संस्कृति दृग स्पर्श' के अनुसार महाभारत में लिखा है कि 'आर्यावर्त' के बाहर जो देश है वह भारत है। यही बात मेगास्थनीज ने 'इंडिका' में कही है, वह लिखते हैं- सिंधु दरिया से लेकर गंगा के मुहाने तक तथा हिमालय से लेकर समुद्र तक के भू-भाग में तीन देश- आर्यावर्त, प्राच्य देश और पंडाया देश (Pandaia) बसते हैं। इस प्रकार वर्तमान समय के अनुसार सिंधु दरिया से लेकर बंगाल की खाड़ी तक तथा हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक यानी मौजूदा अफगानिस्तान, पाकिस्तान, भारत, नेपाल, भूटान तथा बांग्लादेश वाले धरती के टुकड़े पर उस समय तीन देश बसते थे।

1. वर्तमान अफगानिस्तान व पाकिस्तान के पहाड़ी क्षेत्र को उस समय 'आर्यन' प्रदेश अर्थात 'आर्यावर्त' कहा जाता था। मेगास्थनीज के 250 वर्ष बाद मनु ने मनुस्मृति (2.22) में लिखा है कि हिमालय के विंध्य तथा पूर्वी समुद्र से लेकर पश्चिमी समुद्र तक का क्षेत्र 'आर्यावर्त' है।
2. वर्तमान में केरल तथा तमिलनाडु के कुछ हिस्से वाले क्षेत्र में पंडाया देश (Pandaia) बसता था।
3. शेष सारे भू-भाग का नाम परसाई या प्राच्य देश था, जिस पर मौर्य वंश का राज था। मेगास्थनीज



आगे लिखते हैं कि सिकंदर ने आर्यावर्त और उसके साथ लगते क्षेत्र के रजवाड़ों को हरा कर यह इलाका अपने देश के अधीन कर लिया था। यह इलाका जीत कर उसने एक सेनापति सेल्यूकस निकेटर (Seleucus Nicator) को यहां का क्षत्रप नियुक्त किया। जब सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य (Greek name Sandracottos, जिन्होंने मौर्य-वंश की स्थापना की, शासन काल 298 से 322 ईसा पूर्व) ने सेल्यूकस को सिंधु दरिया में मैदानी इलाके से खदेड़ने के लिए हमला किया, तो उसने सम्राट के आगे घुटने टेक दिए। सम्राट चन्द्रगुप्त अपनी सीमा को सुरक्षित करना चाहते थे,

अतः दोनों में सन्धि हुई, जिनकी तीन बातों का उल्लेख मेगास्थनीज तथा उसके समकालीन लेखक अपने लेखन में करते हैं-

1. सेल्यूकस ने सम्राट चन्द्रगुप्त को अपना दामाद स्वीकार कर लिया। इसलिए उसने अपनी बेटी की शादी सम्राट से कर दी। यह शादी इस बात की गारंटी थी कि सेल्यूकस अपनी बेटी के घर न तो आक्रमण करेगा और न ही किसी को करने देगा।
2. सेल्यूकस ने सम्राट चन्द्रगुप्त को शादी के उपहार में आर्यावर्त का इलाका भेंट किया। उसके बाद से आर्यावर्त भारत का हिस्सा बन गया।
3. सम्राट चन्द्रगुप्त ने अपने ससुर सेल्यूकस को भारत के बेहतरीन 500 हाथी भेंट किए।

इस सन्धि की सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि ब्राम्हणों का 'आर्यावर्त' उस समय 'भारत' में शामिल किया गया। उससे पहले यह यूनानियों की गुलाम बस्ती थी।

पुराणों में दी गयी वंशावली के अनुसार भरत के ही खानदान में महाभारत का अर्जुन पैदा हुआ। दोनों में 25 पीढ़ियों का अंतर है, अर्थात् भरत से लगभग 500 वर्ष बाद महाभारत की लड़ाई हुई। कालगणना के नाम पर यह दावा किया जाता है कि यह लड़ाई भगवान बुद्ध के जन्म से 2539 वर्ष पहले हुई थी।

सबसे पहला प्रश्न यह उठता है कि अगर महाभारत से भी 500 वर्ष पहले हमारे देश का नाम भारत रखा जा चुका था, तो महाभारत में 'भारत' देश का उल्लेख क्यों नहीं हुआ? सैकड़ों चक्रवर्ती राजा इस लड़ाई में भाग लेने आए, लेकिन किसी भी राजा ने यह नहीं कहा कि उसका देश 'भारत' है, क्यों?

भगवान बुद्ध के उपदेश, जोकि पाली भाषा के 'तिपिटक' ग्रंथों में (in pali language- 'Tipitaka') में संग्रहित हैं, में इस भूखण्ड को 'जंबुद्वीप' कहा गया है, परंतु कभी भी भारत नहीं कहा गया है। यदि उनसे 300 वर्ष पहले भरत ने इस देश का नामकरण किया था तो भगवान बुद्ध कही तो उस नाम का प्रयोग करते।

उनसे 200 वर्ष बाद मेगास्थनीज ने इंडिका लिखी, उस समय तक इस देश का नाम 'इंडिका' या परसाई था। यानि तब तक किसी 'भरत' ने भारत का नामकरण नहीं किया था। उसके बाद से हर पल का हिसाब इतिहास के पन्नों पर दर्ज है। उसमें कही भी इस देश पर भरत नामक राजा के शासन करने का उल्लेख नहीं है कि भरत के नाम पर हमारे देश का नाम भारत पड़ा।

महाभारत महाकाव्य का नाम पहले 'जय'/'जय संहिता' था, फिर 'भारत' और फिर 'महाभारत' पड़ा। 'जय' में सिर्फ 8800 श्लोक थे, जैसे-जैसे इसमें अन्य कहानियां जुड़ती गईं, इस पोथे का भार भी बढ़ता गया। इसलिए इसका नाम भारी यानी भारत रख दिया गया और जब इसमें और भी बढ़ोत्तरी होती गई और इसके 18 खण्ड बनाए गए तो इसको महाभारी यानी महाभारत कहा गया। **महाभारत का भारत देश से कोई सम्बंध नहीं है, न नाम से और न ही काम से।**

मांगलिक कार्यों में यह संकल्प आपने सुना होगा- "जम्बु द्वीपे भारतखण्डे आर्याव्रत देशांतर्गते " इस छोटे से मंत्र द्वारा, हम अपने गौरवमयी इतिहास का व्याख्यान कर डालते हैं। वायु पुराण के अनुसार महाराज प्रियव्रत का अपना कोई पुत्र नहीं था तो उन्होंने अपनी पुत्री के पुत्र अग्नीन्ध्र को गोद ले लिया जिसका पुत्र नाभि था। नाभि की एक पत्नी मेरु देवी से जो पुत्र पैदा हुआ उसका नाम ऋषभ था। इसी ऋषभ के पुत्र भरत थे तथा इन्हीं भरत के नाम पर इस देश का नाम 'भारतवर्ष' पड़ा। हालांकि

कुछ लोग मानते हैं कि श्रीराम के कुल में जो भरत हुए उनके नाम पर इस देश का नाम नाम 'भारतवर्ष' पड़ा। यहां बता दें कि पुरुवंश के राजा दुष्यंत और शकुंतला के पुत्र भरत के नाम पर 'भारतवर्ष' नहीं पड़ा। हमें सचमुच दुख होता है कि हम भारतीय ही नहीं जानते कि हमारे देश का नाम भारत कौन रख गया। यह बिल्कुल ऐसा ही है, जैसे हिंदू शब्द कियी धर्मग्रंथ में नहीं है, फिर भी हम लोग हिन्दू कहलाते हैं। कोई नहीं जानता कि उनका नाम हिन्दू कौन रख गया।

प्राचीन भारत के इतिहास की अंधी गलियों में जो कोई थोड़ी-बहुत प्रकाश की किरण दिखायी देती है, उसमें एक नाम चमकता है 'सुदास' और उनका कबीला भारत। कुछ इतिहासकारों का मत है कि इस कबीले के नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा। सुदास दुष्यंत, भरत, शकुंतला की तरह काल्पनिक नाम नहीं है बल्कि इसका उल्लेख हमें ऋग्वेद के तीसरे मंडल के 53वें सूत्र और अन्य सूत्रों में मिलता है। कथा के अनुसार रावी नदी के पास सुदास नाम के राजा रहते थे। उनके कबीले का नाम भरत था। वह भारतीय मूल के राजा थे।

एक समय ऐसा आया जब सप्त-सिंधु नदियों (पश्चिम में सिंधु से पूर्व में यमुना नदियों तक) के भू-भाग (अविभाजित पंजाब और सिंध क्षेत्र) के कबीलों के लोग किसी बात पर दो गुटों में बट गए, उनमें भीषण लड़ाई हुई। इस युद्ध (या झगड़े) में सुदास के विरुद्ध 10 कबीलों के लोग शामिल हुए- तुर्वश, यक्षु, अलिन, अनु, भृगु, भलिन, द्रह्यु, मत्स्य, पुरसु एवम् विसणि। ऋग्वेद के सातवें मंडल में झगड़े का कारण एक-दूसरे के राज्य पर कब्जा करना नहीं था वरन् यह था कि सुदास के विरोधी कबीलों ने रावी नदी का एक किनारा तोड़ दिया था और राजा सुदास ने उस किनारे को फिर से बनाया। ऋग्वेद के 7वें मंडल के 18वें, 33वें और 83वें सूत्र में इस युद्ध का दाशराज-युद्ध के नाम से वर्णन है। राजा सुदास के साथ तृस्तु, सिम्यु एवम् सिव कबीले भी शामिल थे, इसलिए दाशराज युद्ध में 10 राजा शामिल नहीं थे।

दाशराज-युद्ध में जीत हासिल करने पर राजा सुदास और उनके कबीले का उत्साह बढ़ और उन्होंने दूर-दूर के विशाल क्षेत्र में अपनी धाक जमायी इसलिए उनके दब-दबे वाले क्षेत्र को भारतीयों का राजा कहा जाने लगा। यहीं से 'भारत' देश की नींव रखी गई। अधिकारिक रूप से प्राचीन भारत का नाम कभी भी भारत नहीं पुकारा गया। हो सकता है कि भविष्य में सिंध साम्राज्य की मुहरें पढ़ी जाएं और वहां पर 'भारत लिखा पाया जाए।' वैदिक-काल में इस क्षेत्र का प्रसार दक्षिण और पूर्व दिशा में बढ़ गया।

भारत/भरत/भारतवर्ष शब्द का अनेक स्थानों पर उल्लेख मिलता है। पाणिनी रचित पुस्तक 'अष्टाध्यायी' के दूसरे, चौथे और आठवे अध्याय में भरत शब्द का उल्लेख मिलता है। सप्तसिंधु क्षेत्र दो भागों, उदीच्य और प्राच्य महाजनपदों में विभाजित था। प्राच्य अर्थात् पूर्व दिशा के महाजनपद (अविभाजित पंजाब के दक्षिण-पूर्व का क्षेत्र) को ही भरत जनपद या प्राच्य जनपद कहा गया, जिसमें हस्तिनापुर, कुरुक्षेत्र और इंद्रप्रस्थ आदि नगर स्थित थे। महाभारत महाकाव्य में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को इसीलिए भरत नाम से सम्बोधित किया है। उदीच्य अर्थात् पश्चिम दिशा के महाजनपद को गंधार जनपद (अविभाजित पंजाब के उत्तर पश्चिम का क्षेत्र और आज का अफगानिस्तान) कहा गया। महाभारत महाकाव्य में गांधारी का सम्बंध इसी महाजनपद से था।

भारत कोई 75 वर्ष पुराना देश नहीं है। यह हजारों वर्षों पुरानी एक सभ्यता है जिसकी पहचान भौगोलिक अवस्थिति से होती है। भारत के रहने वाले इतने पुराने हैं कि इसे सनातन यानि जो सदा से यानि अविरल समय से चला आ रहा है। श्रीविष्णु पुराण में स्पष्ट लिखा है :-

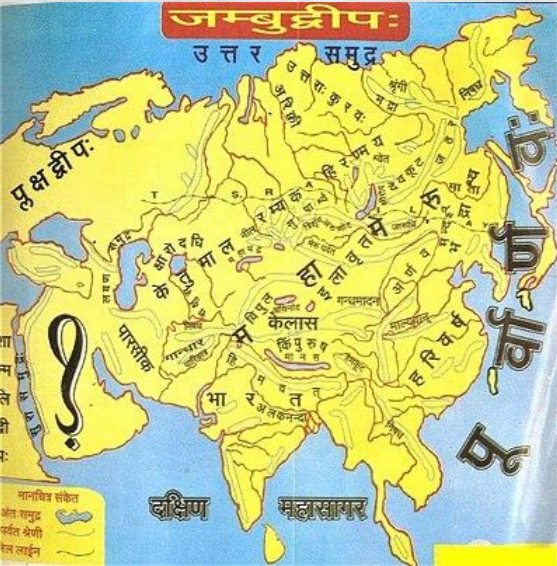
उत्तरं यत समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणं।

वर्ष तद भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः॥

(अर्थात् “समुद्र के उत्तर से ले कर हिमालय के दक्षिण में जो देश है वही भारत है और यहाँ के लोग भारतीय हैं”)

जैन मत के अनुसार हमारे देश का नाम भारत था। एक कथा के अनुसार प्रथम तीर्थंकर ऋभनाथ की पत्नी को एक रात 4 स्वप्न दिखायी दिये, जिसका ऋभनाथ जी ने यह अर्थ निकाला कि उन्हें एक चक्रवर्ती पुत्र प्राप्त होगा। पुत्र भरत ने जन्म लिया और चक्रवर्ती राजा बने। इन्हीं के नाम पर यह भू-भाग भारत कहलाया। भारत ने अपना शासन अयोध्या से चलाया।

ऐतिहासिक प्रमाण के अनुसार ईसा पूर्व पहली शताब्दी में कलिंग (आजका उड़ीसा राज्य) में ‘धारवेल’ नामक जैन राजा का शासन था। भुवनेश्वर के निकट उदयगिरि पहाड़ियों में प्राकृत भाषा में ब्राह्मी लिपि में लिखा हुआ हाथीगुम्फा शिलालेख है। इस शिलालेख में हमारे देश का नाम भारतवर्ष लिखा हुआ है।



बौद्ध मतावलम्बी सम्राट अशोक के शिलालेख में हमारे देश का नाम ‘जम्बुद्वीप’ (आज का एशिया और यूरोप महाद्वीप) लिखा हुआ मिलता है। जम्बुद्वीप का जिक्र पद्म पुराण, वायु पुराण (रचना काल कम से कम 350 ईश्वी), श्री विष्णु पुराण और श्रीवामन पुराण (9वीं से 11वीं ईश्वी के बीच) में भी मिलता है। वायु पुराण के प्रथम अध्याय के 87वें और 88वें श्लोक में क्रमशः भारत और जम्बुद्वीप का वर्णन मिलता है।

भारतदीनि वर्षाणि नदीभिःपर्थतैस्तथा ।

भूतैश्चोपनिविशिष्टानि गतिमन्दिर्ध्रुवैस्तथा ॥ 87

जम्बुद्वीपादयोद्वीपाः समुद्रैः सप्तभिर्वृताः ।

ततश्चाप्यमयी भूमिलोकालोकश्च कीर्तयते ॥ 88

(भारत आदि वर्ष चल, अचल, नदियों, पर्वतों तथा प्राणियों से भरे हैं। जम्बुद्वीप आदि द्वीप सात समुद्रों से घिरे हैं और उसके पश्चात् जलमयी भूमि तथा लोकालोक का कीर्तन है)

इसी प्रकार श्रीवामन पुराण के 13वें अध्याय के पहले, दूसरे और चौथे श्लोक में भारत और जम्बुद्वीप का वर्णन मिलता है-

भवन्दिरुदिता घोरा पुष्करद्वीपसंस्थितिः । जम्बुद्वीपस्य तु संस्थानं कथयन्तु महर्षयः ॥ 1

जम्बुद्वीपस्य संस्थानं कथ्यमानं निशामय । नवभेदं सुविस्तीर्णं स्वर्गमोक्षफलप्रदम् ॥ 2

पूर्वदक्षिणतश्चापि किंनरो वर्ष उच्यते। भारतो दक्षिणे प्रोक्तो हरिर्दक्षिणपश्चिमे ॥ 4

(आदरणीय ऋषियों ! आपलोगों ने पुष्कर द्वीप के भयंकर अवस्थान का वर्णन किया, अब आप लोग (कृपाकर) जम्बुद्वीप की स्थिति का वर्णन करें। ऋषियों ने कहा तुम हम लोगों से जम्बुद्वीप की स्थिति का

वर्णन सुनो। यह द्वीप अत्यंत विशाल है और 9 भागों में विभक्त है। यह स्वर्ग एवम् मोक्षफल को देने वाला है। जम्बुद्वीप के पूर्व-दक्षिण में किन्नरवर्ष, दक्षिण में भारतवर्ष और दक्षिण-पश्चिम में हरिवर्ष है।)

लेकिन यहां पर जिस भू-भाग का वर्णन है वह आज के भारत से काफी विशाल है। इसके दक्षिण में धनुष के आकार का भाग था, जिसका आकार आजके दक्षिण-पूर्व एशिया से मिलता है। विद्वानों के अनुसार जम्बुद्वीप नाम इस वृहत्त भू-भाग के जामुन वृक्ष के लिए उपजाऊ होने या बहुतायत में होने के कारण कहा जाता होगा। निःसंदेह भारत का वर्णन एक विशाल भू-भाग 'जम्बुद्वीप' के भीतर होना बताया गया है।

जम्बुद्वीप का उल्लेख वैदिक साहित्य में ही नहीं बौद्ध और जैन साहित्य में बहुत विस्तार से बताया गया है। बौद्ध ग्रंथ महावम्स (Mahavamsa) में उल्लेख है- सम्राट अशोक के पुत्र महिंद्रा ने श्रीलंका के राजा देवानमपियातिसा को अपने परिचय में जम्बुद्वीप से सम्बद्ध होना बताया है।

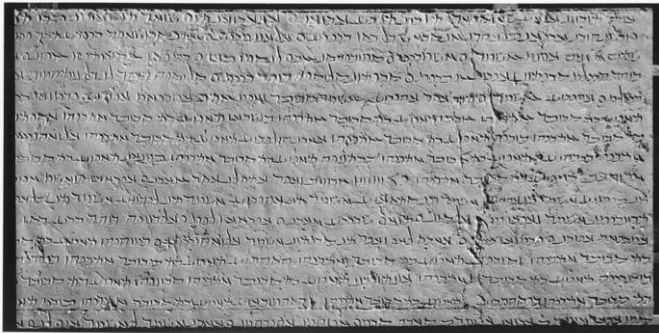
जैन ग्रंथों जम्बुद्वीपप्रज्ञापति (Jambūdvīpaprajñapti), त्रिलोकसार (Trilokasāra), त्रिलोककप्रज्ञापति (Trilokaprajñapti), त्रिलोकदीपिका (Trilokadīpikā), क्षात्रसमास (Kṣetrasamāsa) आदि में जम्बुद्वीप का विस्तार से वर्णन है।



फारसी मूल का नाम 'हिंदुस्तान' मुगलों के द्वारा नहीं दिया गया है। तीसरी शताब्दी में ईरान (Persia) के सासानी शासक शापुर प्रथम (Sasanian ruler Shapur-I, 240-270 CE) के नक्श-ए-रुस्तम परिसर में स्थित शिलालेख काबा-ए-जरतोस्त (Ka'ba-ye Zartosht inscription in Naqsh-e Rostam compound) में 'हिंद' नामका उल्लेख मिलता है जोकि सासानी साम्राज्य के दक्षिण-पूर्व में, सिंधु नदी के किनारे स्थित एक प्रांत था। यह लेख तीन भाषाओं ईरानी, पहलवी और

ग्रीक में है। ईरानी में हिंदुस्तान, पहलवी में हिंदी और ग्रीक में इंडस-लैंड (Indusland) लिखा गया है। संस्कृत का 'स्थान' शब्द फ़ारसी में 'स्तान' हो जाता है। इस तरह हिन्द के साथ जुड़ कर हिन्दुस्तान बना।

आशय जहाँ हिन्दी लोग रहते हैं, हिन्दू बसते हैं।



ORINST. PS-1a NAQSH-E ROSTAM, IRAN. A PART OF THE PARTHIAN VERSION OF THE INSCRIPTION OF SHAPUR I ON THE WEST WALL OF THE TOWER.

आगे चलकर पूरे भू-भाग अर्थात् अखण्ड भारत के लिए हिंदुस्तान नाम का उपयोग किसी अज्ञात फारसी लेखक ने दसवीं शताब्दी में अपने भूगोल की पुस्तक 'हुद-हुद-अल-आलम (Hudūd al-Ālam meaning 'Regions of the World')) में किया गया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इंडिया, हिंदुस्तान और भारत तीनों ही प्राचीन नाम हैं, लेकिन इंडिया और हिंदुस्तान नाम विदेशियों द्वारा रखा गया और भारत इस भू-भाग में जन्मा हुआ हमारी संस्कृति से जुड़ा हुआ स्थानीय नाम है। भारत शब्द 2 अक्षरों से मिलकर बना है, भा (प्रकाश) और रत (लगा होना) अर्थात् भारत का शाब्दिक अर्थ है ज्ञान के प्रकाश के अनुसंधान में लगा हुआ। इसलिए भारत शब्द से आध्यात्मिकता/ आत्मीयता का बोध होता है। इंडिया शब्द का स्रोत भौगोलिक सीमा (सिंधु नदी का पूर्वी क्षेत्र) से है।

भारतीय संविधान के निर्माण करते समय हमारे देश के नाम को लेकर व्यापक मंथन किया गया। भारतीय संविधान के प्रारम्भिक प्रारूप (draft) में हमारे देश को परिभाषित किया गया - “India shall be a Union of States”. इस पर नवम्बर 1948 में हुई बहस में कुछ सदस्यों द्वारा मांग की गयी कि आर्टिकल 1(1) में शब्द INDIA के स्थान पर भारत (Bharat), भारत वर्ष (Bharat Varsha), हिंदुस्तान (Hindustan) प्रतिस्थापित किया जाये। श्री अनंथशयनम अयंगर द्वारा यह आग्रह किया गया कि प्रारूप में सुझाये गये आर्टिकल 1(1) को यथावत स्वीकार कर लिया जाये।

17 सितम्बर, 1949 को इस विषय पर पुनः बहस हुई। संविधान के प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ. भीमराव अंबेदकर जी (Chairman of the panel heading drafting the Constitution) द्वारा यह प्रस्तावित किया गया कि आर्टिकल 1(1) को “India, that is, Bharat, shall be a Union of States.” रखा जाये।

अगले दिन श्री हरिविष्णु कामथ जी द्वारा इस पर एक संशोधन प्रस्ताव पेश किया गया कि आर्टिकल 1(1) को “Bharat or, in the English language, India, shall be a Union of States.” किया जाये। उन्होंने तर्क दिया कि जैसे नवजात शिशु का नामकरण किया जाता है उसी तरह नये गणतंत्र का भी नामकरण किया जाना चाहिए और इसीलिए “Bharat, Hindustan, Hind and Bharatbhumi or Bharatvarsh” आदि नाम सुझाये गये हैं। सेठ गोविंद दास द्वारा डॉ. भीमराव अंबेदकर जी के प्रस्ताव पर कहा गया कि हमने स्वतंत्रता की लड़ाई “भारत माता की जय” के नारे से जीती है इसलिए यह हर्ष का विषय है कि ‘भारत’ नाम को स्वीकार किया जा रहा है। हालांकि, उन्होंने कहा कि कथन (phrase) “India, that is, Bharat” हमारे प्यारे देश के लिए उपयुक्त नहीं है और इसे ‘Bharat known as India also in foreign countries’ किया जाना चाहिए। श्री कमलापति त्रिपाठी द्वारा कहा गया कि वह ऐतिहासिक नाम “भारत” से वह मोहित हैं जिसके उच्चारण से सदियों पुराने सांस्कृतिक-जीवन की अनुभूति होती है और इसमें हमारी पवित्र यादें समाहित हैं।

अंत में डॉ. भीमराव अंबेदकर जी के द्वारा पेश प्रारूप के अनुसार आर्टिकल 1(1) को “भारत, अर्थात् इंडिया, राज्यों का संघ होगा” (“India, that is Bharat, shall be a Union of states”) को स्वीकार कर लिया गया। अब आधिकारिक तौर भारत का नाम “भारत गणराज्य” या “रिपब्लिक ऑफ इंडिया” के नाम से जाना जाता है।

सर्वेक्षण कार्य की बदलती तकनीक



श्री रूप कुमार दास , उप-अधीक्षण सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

34 साल सर्विस करने के बाद सर्विस जीवन के अंत में टेक्निकल वर्क में जो परिवर्तन मैंने महसूस किया वो सामने लाने की कोशिश कर रह हूँ। हो सकता है कि आप लोग मेरे साथ सहमत नहीं हो। यह पूर्णतः मेरा निजी विचार है।

1991 में जब हम लोग डिपार्टमेंट में ज्वाइनिंग किया था उस टाइम Map बनाने के लिया मैनुअली प्रोसेस जारी था जैसे fair drawing / scribing. समय के साथ-साथ digitisation के माध्यम से कंप्यूटर से Map बनाना शुरू हुआ। वर्तमान में हम मानचित्र तैयार करने के लिए GIS सॉफ्टवेयर का उपयोग कर रहे हैं।

मैं दो तरह से इस विषय पर चर्चा कर रहा हूँ। सबसे पहले मैं मानचित्र की तैयारी और फिर क्षेत्र प्रक्रिया के बारे में अपने विचार साझा करने की कोशिश करता हूँ। मुझे लगता है कि मानचित्र तैयार करने के लिए पुरानी पारंपरिक पद्धति अधिक उपयुक्त थी। इसमें कोई संदेह नहीं कि आधुनिक तकनीकों की तुलना में पारंपरिक पद्धति अधिक कलात्मक थी। यह सच है कि आधुनिक डिजिटल परिवेश में कार्य की उत्पादकता, सटीकता और मात्रा पुरानी प्रणाली की तुलना में बहुत बेहतर है। लेकिन यदि आप नग्न आंखों से देखेंगे तो आपको दो मानचित्रों के बीच अंतर पता चलेगा - एक पुरानी कार्टोग्राफिक विधि से और दूसरा डिजिटल विधि से।

मैं पुरानी और नई प्रणाली की तुलना नहीं करूँगा। यहाँ मैं संक्षेप में वही बताने की कोशिश कर रहा हूँ जो मैंने अपने सेवाकाल में देखा है, खासकर क्षेत्रीय गतिविधियों और प्रयुक्त उपकरणों के इतिहास में। सर्वेक्षण प्रशिक्षण संस्थान में हमारी फील्ड प्रशिक्षण श्रृंखला सर्वेक्षण से शुरू हुआ। मुझे लगता है कि हम पुराने और नए युग के बीच सेतु हैं। हमने पुरानी तकनीक के साथ-साथ नई तकनीक भी सीखी। हमने न केवल लेवल इंस्ट्रूमेंट को कैलिब्रेट करना सीखा, बल्कि थियोडोलाइट को भी कैलिब्रेट करना सीखा। हमने आधुनिक EDM यानी इलेक्ट्रॉनिक दूरी मापक यंत्र के साथ-साथ माइक्रोवेव आधारित दूरी मापक यंत्र का भी इस्तेमाल किया।

हमने T-2, T-3 और T-4 थियोडोलाइट का इस्तेमाल किया। आजकल ये सभी कमोबेश अप्रचलित हो चुके हैं। कभी-कभी T-2 थियोडोलाइट का इस्तेमाल किसी खास काम के लिए किया जा रहा है, खासकर अंतरराष्ट्रीय सीमा संबंधी काम में। जहाँ सर्वेक्षण की पुरानी पद्धति का ही इस्तेमाल होता है। अंतरराष्ट्रीय सीमा में आधुनिक पद्धति को उपयोग करने का समय आ गया है, लेकिन अभी तक यह प्रयोग में नहीं है, इस पर विचार किया जा रहा है। आधुनिक लोग सटीकता और उत्पादकता के पीछे भागते हैं। मुझे लगता है कि यह कुछ मामलों में तो सही है, लेकिन सभी क्षेत्रों के लिए नहीं।

हमने T-3 थियोडोलाइट का उपयोग से first order Azimuth का अवलोकन करने का तरीका सिखाया गया था और 60 डिग्री एस्ट्रोलैब का उपयोग करके deflection of vertical (ऊर्ध्वाधर विक्षेपण) का निर्धारण करना सिखाया था। हमने सटीक Latitude और Longitude का पता लगाने के लिए जेनिथ दूरबीन के साथ T-4 थियोडोलाइट का उपयोग किया।

G&RB में अपनी नियुक्ति के दौरान, मेरे को Gravity ब्रांच में काम करने का मौका मिला था। उस दौरान मैंने बेंच मार्क पर गुरुत्वाकर्षण मान निर्धारित करने के लिए विभिन्न गुरुत्वाकर्षण मीटर का उपयोग किया। अब उसी सिद्धांत का उपयोग करते हुए नवीनतम मॉडल द्वारा अवलोकन किया जा रहा है। इंस्ट्रूमेंट बदल गया लेकिन प्रिंसिपल में कोई बदलाव नहीं हुआ। वर्तमान में G&RB वही कार्यालय है जो संशोधित तकनीक के साथ वही कार्य कर रहा है जो की पहले वह किया करता था।

केवल यही आशा है कि हमारी भूगणितीय शाखा पुराने सिद्धांत के अंगूठे के नियम को बनाए रखते हुए नई तकनीक को अपनाएगी। वे गुरुत्वाकर्षण, मैग्नेटिक, ज्वारीय के क्षेत्र में अद्यतन प्रौद्योगिकी/उपकरण का उपयोग कर रहे हैं और मुख्य रूप से भू नियंत्रण बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

विभागीय और परियोजना दोनों तरह के काम के लिए, पहले हम मूल से शुरुआत करना चाहते हैं और फिर अपनी मंज़िल तक पहुँचने की कोशिश करते हैं। आजकल विभागीय कार्यकाल बहुत सीमित है, खासकर एनजीपी 22 के बाद। अब हम नवीनतम तकनीक के साथ कई परियोजनाओं पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। यह पारंपरिक उपकरणों के पुराने होने का एक कारण हो सकता है। लेकिन जब भी हमें सड़क पर काम करते हुए कोई निजी कंपनी मिली, तो हमने पाया कि वे थियोडोलाइट या लेवल उपकरणों के नवीनतम मॉडल का इस्तेमाल कर रहे हैं।

हमारे प्रशिक्षण में हम खगोल विज्ञान को सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों तरह से विस्तार से सीखते हैं। आजकल प्रशिक्षण संस्थानों के अलावा कहीं भी इसका उपयोग नहीं होता। GPS/GNSS से हम सही स्थिति का पता लगा सकते हैं। CORS की स्थापना के बाद, कमोबेश हम सभी नवीनतम तकनीक के पीछे भागते हैं।

जब हमने 1991 में विभाग में प्रवेश किया था, उस समय हमारा विभाग स्वतंत्र रूप से काम कर रहा था, कभी-कभी हमें अन्य सरकारी संगठन की आवश्यकता होती है, यह कुछ प्रशासनिक आधार के लिए केंद्रीय या राज्य हो सकता है। आजकल मेरे मूल्यांकन के अनुसार हम निजी कंपनी पर निर्भर हैं और कई मामलों में विफलता उनकी अक्षमता के कारण आती है और उसका जिम्मेदारी हम पर आती है। मेरे बोलने का मतलब है की हम लोग अपने बनाए हुए तरीका से दूर हो रहे हैं, जो की मेरे हिसाब से ठीक नहीं है।

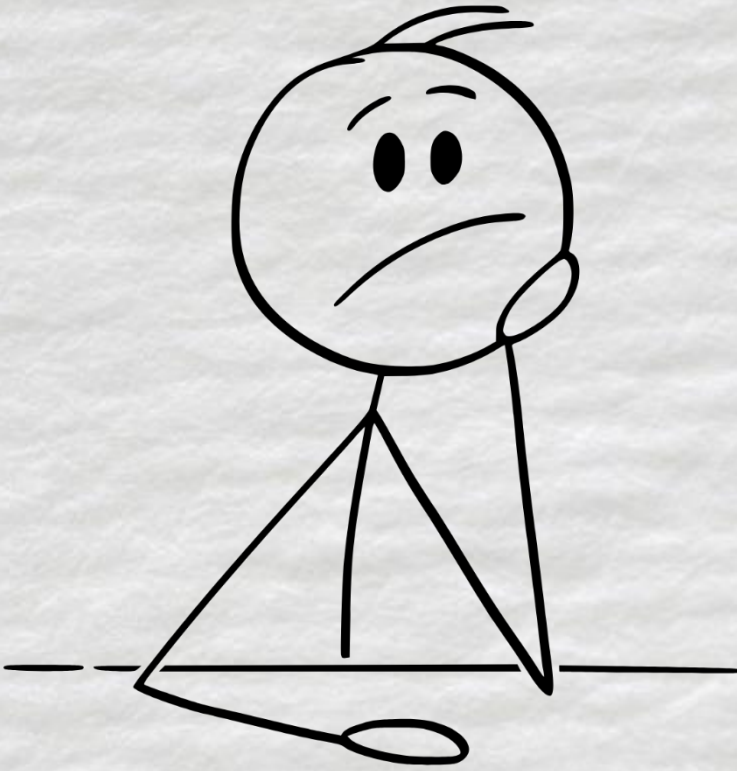


मेरी मुश्किल



श्री उदित प्रकाश श्रेयांशः सुपुत्र - श्री शुभेश कुमार

कार्यालय अधीक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



मैं सोचूं कि किसके ऊपर लिखूं
दीदी के ऊपर, जो दुलार तो करती है,
पर डांटती भी तो है !
या मम्मी के बारे में लिखूं जो बहुत प्यार करती है
अरे डांटती तो मम्मी भी है !

चलो पापा के बारे में लिखता हूं
पर वो तो मुझे ऑफिस ही नहीं ले जाते
अरे किसके ऊपर लिखूं

चलो बाबा-दादी के ऊपर लिखता हूं
पर वो कहां मेरे पास रहते हैं
वो तो गाँव में हैं,
यही हाल नाना का है,
वो मामाजी के पास रहते हैं !

चलो मैं इन सबके बारे में लिखूंगा।
पर लिखूंगा क्या,
यही कि मैं सबका प्यारा हूं, दुलारा हूं
कोई मुझे नहीं डांटे
सब बस मुझे प्यार करे
अरे ये तो मैं मेरे ही बारे में लिख रहा हूं !

ओह, बड़ी मुश्किल है, लिखना
मेरा तो सर दुखने लगा।
मैं अभी 'उदित' ही रहता हूं
सबको पहले पढ़ूंगा, फिर लिखता हूं।

राधानाथ सिकंदर - महान गणितज्ञ



श्रीमती स्वर्णिमा बाजपेयी, अधीक्षण सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

➤ संक्षिप्त परिचय

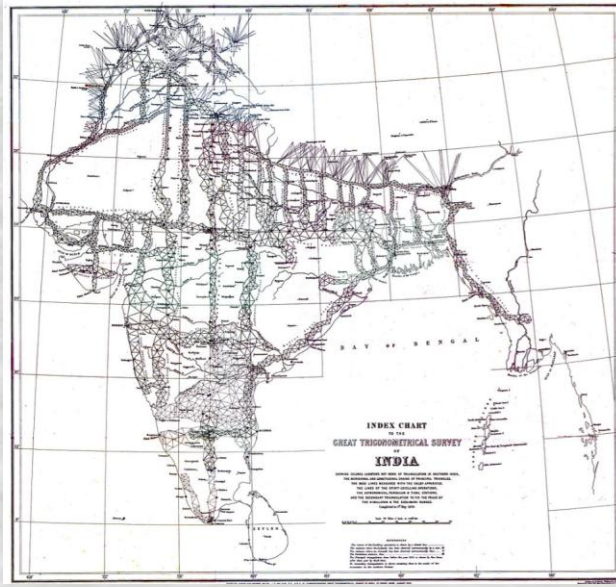
राधानाथ सिकंदर कोलकाता के जोरासांको में उनका जन्म हुआ था, उन्होंने कम उम्र से ही असाधारण गणितीय प्रतिभा दिखाई। कोलकाता के हिन्दू कॉलेज में अध्ययन किया, जिसे अब प्रेसिडेंसी विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है। वे हिन्दू कॉलेज के प्रोफेसर जॉन टिट्लर के शिष्य थे।



राधानाथ, जो 1824 से हिंदू कॉलेज के छात्र थे, पहले दो भारतीयों में से एक थे, जिन्होंने आइज़क न्यूटन की 'प्रिंसिपिया' पढ़ी थी और 1832 तक उन्होंने यूक्लिड के 'एलेमेंट्स', थॉमस जेफसन का 'फ्लक्सियन' और विंडहाउस द्वारा 'एनालिटिकल और स्फेरिकल ज्यामिति और खगोलशास्त्र' का अध्ययन कर लिया था। छोटी उम्र से ही उन्होंने गणित में अपनी दक्षता और त्रिकोणमिति व गणितीय गणनाओं में विशेषज्ञता साबित कर दी थी।

➤ राधानाथ सिकंदर का भारतीय सर्वेक्षण विभाग में योगदान

जब 1831 में भारत के सर्वेक्षक जनरल सर जॉर्ज एवरेंस एक प्रतिभाशाली युवा गणितज्ञ की खोज कर रहे थे, जो गोलीय त्रिकोणमिति में विशेष दक्षता रखता हो, तो हिंदू कॉलेज के शिक्षक टिट्लर ने अपने शिष्य राधानाथ की अत्यधिक प्रशंसा की। उनसे मिलकर सर जॉर्ज एवरेस्ट, उनकी गणितीय क्षमताओं से काफी प्रभावित हुए। इस तरह राधानाथ ने 1831 दिसंबर में महा त्रिकोणमितीय सर्वेक्षण (GTS) कार्य में 'कंप्यूटर' के पद पर मासिक तीस रुपये वेतन पर शामिल किया गया। इसके बाद एवरेस्ट उन्हें मसूरी/ देहरादून ले गए, जहां वे अगले 15 वर्षों तक रहे।



उनका नियमित काम 1832 में एक उप-सहायक के रूप में प्रति माह 107 रुपये पर शुरू हुआ। 1838 में, जब उनकी मासिक वेतन 173 रुपये थी, सिकंदर ने 'एक सार्वजनिक संस्थान के शिक्षक' के रूप में एक लाभदायक पद के लिए GTS छोड़ने की इच्छा व्यक्त की। एवरेस्ट ने सिकंदर को रोकने के लिए सरकार से पर्याप्त वेतन वृद्धि देने का दृढ़ आग्रह किया। एवरेस्ट ने कहा कि सिकंदर "सरकार द्वारा कभी भी इस प्रकार के कार्य में उपयोग किए जाने वाला सबसे सस्ता साधन था"। इसके अनुसार, सिकंदर को 1 जून, 1838 से विशेष रूप से 100 रुपये की वृद्धि दी गई। सर जॉर्ज एवरेस्ट 1843 में सेवानिवृत्त हुए और उनके स्थान पर कर्नल एंड्रयू स्कॉट वॉघ ने पदभार संभाला और 1845 में, उन्हें मुख्य कंप्यूटर बना दिया गया और उन्हें कोलकाता स्थानांतरित कर दिया गया। यहां, वह मौसम विज्ञान विभाग के अधीक्षक भी थे।

जीटीएस ने अपनी 'उत्तर-पूर्वी हिमालय श्रृंखला' 1845 में शुरू की और 1850 में इसे पूरा किया। यह देहरादून से सोनाखोड़ा, पूर्णिया, बिहार तक 2,720 किमी फैली थी। एंड्रयू वॉघ ने हर दिखाई देने वाली चोटी, बड़ी और छोटी, को चीफ कंप्यूटर के पर्यवेक्षण में कंप्यूटर्स द्वारा प्रत्येक अवलोकन स्थल से निरीक्षण करने का आदेश दिया। राधानाथ सिकंदर ने दार्जीलिंग के पास बर्फ से ढके पहाड़ों को मापना शुरू किया। छह अलग-अलग अवलोकनों से पीक XV के बारे में डेटा संकलित करने के बाद, वह अंततः इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि पीक XV दुनिया की सबसे ऊंची चोटी है। उन्होंने पीक XV की ऊंचाई को ठीक 29,000 फीट (8839 मीटर) मापा। यह सर्वेक्षण और गणित में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। वॉघ ने मनमाने ढंग से दो फीट जोड़ दिए क्योंकि उन्हें डर था कि सिकंदर का आंकड़ा केवल एक गोल संख्या समझा जाएगा, न कि एक सही माप। उन्होंने इस खोज की आधिकारिक घोषणा मार्च 1856 में की थी, और यह माउंट एवरेस्ट

की ऊंचाई तब तक बनी रही जब तक कि एक भारतीय सर्वेक्षण ने इसे 1955 में पुनः गणना करके 29,029 फीट या 8848 मीटर मापा।



➤ जलवायु विज्ञान अनुसंधान में उनका योगदान

कोलकाता में जीटीएस के अपने कर्तव्यों के अलावा, उन्होंने मौसम विज्ञान विभाग के अधीक्षक के रूप में भी सेवा दी। सिकंदर ने 1853 में जहाजों के लिए कोलकाता में तारों के पारगमन के अवलोकन पर आधारित समय संकेत सेवा की भी शुरुवात की थी।

यह आमतौर पर ज्ञात नहीं है कि भारत मौसम विज्ञान विभाग की स्थापना 1875 में होने से बहुत पहले, एक भारतीय ब्रिटिश शासन के तहत एक सरकारी मौसम विज्ञान वेधशाला के प्रमुख थे। तत्कालीन मुख्य कंप्यूटर राधानाथ सिकंदर को 1829 में कलकत्ता के पार्क स्ट्रीट पर स्थित भारत के सर्वेक्षक जनरल के कार्यालय के परिसर में स्थापित इस वेधशाला का नेतृत्व करने का कार्य भी सौंपा गया था, इसके अलावा उनका मुख्य कार्य सर्वेक्षण कार्य में था। उनकी नई नियुक्ति का स्वागत प्रमुख कलकत्ता के समाचार पत्रों ने बड़े उत्साह के साथ किया, क्योंकि उन्होंने पहले ही भूमितीय सर्वेक्षण कार्य में महान ख्याति प्राप्त कर ली थी।

सन् 1829 से 1852 के वर्षों के दौरान, कलकत्ता के वेधशाला में कोई भी यंत्र संबंधी सुधार या बार-घटाव लागू नहीं किया गया। 1851 में जब राधानाथ ने वेधशाला की जिम्मेदारी सँभाली, तो उन्होंने दिसंबर 1852

से सही सुधारों के साथ घंटा-दर-घंटा अवलोकनों की प्रणाली शुरू की। घंटा-दर-घंटा, दैनिक और मासिक मौसम संबंधी सारांश दिसंबर 1852 से 1877 तक एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बेंगल की प्रोसिडिंग्स और जर्नल में नियमित रूप से प्रकाशित होते रहे। आईएमडी के प्राइम मूवर, एच. एफ. ब्लानफोर्ड ने अपनी पहली प्रशासनिक रिपोर्ट में लिखा कि सर्वेक्षण जनरल वेधशाला के 1853 से 1877 तक के 24 वर्षों का डेटा "कलकत्ता के मौसम के हमारे ज्ञान का सबसे उत्तम हिस्सा है।

राधानाथ जी ने आधुनिक पूर्वानुमान तकनीकों और व्यवस्थित डेटा संग्रह की स्थापना की, और भारत में जलवायु शोध के लिए आधार तैयार किया।

➤ अन्य गतिविधियां

- उन्होंने 1862 में सरकारी सेवा से संन्यास ले लिया, जिसके बाद उन्होंने सामाजिक कार्य और विज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित एक घटनापूर्ण जीवन बिताया।
- सिकंदर ने 1854 में कोलकाता कला और शिल्प संघ की सह-स्थापना की और महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित करने वाले बंगाली पत्रिका "मासिक पत्रिका" को लॉन्च करने के लिए पीयारी चंद मित्र के साथ सहयोग किया।
- उन्हें 1862 में सेवानिवृत्ति के बाद जेनेरल असेंबलीज इंस्टीट्यूशन (अब स्कॉटिश चर्च कॉलेज) में गणित के शिक्षक के रूप में भी नियुक्त किया गया।
- उन्होंने "सर्वेक्षण मैनुअल" के वैज्ञानिक हिस्से का लेखन किया
- जर्मन दार्शनिक समाज ने उन्हें सेवानिवृत्ति के दो साल बाद, 1864 में एक सम्बद्ध सदस्य बनाया।

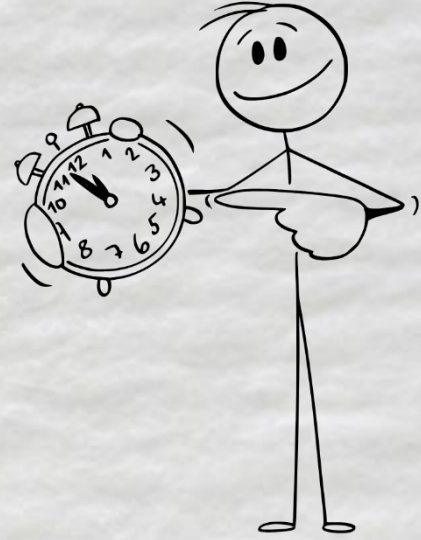
➤ सम्मान

- भारत पोस्ट ने 27 जून 2004 को स्मारक डाक टिकट जारी करके राधानाथ सिकंदर को सम्मानित किया।
- उनकी उपलब्धि अब लंदन के जीवंत ब्रिक लेन में ग्रेट आर्क प्रदर्शनी का हिस्सा है।
- पुणे में जीरो स्टोन अब भारत के महान त्रिकोणमितीय सर्वेक्षण के उनके स्मारक को दर्शाता है।



तीन अध्याय

श्री सुजीत सरकार, कार्यालय अधीक्षक
पूर्वी क्षेत्र कार्यालय



समय

मनीष की उम्र जब 5 वर्ष की थी तब उसकी दादी ने उसे स्कूल में दाखिला करा दिया। शुरु में दो-चार दिन तक बहुत रोने से उसकी माँ ने थोड़ी सी चिंता जताई पर दादी ने कहा कि शुरुआत में सभी ऐसे ही करते हैं। इसलिए इसमें चिंता करने की कोई बात नहीं है। दादी की बात बिल्कुल ही सही निकली। अब मनीष धीरे-धीरे स्कूल जाने लगा। इस तरह से स्कूल में उसके कई सारे दोस्त बन गए और उनके साथ खेलने में कुछ अलग ही मजा आता था। जब वह उच्च क्लास में प्रवेश किया तब वह दोस्तों के साथ खेलने के अलावा घूमना-फिरना, सिनेमा देखना, जन्मदिन के पार्टी में जाना, फैशन में जाना आदि की शुरुआत हो गई जिसमें न तो कोई चिन्ता और न ही कोई जिम्मेदारी बस उसकी जिन्दगी हवाई जहाज के रफ्तार से चल रही थी। सच में कहा जाए तो यही जिंदगी है।

अच्छा -समय

मनीष को जिम्मेदारी का एहसास उस समय हुआ जब कॉलेज की पढ़ाई खत्म हो गई और उसके पिता जी ने उसे एक कोचिंग सेंटर भर्ती करवा दिए तथा उन्होंने कहा कि “बेटा यहां से अब तुम नौकरी लेकर ही निकलना”। मनीष दिन-रात पढ़ाई में लग गया। आखिरकार उसकी मेहनत रंग लाई और वह नौकरी पा ही लिया। मनीष के पिता ने बिना देर किए उसकी शादी तय कर दी। मनीष पर जिम्मेदारी तब और भी बढ़ गई जब वह एक बच्चे का पिता बन गया और साथ ही साथ उसके पिताजी का व्यवसाय भी बन्द हो गया। घर की पूरी जिम्मेदारी उसके ऊपर ही आ गई। इस प्रकार से बच्चे को स्कूल में भर्ती करने, माता-पिता के बीमारी की दवाइयाँ आदि का खर्च भी बढ़ गया। घर को संभालने में वह परेशान हो जाता था। मनीष को दूसरी नौकरी तो मिली पर वह भी दिल्ली में। घरवालों के मना करने के बावजूद वह घर को संभालने के उद्देश्य से दिल्ली को रवाना हो गया। उसके जाने के बाद घर की पूरी जिम्मेदारी उसकी पत्नी पर आ गयी। इस तरह से वह लड़का को स्कूल भेजने, सास-ससुर की देखभाल करने, घर का पूरा काम-काज आदि करते-करते खुद को देखना ही भूल गयी। कुछ दिन बीमार होने के कारण वह दुनिया को अलविदा कर गयी। मनीष चकित हो कर सोचने लगा कि क्या से क्या हो गया। उसी वक्त उसके पिता जी उसे बुलाकर अपने पास बैठाया और कहा कि चलो आज तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ। एक गाँव में रतन नाम का

एक सीधा-सादा और सामान्य लड़का रहता था। उस लड़के के शिक्षक ने उससे कहा कि “प्रत्येक जीवित प्राणी में ईश्वर विद्यमान है। वह इस बात पर विश्वास भी कर लिया। एक दिन उस गाँव में एक पागल हाथी आ गया। सभी गाँव वाले भागने लगे पर रतन खड़ा रहा। सभी ने उसको वहाँ से हट जाने के लिए बोला पर वह सुना नहीं। हाथी ने उसको कुचल दिया। जब वह ऊपर गया और भगवान से मिला तो उसने भगवान से पुछा “मुझे क्यों मारा?”। भगवान ने कहा कि तुम इसलिए मर गए क्योंकि जो लोग आपको वहाँ से हटने के लिए मना कर रहे थे, उन सभी के अंदर भगवान था किन्तु आप ने उनकी बात नहीं सुनी। यह बोलते हुए मनीष के पिता जी उससे बोले की यदि आज तुम हम सभी का बात मान लिया होता तो शायद बहू आज जीवित रहती। देखते ही देखते मनीष का बेटा भी बड़ा हो गया और उसे मुम्बई में नौकरी भी मिल गई। कुछ ही दिन के अंदर मनीष के माता-पिता का देहांत हो गया। मनीष बिना देर किए लड़के की शादी कर दी।

बुरा-समय

मनीष सेवानिवृत्ति के उपरान्त अपना गाँव वापस लौट आया पर अंतर यही था कि जो घर एक समय भरा हुआ लगता था आज वह सुनसान लग रहा है। बातचीत करने के लिए भी कोई नहीं रहा। सुबह में एक लड़की घर आ कर साफ-सफाई करके चली जाती है और मनीष पूरा दिन घर के चारों ओर अकेला घूमता रहता है। समाचार पत्र पढ़कर, टीवी देखकर वह थक जाता था। मनीष के बेटे ने उसे बुलाया पर वह नहीं गया क्योंकि उस घर में उसके माता-पिता और उसकी पत्नी प्रभा की यादें उसकी स्मृति को छोड़ नहीं रही थी। आजकल मनीष को स्कूल –कॉलेज के उस समय को बहुत याद करके सोचता है कि पता नहीं उसके सभी दोस्त कहां होंगे। वह जिन्दगी भी बड़ी हसीन थी, सांसारिक जीवन भी ठीक-ठाक चल रहा था पर आज का जीवन बड़ी मुश्किल है। रोज कोई न कोई बीमारी भी आती-जाती रहती है। यह सही है कि बुरा वक्त आने पर छड़ी भी साँप बन कर काटती है। अपने ही घर में मैं स्वयं को अनजान सा लगने लगा। कब सुबह से सायं हो जाती है पता ही नहीं चलता किन्तु यह उसको पता लगने लगा की वह जीवन के सायं में आ गया..सिर्फ सूरज डूबने का इंतजार..।

बेसहारा



पाल पोसकर बड़ा किया था,
क्यों कर तूने मुझे घर से निकाला।
यही याद कर हूं मैं रोता,
क्या मैंने कसूर किया था।

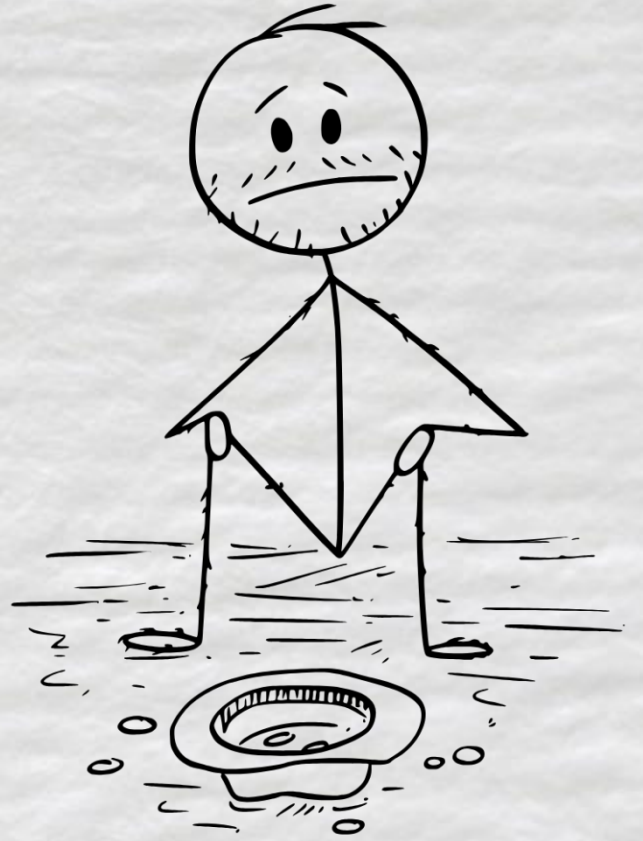
भीख मांगता सड़क-सड़क पर
पेट भरता यही काम कर
अपनी खुशियों को धकेलकर
तेरी खुशियां निभाया था

लेकिन तूने क्या कर डाला
क्यों कर मुझको घर से निकाला।
खान-पान का पता नहीं अब
ठौर-ठिकाना खबर नहीं अब

ठण्ड में सिकुड़ता, गर्मी में पिघलता
फिर भी तेरा याद है आता
क्या करूं पापा हूं तेरा
संग तेरा नहीं मुझे बिसराता

अब बूढ़ा हो चुका हूं, कुछ होता नहीं ढंग से
भूख-प्यास तो सताती ही है
पर मर रहा हूं यादों के गम से।

‘शुचि’ भगवान से करे प्रार्थना।
सभी बेटों को सद्बुद्धि देना।।



हमारी हिंदी



श्री अमरजीत कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

न जाने किस राह में भटके थे
जिसने संस्कार सिखाई उसी पे तलवार लटके थे ।
आधी उम्र बीत गई, अब पता चला की किस बात पे अटके थे
वो लम्हे भी अजीब थे, जब अपने ही पराए लगे थे,
शब्दों की कीमत क्या थी, हम कहाँ ये भूले थे।
जिसमें हो आप सहज उसी में बात बतानी थी
छोड़े उस भाव को जिसमें गुलामी थी ।
भारत की पहचान हमारी हिंदी थी ।
हिंदी ही तो आत्मा थी, हर दिल की आवाज़ बनी,
गूँज उठी जब मंचों से, तो शान की राज बनी।
जिसने शब्दों में जोड़ा अपनापन, वही बात हमारी थी,
अंग्रेज़ी के साए में भी हिंदी हमेशा प्यारी थी।



पर्यावरण

मैं हूँ स्वच्छ सुंदर पर्यावरण,
सबका भला किया मैं जीवन,
सर्दी गर्मी वर्षा सहके,
पर्यावरण को मैं सजाऊँ।
हरियाली की चादर लेके,
और फूलों की महक को लेके,
सारे जगत को मैं सजाऊँ,
शुद्ध वायु को नै फैलाऊँ,
पर्यावरण से प्रदूषण भगाऊँ।
लोगों ने इतना कहर बरसाया
मैं लाचार कुछ कर नहीं पाया



श्री धिरन राम, एमटीएस
ओडिशा एवं छत्तीसगढ़ जी. डी. (छत्तीसगढ़ विंग)

बिगाड़ें हैं लोग सड़कों और खदानों के लिए
उद्योगों और मकानों के लिए
बसंत ऋतु का मौसम आया
पर्यावरण में आश जग आया
लोगों के बिगाड़े पर्यावरण को
फिर से मैं उसे जगाऊँ
इस धरती के कोने कोने को
फिर से मैं सुंदर स्वच्छ बनाऊँ।

मधुर वाणी

कागा काको धन हरै, कोयल काको देत।
मीठा शब्द सुनाय के, जग अपनो करि लेत।
(कबीरदास)

श्रीमती सागरिका पैतल, अधिकारी सर्वेक्षक
पूर्वी क्षेत्र कार्यालय



भावार्थ: कौवा न तो किसी का धन चुराता है और कोयल न किसी को कुछ देती है। कौवा की कर्कश आवाज सुनकर उसे सब भगा देते हैं और कोयल तो किसी को कुछ देती नहीं परन्तु उसकी मधुर वाणी सबके मन को मोह लेती है। अतः हमें हमेशा मधुर वाणी बोलनी चाहिए। कभी भी मुँह से किसी के प्रति अपशब्द नहीं बोलने चाहिए। जो लोग कड़वा बोलते हैं उसे कोई भी पसंद नहीं करता जबकि मधुर वाणी बोलने वाले इंसान सर्वप्रिय बन जाते हैं।

“कृष्ण वाणी”

वाणी मधुर होने पर आप सबके प्रिय बन सकते हैं लेकिन यदि आपके शब्दों में कठोरता आने लगे तो वही प्रिय लोग आपके शत्रु बन सकते हैं। मधुर वाणी बोलना एक महंगा शौक है जो हर किसी के बस की बात नहीं।

राजा और नेत्रहीन संत

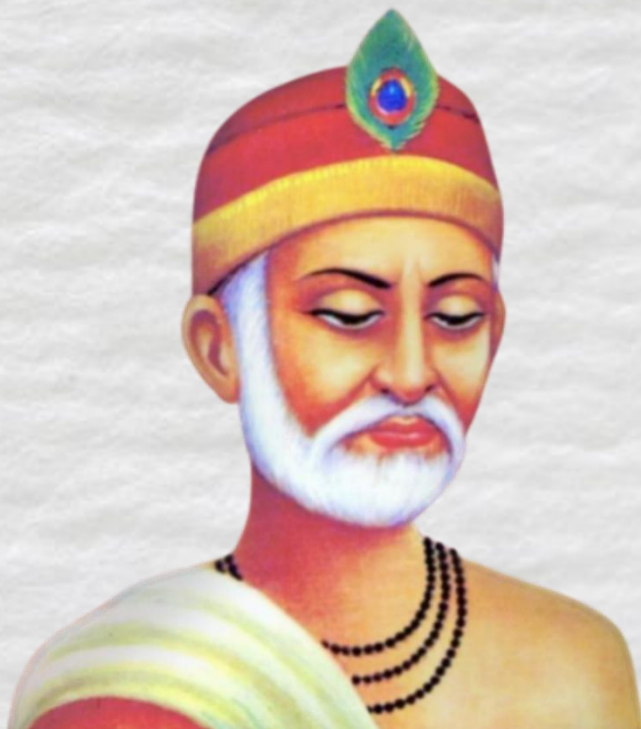
एक बार एक राजा अपने सहचरों के साथ शिकार खेलने जंगल में गया था। वहाँ शिकार के चक्कर में एक दूसरे से बिछड़ गये और एक दूसरे को खोजते हुये राजा ने एक नेत्रहीन संत की कुटिया में पहुँच कर अपने बिछड़े हुये साथियों के बारे में पूछा। नेत्रहीन संत ने कहा महाराज सबसे पहले आपके सिपाही गये हैं, बाद में आपके मंत्री गये, अब आप स्वयं पधारे हैं। इसी रास्ते से आप आगे जायें तो मुलाकात हो जायगी। संत के बताये हुये रास्ते में राजा ने घोड़ा दौड़ाया और जल्दी ही अपने सहयोगियों से जा मिला और नेत्रहीन संत के कथनानुसार ही एक दूसरे से आगे पीछे पहुँचे थे। यह बात राजा के दिमाग में घर कर गयी कि नेत्रहीन संत को कैसे पता चला कि कौन किस ओहदे वाला जा रहा है। लौटते समय राजा अपने अनुचरों को साथ लेकर संत की कुटिया में पहुँच कर संत से प्रश्न किया कि आप नेत्रविहीन होते हुये कैसे जान गये कि कौन जा रहा है, कौन आ रहा है ? राजा की बात सुन कर नेत्रहीन संत ने कहा महाराज आदमी की हैसियत का ज्ञान नेत्रों से नहीं उसकी बातचीत से होती है। सबसे पहले जब आपके सिपाही मेरे पास से गुजरे तब उन्होंने मुझसे पूछा कि ऐ अंधे इधर से किसी के जाते हुये की आहट सुनाई दी क्या? तो मैं समझ गया कि यह संस्कार विहीन व्यक्ति छोटी पदवी वाले सिपाही ही होंगे। जब आपके मंत्री जी आये तब उन्होंने पूछा बाबा जी इधर से किसी को जाते हुये..... तो मैं समझ गया कि यह किसी उच्च

ओहदे वाला है, क्योंकि बिना संस्कारित व्यक्ति किसी बड़े पद पर आसीन नहीं होता। इसलिये मैंने आपसे कहा कि सिपाहियों के पीछे मंत्री जी गये हैं। जब आप स्वयं आये तो आपने कहा सूरदास जी महाराज आपको इधर से निकल कर जाने वालों की आहट तो नहीं मिली तो मैं समझ गया कि आप राजा ही हो सकते हैं। क्योंकि आपकी वाणी में आदर सूचक शब्दों का समावेश था और दूसरे का आदर वही कर सकता है जिसे दूसरों से आदर प्राप्त होता है। क्योंकि जिसे कभी कोई चीज नहीं मिलती तो वह उस वस्तु के गुणों को कैसे जान सकता है। दूसरी बात यह संसार एक वृक्ष स्वरूप है- जैसे वृक्ष में डालियाँ तो बहुत होती हैं पर जिस डाली में ज्यादा फल लगते हैं वही झुकती है। इसी अनुभव के आधार में मैं नेत्रहीन होते हुये भी सिपाहियों, मंत्री और आपके पद का पता बताया अगर गलती हुई हो महाराज तो क्षमा करें। राजा संत के अनुभव से प्रसन्न हो कर संत की जीवन वृत्ति का प्रबन्ध राजकोष से करने का मंत्री जी को आदेशित कर वापस राजमहल आया। कबीरदास ने कहा है कि,

“ऐसी वाणी बोलिए, मन का आप खोये।

औरन को शीतल करे, आपहुं शीतल होए।।”

भावार्थ यह है कि कबीरदास जी कहते हैं, कि प्रत्येक मनुष्य को ऐसी भाषा बोलनी चाहिए जो सुन्ने वाले के मन को आनंदित अच्छी लगे। ऐसी भाषा सुनने वालों को तो सुख का अनुभव कराती है, इसके साथ स्वयं का मन भी आनंद का अनुभव करता है। ऐसी ही मीठी वाणी के उपयोग से हम किसी भी व्यक्ति को उसके प्रति हमारे प्यार और आदर का एहसास करा सकते हैं। आज-कल हमारा मध्यमवर्ग परिवार संस्कार विहीन होता जा रहा है। थोड़ा-सा पद, पैसा व प्रतिष्ठा पाते ही दूसरे की उपेक्षा करते हैं, जो उचित नहीं है। मधुर भाषा बोलने में किसी प्रकार का आर्थिक नुकसान नहीं होता है। अतः मीठा बोलने में कंजूसी नहीं करनी चाहिये।





मौन मानव

यह कौनसा समयकाल है,
जब मनुष्य के होंठों से ;
टपक कर गिर रहा है अपमान, चिंता,
सब आँखों और चेहरों पर है भय सवार।
मानो सब कुछ दीमकों की ढेर है बन चुका,
किसी भी क्षण मिट्टी में है मिल सकता।

मनुष्य का कोई दोष नहीं,
हर सूरज गवाही यह देता रहा।
दिन प्रति दिन बढ़ता गया,
राजा खुद को ही ईश्वर समझ रहा ।
मनुष्य के रक्त और मांस को,
वह तिनकों का ढेर समझता रहा ।
अंग-प्रत्यंग और मस्तिष्क में,
कीलें ठोंकी जा रही हैं लगातार,
मनुष्य का कोई मोल नहीं ,
राजा खुद को ही ईश्वर समझता रहा ।

यह कोई नगर-कीर्तन नहीं,
कोई शोभा यात्रा नहीं,
न कोई हो जैसे सजीव प्रमाण ।
सब चल रहे हैं मानो एक-एक कर
मृत्यु के मुरझाए हुए जुलूस के समान ।

हे मानव, आप आदि हो, अनंत हो ,
ईश्वर से भी हो अधिक प्राचीन।
यूँ झूठी शान में झंडे मत उठाओ,
प्रश्न करें अपने आप से,
कि वास्तव में कितने हो स्वाधीन ॥

श्रीमती सुपर्णा रॉय, प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम जीडी

এ এক প্রচলিত দুঃসময়,
মানুষের ঠোঁটের কোন বেয়ে
গড়িয়ে পড়ছে অপমান, দুঃচিন্তা,
আর চোখে মুখে ভয়।
যেন সবকিছু উই এর ঢিবি হয়ে আছে,
এক্ষুনি গুড়িয়ে মাটিতে মিশে যেতে পারে ।

প্রতিটা সূর্য সাক্ষী,
মানুষের কোনও দোষ নেই।
রাজা ঈশ্বর ভাবছে নিজেকেই ।
মানুষের রক্ত মাংস কে ভাবছে খড়ের গাদা,
অঙ্গ প্রত্যঙ্গ আর মস্তিষ্কে
পেরেক পোতা হচ্ছে অবিরত ।
এ কোন নগরকীর্তন নয়,
কোন কুচকাওয়াজ নয়,
সকলে হাটছে মৃত্যু মিছিলের মত।

হে, মানব তুমি আদি, অনন্ত
তুমি ঈশ্বরের চেয়েও প্রাচীন।
মিছিমিছি পতাকা তুলো না,
নিজেকে প্রশ্ন কোরো,
তুমি ঠিক কতটা স্বাধীন ॥

ऑपरेशन सिन्दूर की जय



चुपके चुपके पीछे से घुसके खून बहाया पाकिस्तान
दुश्मनों ने मार दिया था भारत माँ का सत्ताइश संतान।
न हम भूलेंगे, न भूलने देंगे, जख्मी हुआ था पहलगाँव
सुन लो कश्मीर हमारा था, है, और रहेगा, जब तक है भारत का वीर जवान ।

तू कुछ नहीं कर पाएगा, तू है काफिर पाकिस्तान।।
देख लिया न कैसे मारा, हमारा फाइटर ड्रोन महान।
घेर लिया था तेरा आसमान, घेर लिया था तेरा समुंदर
समझ गया तू क्या है भारत, कैसा है हमारा ऑपरेशन सिंदूर।।

श्री शांति दास, सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

तेरा ही घर में घुसके सिंदूर धूम मचाके धुलाई की
थर थर थर थर काँप रहा था, तेरा ही पुष्ट आतंकबादी।
चार ही दिनों में बंद हो गया श्वास, पैर पकड़ ली भारत की
ये है सिंदूर ये है बदला, चला है जैसा चलते रहेगा भी ।।

जय भारत माता की जय, जय बोलो जय भारत की
जय ऑपरेशन सिंदूर की जय, जय बोलो जय भारत की।
जय भारत माता की जय, जय बोलो जय तिरंगा की
जय दुर्गा माता की जय, जय बोलो जय भारत की ।।





AEBAS बाबा से कुछ अनुरोध



कुमारी अमृता मण्डल, प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

Aadhaar Enabled Biometric Attendance System (AEBAS) कई कार्यालय में कर्मचारियों की उपस्थिति दर्ज करने की एक प्रणाली है। पर ऐसे ही किसी कखग कार्यालय के AEBAS के रहस्यमय गतिविधियों के कारण यह सिर्फ एक प्रणाली बन के नहीं रह के एक 'बाबा' बन गया। उसी कार्यालय के एक आम कर्मचारी द्वारा उक्त 'AEBAS बाबा' से की गई कुछ प्रार्थनाएँ संयोगवश मुझे ज्ञात हुई, जो आपके समक्ष प्रस्तुत है:-

“बाबा, मैं आपकी एक सामान्य शरणार्थी हूँ जो हर रोज दो बार नियमित रूप से आपसे भेंट करने आती हूँ। आपसे कुछ अनुरोध है,

कार्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी सुबह-सुबह भाग दौड़ करके कार्यालय आने के बाद बिना जल-ग्रहण या वर्जन किए सबसे पहले आपसे मिलने आते हैं। पर बाबा, आप इन लोगों को दुश्मन क्यों मानते हैं? जब कर्मचारी समय पर ऑफिस आ जाता है तो कभी-कभी आप सुबह 10:16 बजे से पहले दर्शन देना ही नहीं चाहते। इसी तरह, जिस दिन वह शाम 6.45 तक काम करने के बाद आपका दर्शन लेने जाता है उस दिन आप अपना अंगूठा नीचे करके बता देते हैं कि आपसे बेचारे कर्मचारी की भेंट नहीं हो पाएगी। हालांकि, यदि एक-दो दिन वही कर्मचारी को कार्यालय आने में थोड़ी देर हो जाए या किसी अनिवार्य कारणवश उसे शाम 6.00 बजे से थोड़ा पहले निकलना पड़े तो उस दिन आपकी पूरी वाहिनी पूरी दक्षता के साथ काम में लगी रहती हैं ताकि वह कर्मचारी यह न कह सके कि आपकी वाहिनी के कोई सदस्य के विश्राम लेने के कारण वह अपनी उपस्थिति दर्ज नहीं कर पाया। अतः, बाबा आपसे प्रथम अनुरोध यह है कि आप नियमित रूप से दर्शन दें, ऐसे मन-मर्जी विश्राम न लें।

बाबा, आपसे द्वितीय विनती यह है कि जब कार्यालय के सभी अधिकारी और कर्मचारी आपकी शरणार्थी हैं तो आप सबको एक जैसे कृपादृष्टि से देखें, उनके बीच भेद-भाव न करें। कोई-कोई बेचारा हर रोज सुबह 9:30 से पहले आकर 5-5 बार अपने हाथ धोकर, अपनी दसों उंगलियों को दस बार बाल में पोछकर, सर्वोत्तम रूप से साफ-सुथरा होकर आपसे मिलने जाते हैं, पर आप उसको दर्शन ही नहीं देते, बोल देते हैं “Capture time out!!” ऐसे चलते हुए बदकिस्मत कर्मचारी के कुछ बाल झड़ जाते हैं, हाथ धोते-धोते उसे सर्दी हो जाती है। परंतु, इतना कुछ हो जाने के बावजूद भी आप और 10 मिनट तक उसकी धैर्य की परीक्षा लेकर, बीच में 2-4 और दर्शनार्थियों से मुलाकात कर उससे भेंट करते हैं, जबकि किसी-किसी को आप 10 सेकंड के अंदर ही दर्शन दे देते हैं? आपके ऐसे भेद-भाव के कारण भले ही कोई कार्यालय में शारीरिक रूप से समय पर आ जाता हो, पर आपके रिकॉर्ड के अनुसार उसको 15

मिनट देर हो जाता है। इसीलिए बाबा, थोड़ा सोचकर देखिए न कैसे आपके शासनतंत्र में भी 'पहले आओ पहले पाओ (first come first serve)' योजना को सख्ती से कार्यान्वित किया जा सके?

सिर्फ इतना ही नहीं, जिन लड़कियों के साथ आपका हर रोज मुलाकात होते रहता है, वे किसी दिन कोई विशेष अवसर पर हाथ में मेहंदी लगाकर आपके दर्शन लेने आती हैं तो आप उनको पहचान ही नहीं पाते हैं? जबकि कई माईल दूर उत्तर-पूर्व भारत के किसी कार्यालय से आया हुआ अनजान आदमी को आप प्रथम दर्शन में ही पहचान लेते हैं? बाबा, आपकी दूरदृष्टि सुप्रसिद्ध है, पर इतना भी दूर में दृष्टि मत डालिए कि नजदीक वाले छूट जाए।

बाबा, अगर आज्ञा हो तो आपसे एक प्रश्न पूछना है, बचपन में गणित की 'आपेक्षिक गति (relative speed)' आपका प्रिय अध्याय था क्या? नहीं तो आप कर्मचारियों को इतना भागदौड़ करने के लिए क्यों मजबूर करते? सड़क पर अन्य यात्रियों को स्पीड टेस्ट में हराकर किसी-किसी दिन जब कर्मचारी सुबह 9:30 बजे भू-तल में स्थित कोई अनुभाग (जैसे 40 पार्टी) में आपका दर्शन लेने जाता है तो उसे पता चलता है कि आप अपनी टीम के बाकी सदस्यों को छुट्टी दे दिए हैं और आप स्वयं दर्शनार्थियों से पहली मंजिल में स्थित भंडार अनुभाग में मिलेंगे। 'भाग मिल्खा भाग' करते-करते जब वह भंडार अनुभाग में पहुँचते हैं तो देखते हैं कि उसे लाईन शुरू करने का मौका नहीं मिला बल्कि वह लाईन में 6 व्यक्ति के पीछे खड़ा हो पाया! ऐसे खड़े खड़े 2 मिनट और चला जाता है। पर जैसे ही आप पंक्ति के पाँचवें व्यक्ति से मिल लेते हैं, आपको मुड होता है कि आपकी यहां की टीम अब विश्राम करेगी और अब आप फिर से वहीं 40 पार्टी विभाग में दर्शन देंगे। बेचारा कर्मचारी और एक बार मिल्खा जी को याद करके 40 पार्टी में पहुँचते हुए देखता है कि वह लाईन में खड़ा होने में फिर से 7वां स्थान हासिल किया। उस वक्त उसे बस तेल लगी लकड़ी पर बंदर के चढ़ने के प्रयास की कहानी याद आती है। जैसे बेचारा बंदर आज तक यह नहीं समझ पाया कि उसे परेशान करने के लिए लकड़ी पर तेल किसने लगाया था, वैसे ही आपका मुड इतनी जल्दी क्यों बिगड़ जाता है इसका उत्तर भी आज तक अनिर्णीत रहा। बाबा, आपसे तृतीय निवेदन यह है कि कृपया कार्यालय में आप अपनी सर्वव्यापकता सिद्ध करें और आपकी टीम के सभी सदस्यों को एक साथ छुट्टी न दें।

बाबा, अंत में एक और बात आपको चुप के से बोलनी है। कोई-कोई संशयवादी लोग तो आपके किसी किसी रिश्तेदारों की ईमानदारी पर भी सवाल उठाते हैं। बोलते हैं कि आपके वे रिश्तेदार 'वर्क फ्रॉम होम (अर्थात 'वर्क फ्रॉम दर्शनार्थियों के होम')' भी करते हैं। बाबा, आप जैसे समझदार के लिए तो इशारा ही काफी है। इसीलिए, आपसे अनुरोध है कि सामान्य मनुष्य को ही कार्यालय में आपके पास आकर दर्शन लेने के लिए मजबूर करें। 'होम डिलिवरी सर्विस' चालू न करें ताकि आपकी महानता और ईमानदारी पर कोई उंगली न उठा सके।

बाबा, कुछ और भी सवाल थे मेरे मन में पर एक ही बार में आपको और परेशान नहीं करना है। बस इतना ही कहना है कि ऊपर बताई गई प्रार्थनाओं पर थोड़ा अवलोकन करें और हो सके तो इन ख्वाहिशों को पूरा करने का कष्ट करें।"

बचपन से सुनते आ रहे हैं, 'त्रिया चरित्रं, देवो न जानाति कुतो मनुष्यः'। लेकिन, इसके लेखक को AEBAS की लीला देखने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था, वरना शायद वह कहावत स्त्रियों के बजाय AEBAS पर लिखी जाती। 'बाबाजी' से की गई प्रार्थनाएं सुनकर मुझे तो यही महसूस हुआ। आपकी राय क्या है ?

माँ – सबसे प्यारी



श्रीमती शिखा, अर्द्धांगिनी: श्री अमरजीत कुमार

प्रवर श्रेणी लिपिक, पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

जब भी खुद को कमजोर पाया,
माँ ने हौसला बन कर निभाया।
आँखें मेरी जो भर आईं,
माँ ने हँसकर ढाढ़स बंधाया।



जब कांपने लगे थे पाँव मेरे,
माँ ने चलना सिखाया धीरे-धीरे।
हर मोड़ पे जो साथ रही,
वो एक फ़रिश्ता, वो माँ रही।

मैं गिरती रही, वो उठाती रही,
दुनिया से पहले वो समझती रही।
हर दर्द मेरा अपना बना लिया,
बिना कहे उसने सब सह लिया।

खुद भूखी रही, मुझे खिलाया,
अपने आँचल से मुझे छुपाया।
मेरे सपनों को उड़ान दी,
हर ठोकर पर पहचान दी।

जब भी जिन्दगी से डर लगने लगा,
माँ का नाम ही राहत बनने लगा।
उसकी बातों में दवा थी कोई,
जो छू ले, तो मिटे रंज हो जो भी।

मैं जब भी टूटी, वो संजीवनी सी लगी,
सुख में साया, दुख में छाया बनके जगी।
उसने हर मोड़ पर साथ दिया,
माँ ने हर रिश्ता आबाद किया।

वो बिना स्वार्थ के प्यार लुटाए,
हर ग़लती पर मुझे गले लगाए।
उसकी ममता का नहीं कोई मोल,
वो है तो पूरी है मेरी धूप और धूपोल।

मेरे चेहरे की मुस्कान है माँ,
मेरे हर दिन की जान है माँ।
सारे जहाँ से प्यारी है,
सबसे न्यारी, माँ हमारी है।

जगत जननी जगदम्बा – बड़की दादी (स्मृति शेष)

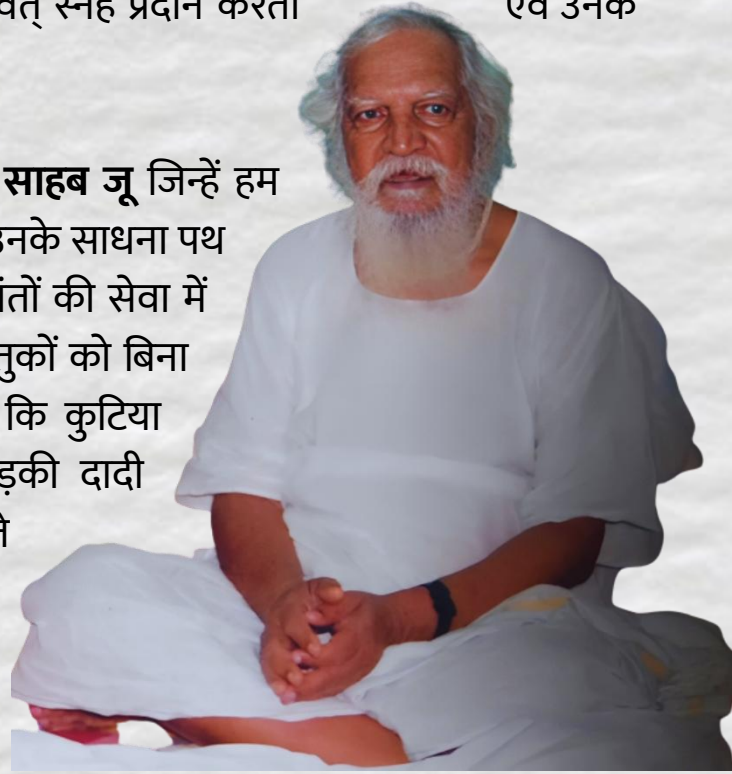


सादरः

श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

जगत जननी जगदम्बा के दर्शन हेतु तो सभी लालायित रहते ही हैं, परंतु इस कलिकाल में बिरले ही होते हैं जिन्हें उनके दर्शन नसीब होते हैं। पर यदि ईश्वर की कृपादृष्टि हो तो क्या ही असंभव है। ऐसी ही कृपादृष्टि का अनुग्रह सौभाग्यवश हम और हमारे जैसे अनेकों दीन-दुःखियों के ऊपर भी हुआ। जगदम्बा की साक्षात प्रतिमूर्ति हमारी गुरु माँ जिन्हें हम प्यार से **बड़की दादी** कहते थे, कुटिया पर आने वाले सभी आगंतुकों, साधु-संतों को पुत्रवत् स्नेह प्रदान करती एवं उनके कष्ट निवारण का हरसंभव प्रयास करती।

प्रातः स्मरणीय परम् पूज्य गुरुदेव **बौआ साहब जू** जिन्हें हम बचपन से ही **मालिक बाबा** कह कर पुकारते थे, उनके साधना पथ की सहगामिनी हमारी **बड़की दादी** सदैव साधु-संतों की सेवा में लगी रहती थी। कुटिया पर आने वाले सभी आगंतुकों को बिना भोजन कराए नहीं भेजती। आपको बताते चलें कि कुटिया अर्थात् कबीर आश्रम में मालिक बाबा और बड़की दादी निःस्वार्थ भाव से सभी दीन-दुखियों की सेवा करते थे। मालिक बाबा के पास जड़ी-बुटी का विलक्षण ज्ञान था। उसका उपयोग कर वे सभी लोगों का मुफ्त इलाज करते साथ ही सभी आगंतुकों के कुटिया में ही निःशुल्क आवास एवं भोजन का प्रबंध करते। सायंकाल में प्रतिदिन मालिक बाबा प्रार्थना के दौरान सद्गुरु कबीर के उपदेशों को



जनसमुदाय के समक्ष रखकर उनमें भगवत प्रेम का अलख जगाने का प्रयास करते। उनका सदा से यही प्रयास रहा कि प्रत्येक लोग जीव-हत्या जैसे महापातक से दूर रहें, मांसाहार का त्याग करते हुए प्राणिमात्र पर दया दृष्टि रखें। उनका विश्वास था कि लोगों में दया और करुणा जैसे मानवीय सद्गुणों के विकास से ईश्वर के निकट पहुंचा जा सकता है।



कृपानिधान मालिक बाबा के निःस्वार्थ सेवा भाव एवं उनके उपदेशों का वर्णन करने में तो मेरा जीवन छोटा पड़ जाएगा। गुरुदेव के विचारों, उनके उपदेशों का वर्णन करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है, परंतु इस आलेख में मैं आपको गुरुमाता जगदम्बा स्वरूपा बड़की दादी से परिचय कराना चाहता हूँ।

बड़की दादी, मालिक बाबा के कठिन साधना-पथ की साक्षी रही है। मानव-मात्र की सेवा में अपना संपूर्ण जीवन न्यौछावर करने वाली बड़की दादी, हमारे लिए बचपन से ही सहज उपलब्ध रहने वाली एवं स्नेह प्रदान करने वाली रही है। जब भी कोई कष्ट होता, हमलोग भागकर कुटिया पर पहुंच जाते। सीधे मालिक बाबा से कुछ कहने में बचपन में तो भय होता था, जिसने बाद में संकोच का आवरण ओढ़ लिया था। वहीं बड़की दादी हमारे और मालिक बाबा के मध्य संवाद स्थापित करने का कार्य बड़े ही स्नेह से कर देती थी।

पहले दादी को उनका अनुग्रह प्राप्त हुआ करता था और आगे चलकर माँ को भी उनका विशेष अनुग्रह प्राप्त हुआ। माँ ने तो मानो बड़की दादी को अपने मन मंदिर में ही धारण कर लिया। जब भी कोई कष्ट या बेचैनी महसूस होती, वो अपने कष्ट लेकर उनके पास पहुंच जाती। और बड़की दादी सदैव एक मनमोहक मुस्कान लिये पल भर में सभी कष्टों के दूर करने का उपाय ढूंढ लेती। मैंने उनको समर्पित एक काव्य की रचना की है जो आपके समक्ष उनका सजीव चित्रण प्रस्तुत करने में सहायक होगा-

सहज शांत तेजोमयी सूरत ।

ममतामयी जगदम्बा की मूरत ॥

निर्मल हृदय, करुणामयी दृष्टि ।

अविरल स्नेह से सींचत सृष्टि ॥

गुरु माँ की तो छवि है ऐसी ।

स्वयं विराजे गुरुवर जैसी ॥

साहेब बन्दगी चरण कमल में ।

श्रद्धा—भाव हैं सजल नयन में ॥

तुम सम कौन कहूं उपकारी ।

जो आवे कुटिया दुःखियारी ॥

मातृ स्नेह की बारिश करती ।

पल में उनकी पीड़ा हरती ॥

गुरुवर के साधना—पथ की तुम,

अविचल औ निर्भीक संगिनी ।

दया—धरम का पाठ पढ़ाती,

भव—भय दूर कराती जन की ॥

माई साहब, बड़की दादी,

केवल नाम नहीं श्रद्धा है ।

कोटि—कोटि वंदन चरणों में,

जन—जन की पावन आस्था है ॥

‘शुभेश’ करतु हैं बंदगी,

बिनवों बारम्बार ।

बड़की दादी दया करो

विनती करो स्वीकार ॥

पिछले दिनों परमात्मा ने जगत जननी जगदम्बा का साथ हमसे छीन लिया और उन्हें अपने पास परमधाम बुला लिया। माँ कहती है कि अब अपना दुःखड़ा लेकर किसके पास जाएंगे। मन की व्यथा किससे कहेंगे, हम सब तो अनाथ हो गए। मालिक बाबा के परमधाम गमन करने के बाद बड़की दादी में ही उनकी छवि देखा करता था और उन्होंने भी कभी मालिक बाबा की कमी महसूस नहीं होने दी। परंतु मैं भी कितना स्वार्थी हूँ, केवल अपना ही स्वार्थ देखता रहता हूँ। मुझे बड़की दादी के कष्टों का तो भान ही नहीं हुआ। जिन मालिक बाबा का बिछोह सहना हमारे लिए इतना कष्टकर था, बड़की दादी ने 15 वर्षों तक उनके बिना इस मृत्युलोक में वास किया और अनवरत निःस्वार्थ भाव से मानवमात्र की सेवा करते हुए मालिक बाबा के विचारों को जन-जन तक पहुंचाया। उन्होंने संत कबीर साहेब के सदुपदेशों को अपने सेवा भाव से जीवंत कर दिया। जिस कुटिया में प्रतिदिन सैकड़ों साधु-संतों की भीड़ लगी रहती थी, वहां बड़की दादी ने एकाकी जीवन भी व्यतीत किया। परंतु हम उनके कष्टों से अनभिज्ञ रहे और अपने ही उलझनों में उलझे रहे। माँ बताती हैं कि लगभग 137 वर्षों से प्रतिवर्ष अग्रहण पुर्णिमा में होने वाले वार्षिक भण्डारा, जिसमें लाखों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं, उन सबको भोजन कराए बिना बड़की दादी पानी भी ग्रहण नहीं करती थी। निराहार रहकर सभी संतों के भोजन उपरांत ही प्रसाद ग्रहण करती थी। उम्र के इस पड़ाव में और गिरते स्वास्थ्य के बावजूद वर्ष 2024 के उनके जीवन के अंतिम भण्डारा में भी उन्होंने इस व्रत को बखूबी निभाया। अभी उनके देवलोक गमन से हम स्वयं को अनाथ तो महसूस करते हैं, परंतु इस बात की खुशी भी महसूस होती है कि अब वो परमधाम में मालिक बाबा के संग रहेंगी।

हे बड़की दादी, तुम तो स्वयं जगदम्बा हो और हमारे हृदय में सदैव विराजमान हो। तुम तो मेरे गुण-दोष सभी जानती हो। जिस भांति तुम सदैव हमारे और मालिक बाबा के मध्य संवाद स्थापित करने में सहायक होती थी, उसे याद कर मेरा ये स्वार्थी मन पुनः लालायित हो उठा है।

हे बड़की दादी, तुम तो अब मालिक बाबा के संग विराजती हो, तो एकबार पुनः मालिक बाबा को कहना न कि हम सब पर अपना कृपादृष्टि बनाएं। जो कुछ अच्छा – बुरा कर्म हमारा इस जन्म या पिछला जन्म का होगा, उसका फल तो भोगना ही होगा, परंतु उसे झेलने की शक्ति मिलेगी।

बड़की दादी, मालिक बाबा को कहना कि उनके बिना हम सब सचमुच अनाथ हो चुके हैं, हमारी गति बीच समुन्द्र में ठहरे उस जहाज पर के काग के समान है जो बार-बार यहां-वहां भटकता है और फिर वापस उसी जहाज पर आ पहुंचता है। यथा-

काग-जहाजक गति अछि मोरा, जाऊं कत' करू ककर निहोरा।

‘शुभेश’ आब अहीं के शरणियां ओ बाबा, हम सब अहीं के शरणियां।।

बड़की दादी तुमसे विशेष क्या, कहें, तुमसे कुछ छुपा तो नहीं है, तुम सर्वज्ञ हो। बस हम सब पर अपनी कृपा बनाए रखना।

साहेब बन्दगी - ३



बोट-पार्टी



श्री गोवर्धन साहा, कार्यालय अधीक्षक
पूर्वी क्षेत्र कार्यालय

नौकाविहार शब्द से आप सब अवश्य परिचित हैं एवं इस शब्द को सुनते ही आप सभी को जरूर सावेक जमीनदारों का उनके परिवार / दोस्तों के साथ नाव (नौका) पर जांकजमकपूर्ण नदी भ्रमण की याद आता होगा, जो कहानी आप किसी वृजुर्ग से सुने होंगे।

हम ठहरे गंगा नदी के शाखा भागीरथी नदी के किनारे स्थित मुर्शिदाबाद जिला के बहरमपुर निवासी। नौकरी में भर्ती होने से पहले मेरा खेलना-कूदना, घूमना-फिरना हर पल की साक्षी थी यह नदी। दोस्तों के साथ सायं को खेल-कूद के पश्चात इसके तट पर हमारा समिति के मैदान में एकसाथ बैठकर बातचीत, हँसी-मज़ाक में कुछ समय बिताते थे। वह हमारा जीवन का एक सुनहरा क्षण था। ऐसे ही एक दिन एक दोस्त ने एक प्रस्ताव रखा “क्यों न हम इस बार हमारा वार्षिक-बनभोजन समिति के उद्यान के बदले नदी में नाव पर करने का प्रयास करें”। ये प्रस्ताव उपस्थित सभी को बहुत पसंद आया। इस तरह हमारा वार्षिक बोट-पार्टी की शुरुआत 15 अगस्त 1990 से हो गयी। बहरमपुर से यात्रा आरम्भ कर हमारा गंतव्य 25 किलोमीटर दूर जियागंज के बरानगर तक निर्धारित हुआ। हाल ही में पर्यटन मंत्रालय द्वारा आयोजित कृषि-पर्यटन ग्राम प्रतियोगिता में इस स्थान को भारत में सर्वश्रेष्ठ पर्यटन ग्राम के रूप में चुना गया है। यहाँ सबसे आकर्षक पर्यटक स्थल रानी भवानी का महल और बरानगर टेराकोटा मंदिर परिसर है। दोनों का निर्माण रानी भवानी ने 18वीं शताब्दी में करवाया था। उनके समय में बरानगर को बंगाल का वाराणसी

कहा जाता था।



ऐतिहासिक प्राचीन नगर / ग्राम भ्रमण करने इच्छुक व्यक्ति यदि कभी मुर्शिदाबाद घूमने जाएं तो इस पर्यटनस्थल पर अवश्य जाएँ।

वैसे हमारा बोट-पार्टी जिसकी शुरुआत 1990 में हुई जो आज भी जारी है लेकिन बढ़ते उम्र के कारण पहले के भांति यह प्रत्येक वर्ष नहीं हो पाता है। हमारे बोट-पार्टी के सदस्य संख्या 25 से 35 तक होता है। इसके लिए एक बृहत नाव की जरूरत होती है। एक दिन पहले ही उसपर पंडाल एवं बाती लगाने के लिए नाव को डेकोरेटर के हवाले कर दिया जाता है क्योंकि हमारा बोट-पार्टी जुलाई-अगस्त महिना में होता है एवं बारिश के कारण इन दिनों नदी एकदम परिपूर्ण होता है। इस तरह से बारिश एवं धूप से बचने के लिए और हर तरह की सुरक्षा हेतु व्यवस्था करना जरूरी होता है। नाव का इस तरह से सजाबट होने के कारण हमारा नाव जब नदी में सफर करती है तब नदी के दोनों तरफ उत्सुक दर्शनार्थियों का भीड़ लग जाती है।

शुरुआत के वर्षों में हमारा बोट-पार्टी दिन-रात (24 घंटे) की होती थी। बाद में जब से नाव में मोटर (इंजिन) लगाया गया तब से यह केवल एक ही दिन (12 घंटे) के लिए होता है। उन दिनों के नाव में रात जागने की अनेक मनोहर और रोमांचक घटनाएँ आज भी याद आती हैं एवं मन को रोमांचित कर देती हैं। जिसमें से एक रोमांचक घटना आज बताने जा रहा हूँ जिसको याद करने से आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

यह घटना
1993 की
है जब
हमारा
बोट-पार्टी
24 घंटे



की होती थी। हमारा सुसज्जित नाव सायं 5 बजे यात्रा शुरू करने के पश्चात रात के भोजन बन जाने तक रात्री 11-12 बजे के अंदर एक गाँव की एक सब्जी खेत के पास 4-5 घंटे के लिए किनार कर देते। उस वर्ष सायं से अंधाधुन बारिश होने से उसी स्थान पर पहुचने में रात को 1 बज गया था। उन दिनों बिना इंजिन के नाव होने के कारण बहरामपुर से बरानगर स्रोत के विपरित में जाने के समय नाव के माझी नाव को मोटा रस्सी से खींचकर ले जाते थे। इसलिए उन लोगो को विश्राम दिलाने के लिए शेष रात्री को हम इस स्थान पर रुक जाते थे।

रात को करीब एक बजे नाव को नदी के किनारे करके हम सभी थोड़ी देर के लिए विश्राम कर रहे थे। कोई पत्ता खेल रहा था तो कोई लेट गया था। रात को तीन-साढ़े तीन बजता ही होगा कि अचानक से एक माझी घबराए हुए आकर कहा 'दादा बुधन कहीं भी मिल नहीं रहा है'। बुधन नाव का दूसरा माझी था। वह दोनों एकसाथ नाव बांध कर थोड़ी ही दूर में एक डीप-ट्यूबवेल के पम्प घर के दालान पर सो रहे थे। पूछने से माझी ने कहा कि अजीब सी एक आवाज सुनाई पड़ रही थी जिससे मेरी नींद खुल गई तो देखा बुधन पास में नहीं है। सोचा कि इधर-उधर होगा। मैंने कई बार आवाज दिया लेकिन", आपलोग चलिए। हम लोग 10-12 दोस्त टर्च वगैरह लेकर खेत के अंदर पूरा छानबीन किया, जोर-जोर

से उसके नाम भी पुकारे। धीरे- धीरे हम भी घबराने लगे। हमारा आवाज से डीप-ट्यूबवेल का केयर-टेकर घर से निकल आया। उन्होंने कहा इस सब्जी खेत के उस पार एक प्राचीन महल है। एकबार उधर भी खोज करके देखिए। हमलोगों ने उनकी बात मानकर उस तरफ भी दौड़ लगा दिए। महल पूरी तरह से जंगल से घिरा हुआ था। अमावस्या की रात थी और बादल इतना घना था कि कुछ नजर नहीं आ रहा था। अचानक टोर्च की रोशनी में एक भग्न दरवाजे के नीचे माझी का गमछा नजर आया। हमने चिल्ला कर सबको बुलाया और तुरंत दरवाजे से अंदर घुसा तो कुछ अजीब-सा महसूस हुआ और डर-सा लगने लगा। इतने समय में ओर भी दोस्त अंदर आ गये तो टोर्च की रोशनी से घर के चारो ओर देखा और सभी लोग एकदम से चकित रह गए। घर के एक कोने में बुधन दीवार पर ठेस लगाए बैठा था। गर्दन नीचे की तरफ झुका हुआ था। तुरंत उनको उठाकर नाव पर ले आया और पानी से छिड़क कर उसे होस में लाया गया। गर्म दूध पिलाकर जब स्थिति थोड़ा सामान्य हुआ तो उन्होंने बताया कि, “मुझे अचानक पेट में मरोड़ आने

लगी थी तो
मैदान जाना
जरूरी हो
गया।
गोपाल
(दूसरा
माझी)
गहरी नींद में
था, तो उसे



जगाना ठीक नहीं समझा। मेरा काम हो ही गया था। वापस आने को सोच रहा था लेकिन पता नहीं क्या हो रहा था, मेरा पैर लग रहा था कि जैसे जमीन में अटक गया था। मैं उठकर चल नहीं पा रहा था। ऐसे में दूर से एक महिला के रोने की आवाज सुना। अंधेरे में चुप-चाप बैठ कर आवाज किस ओर से आ रही थी जिसे पता करने के लिए कौशिश कर रहा था। अचानक अंधेरे में केवल दो लाल आंखें जैसा कुछ दिखा। बस, मैंने किसी तरह पूर्ण शक्ति से दौड़ लगाया। नाव के करीब पहुँच ही गया था कि अचानक बेहोश होकर गिर पड़ा। इसके आगे मुझे ओर कुछ मालूम नहीं है। होश आया तो देखा कि आप सब मुझ पर पानी फेंक रहे हो। गोपाल ने कहा कि तू सब्जी क्षेत्र के उस पार पुराने महल में बेहोश मिला।

केयर-टेकर दादा कब नाव पर आया किसी ने ख्याल नहीं किया था। उन्होंने बुधन को कहा तुम्हारा नसीब अच्छा था कि ये लोग तुम को ढूँढ निकाले। केयर-टेकर दादा को देख कर मेरे मन में एक सवाल उठा तो मैंने उनको पुछा, अच्छा दादा उस समय आपने पुराना महल के तरफ ढूँढने को क्यों बोला? आपको ऐसा क्यों लगा कि बुधन उधर जा सकता है? और वह उधर गया भी कैसे जब अभी-अभी उसने कहा कि वह भाग कर नाव में आ रहा था? उन्होंने कहा यह बुधन का भ्रम था, असल में कोई यहाँ है जो उसको महल में खींचकर ले गयी थी जिसकी चर्चा मैंने सुना है। दादा ने कहा कि यहाँ के जमींदार निःसंतान थे। इसलिए उन्होंने अपने पत्नी के छोटे भाई को महल में लाया था। यहाँ दीदी के लाड-प्यार में ओर जमींदारी के चाँक-चौबन्ध ने उसे अत्याचारी बना दिया था। उनके विरुद्ध कोई भी शिकायत पर

जमींदार ने कोई कार्रवाई नहीं करता था। इसके कारण उनके अत्याचार प्रतिदिन बढ़ते ही चले गए। एक दिन गाँव की एक बेटी ने जमींदार बाबू के पास उनके खिलाफ शिकायत करने के लिए महल में गयी थी। सुना है, कि वह लड़की महल से बाहर नहीं आ पायी एवं उसकी कोई खोज भी नहीं मिली। इस घटना के ठीक एक साल बाद ऐसे ही एक अमावस्या के रात को उस अत्याचारी व्यक्ति का लाश यही नदी के किनारे पर मिली था। इतना कहकर केयर-टेकर दादा ने अपना पम्प लेकर घर चले गए।

रात का अंधेरा थोड़ा हल्का होने लगा तो हमने भी नाव खोल दिया और चाय पीते-पीते सबकी सहमति से यह निर्णय लिया गया कि अगले आने वाले वर्षों में बोट-पार्टी की रात्री विराम किसी अन्य स्थान पर होगी।

विज्ञान: वरदान या प्रश्न

विज्ञान बढ़ा, गति मिली सोच को,
कण-कण में झाँकने की खोज को।
धरा की छाती चीर डाली,
ऊर्जा की भूख कहाँ तक खाली?

एटम से परमाणु तक सफर हमारा,
पर क्या सीखा हमने प्यारा?
जहाँ रौशनी थी, वहाँ बम भी बना,
प्रगति के साथ विनाश भी पला।

रसायन से जीवन को शक्ति मिली,
पर जहर भी चुपचाप संग चली।
बिना विवेक के जब विज्ञान चला,
मानव खुद अपने पथ से फिसला।

चंद्रयान, मंगलयान तक पहुँचे,
फिर भी धरती क्यों न सँभले?
कृत्रिम बुद्धि हो या क्लोन का खेल,
आदमी खो बैठा अपना असली मेल।



श्री प्रलय कुमार दास, सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

आविष्कार तो हुए हज़ारों,
पर संवेदना में क्यों आए छारों?
क्या विज्ञान हमें जोड़ता है सचमुच,
या अकेलापन दे रहा है चुपचाप कुछ?

चलो, अब ज्ञान के संग विवेक भी जोड़ें,
नयी दिशा में विज्ञान को मोड़ें।
जहाँ तकनीक हो मानवता के संग,
न हो विकास का विनाशक रंग।

प्रवासी श्रमिक



श्री राजेश रंजन, अधीक्षण सर्वेक्षक
ओडिशा एवं छत्तीसगढ़ जी. डी. (छत्तीसगढ़ विंग)

किस शहर का मुसाफिर,
किस शहर का कास्तकार है,
दो रोटी शाम की,
दो सुबह की दरकार है।
गाँव को जबसे छोड़ गया है,
वो अपने भी छूट गए,
बचपन के जो सपने थे,
वो भी कब के टूट गए।
खेतों की क्यारियों,
अब शहरों की तंग गलियों हैं,
इन शहरों के छोटे डब्बों में,
अप्रस्फुटित मन की कलियाँ हैं।
वो डुबकी लगाना नदियों में,
जाने कब वह भूल गया,
शाम पतली पगडंडियों पर,
वह दौड़ लगाना भूल गया।
अब तो बस, बस में धक्के खाता है,
खाने और कमाने को,
हुनर बांध वो शहर गया है,
किस्मत को आजमाने को।

जीना तो वह भूल गया है,
बस जी हुजुर.....जी सरकार है,
किस शहर का मुसाफिर,
किस शहर का कास्तकार है।
दो रोटी शाम की,
दो सुबह की दरकार है।



गरीबी और शिक्षा का अनोखा संबंध — संजीत एण्ड

फ्रेंड्स क्लब की प्रेरणा



श्री अमरजीत कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

भारत में गरीबी और शिक्षा का आपस में गहरा और अनोखा संबंध है। शिक्षा वह मार्गदर्शक शक्ति है जो मनुष्य को सही दिशा दिखाती है, जिससे वह समाज में व्याप्त अन्याय, भ्रष्टाचार और बुराईयों के खिलाफ साहस के साथ खड़ा हो सके।

पर आज एक गंभीर प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या शिक्षा सभी तक समान रूप से पहुँच पा रही है? वास्तविकता यह है कि गरीबी के कारण अनेक लोग समुचित शिक्षा से वंचित रह जाते हैं।

फिर भी, जो व्यक्ति गरीबी के बावजूद शिक्षा प्राप्त करता है और छोटी-छोटी सफलताएँ हासिल करता है, वह न केवल अपने जीवन को बेहतर बनाता है, बल्कि अपने आस-पास के उन लोगों की भी मदद करता है जो शिक्षा से वंचित हैं। ऐसे व्यक्ति अपने अनुभव और संघर्षों से प्रेरणा लेकर समाज में शिक्षा और मूलभूत सुविधाओं के विस्तार के लिए निरंतर प्रयासरत रहते हैं।

इसी कड़ी में मैं अपने जिले समस्तीपुर के एक महान व्यक्तित्व श्री रविरंजन जी के बारे में अपनी व्यक्तिगत भावनाएँ प्रकट करना चाहता हूँ। श्री रविरंजन जी, जो समस्तीपुर के निवासी हैं, वर्तमान में एक सरकारी पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने अपनी सफलता को केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रखा, बल्कि अपने अनुभवों के आधार पर वर्ष 2012 में समस्तीपुर में 'संजीत एण्ड फ्रेंड्स क्लब' नामक एक निःशुल्क शैक्षिक संस्थान की स्थापना की।

इस क्लब के माध्यम से अब तक लगभग 5000 से अधिक छात्र-छात्राओं का कायाकल्प हुआ है। ये छात्र आज केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकार में विभिन्न पदों पर कार्यरत हैं और अपनी मेहनत व अनुशासन से देश-राज्य की सेवा कर रहे हैं। उनके इस प्रयास ने समस्तीपुर की सोच को बदल दिया है और लोगों में शिक्षा के प्रति भावनात्मक जुड़ाव उत्पन्न किया है।

यदि कोई छात्र इस क्लब में शिक्षा प्राप्त करता है और सफलता हासिल करता है, तो वह सामाजिक रूप से भी अपनी जड़ों से जुड़ा रहता है।

संजीत एण्ड फ्रेंड्स क्लब की स्थापना की प्रेरणा श्री रविरंजन जी को उनके एक गहरे मित्र के शहीद होने से मिली। उनका यह मित्र, संजीत, मुंबई में रेलवे की परीक्षा देने गया था। उस समय मुंबई में क्षेत्रवाद और अलगाववाद की भावना व्याप्त थी। इस अलगाववादी भावना के कारण हुए दंगे का शिकार उनका मित्र संजीत भी हो गया। दंगाई में तब्दील भीड़ ने संजीत की जान ले ली।

संजीत की याद में, उनकी मित्रता और आदर्शों को जीवित रखने के लिए यह क्लब स्थापित किया गया। यह क्लब न केवल शिक्षा का प्रकाश बनकर उभरा है, बल्कि समस्तीपुर के हजारों युवाओं के जीवन में एक नई आशा और विश्वास का संचार कर रहा है।

संजीत एण्ड फ्रेंड्स क्लब केवल एक शैक्षिक संस्थान नहीं, बल्कि एक प्रेरणा और सामाजिक परिवर्तन का प्रतीक बन चुका है। यह साबित करता है कि शिक्षा के माध्यम से कैसे गरीबी की बेड़ियाँ तोड़ी जा सकती हैं और एक बेहतर समाज का निर्माण किया जा सकता है।

किताबों की दुनिया की मेरी पहली यात्रा

सुश्री शुचि दास: सुपुत्री - श्री शुभेश कुमार

कार्यालय अधीक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



मुझे किताबें पढ़ने का शौक है, खासकर कहानियां, विशेषकर पौराणिक कथाएं। एकबार मेरे पापा बोले चलो आज तुम्हें किताबी दुनिया की सैर कराता हूं। मैंने बोला वो क्या होता है। उन्होंने मेरे छोटे भाई को संग लिया और निकलते हुए बोले, 'चलो तो सही, तुम्हें बहुत पसंद आएगा।' फिर वो हमें लेकर इंटरनेशनल बुक फेयर में लेकर आ गए। कोलकाता के सेंट्रल पार्क में लगने वाला यह पुस्तक मेला वाकई अद्भुत था। मैंने आज तक इतनी सारी किताबें एक साथ नहीं देखी थी। कहानी की किताबों की तो बात ही छोड़ दीजिए, उसकी तो कोई कमी ही नहीं थी। इसके साथ-साथ ड्राइंग, आर्ट, कॉमिक्स, ओलम्पियाड, एटलस, कॉमिक्स..... अरे कितनी ढेर सारी किताबें थी। मैं तो एक स्टॉल पर रुकती तो वहीं ठहर जाती थी, किताबों को खोलकर पढ़ने लगती। पापा बोलते, बेटा यहां बस पसंद करो जो तुम्हें चाहिए, पढ़ने बैठोगी तो इतने विशाल पुस्तक मेले को कैसे घूम पाओगी।

मैंने ढेर सारी किताबें खरीदी- जातक कथाएं, प्रेमचंद की कहानियां, मंडला आर्ट, ड्राइंग की तकनीक, एटलस, तेनालीराम की 101 कहानियां, माँ पर लिखी कविताओं का संग्रह। मैं पूरे दिन पुस्तक मेले में घूमती रही और कब रात हो गई पता ही नहीं चला। अभी भी मेरा मन नहीं भरा था। वाकई वह किताबों की अनोखी दुनिया थी और मेरे लिए तो मानों सपनों जैसा था। छोटे भाई के लिए भी हमने कई पिक्चर बुक खरीदी। मुझे इतना पसंद आया कि तब से मैं हर बार इस पुस्तक मेले में जाती हूं और ढेर सारी किताबें लाती हूं।

पृथ्वी

अस्तित्व है अनजान,
पर फिर भी है मेरी पहचान।
कोई पुकारता है 'अर्थ' मुझे,
तो कोई पुकारता 'बसुंधरा'।
हो चाहे जो मेरी स्वरूप,
धरती हूँ विकराल रूप।
घिरा हुआ हूँ हरियाली से,
भरा पड़ा हूँ पानी से।
तू ढूँढ रहा कहां क्या मानव,
मिट्टा तू अपने अंदर का दानव।



ई-ऑफिस

है 'ई-ऑफिस' का खुमार,
कर्मियों में है हाहाकार।
अंतर्जाल से कर पत्राचार,
करें 'डिजिटल इंडिया' का प्रचार।
कागजों का नहीं है अब अंबार,
क्योंकि 'ई-फ़ाइल' का है सूत्रधार।
सरकारी कार्यालयों में है सुमार,
मिलकर मिटाए भ्रष्टाचार।
करना हो कुछ भी सुधार,
'स्पैरो' करता है उद्धार।
हो चाहे कही भी संचार,
लेना होगा 'पेपरलेस' का भार।
करो न ज्यादा इस पर विचार,
वरना भारी पड़ेगा यार।

श्री सत्य प्रकाश राउत, कनिष्ठ अनुवादक अधिकारी
पूर्वी क्षेत्र कार्यालय



पालने से विरासत तक - एक पुरुष बालक की जीवन यात्रा



श्री अनिरुद्ध बासु, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

हर परिवार में पुत्र का जन्म केवल एक नई किलकारी नहीं, बल्कि एक नई आशा का उदय होता है— एक ऐसा सपना जो समय के साथ जिम्मेदारियों, मूल्यों और विरासत में रूपांतरित होता है। एक पुरुष बालक का जीवन मासूमियत से परिपक्वता तक की अनवरत यात्रा है—जहाँ हर पड़ाव एक नई सीख, एक नया अनुभव लेकर आता है।

शैशवावस्था: निष्कपटता और खोज का संसार

जीवन की शुरुआत लोरियों की मधुरता, मां के स्पर्श और पिता की मुस्कान के बीच होती है। नन्हीं उंगलियों का सहारा, पहली मुस्कान, और डगमगाते कदम परिवार के स्नेह और सुरक्षा का प्रतीक बन जाते हैं। यह वही समय होता है जब बिना शब्दों के, बच्चे को प्रेम और विश्वास की पहली भाषा सिखाई जाती है।

विद्यालय जीवन: मित्रता और महत्वाकांक्षा की उड़ान

विद्यालय उसके लिए नई दुनियाओं का द्वार खोलता है—पढ़ाई का रोमांच, खेल का जोश, और मित्रता की मिठास। कभी जीत की खुशी, तो कभी हार की सीख—हर अनुभव उसकी सोच को परिपक्व करता है। शिक्षक मार्गदर्शक बनते हैं, और परिवार द्वारा सिखाए गए मूल्य जैसे ईमानदारी, अनुशासन और करुणा उसके व्यक्तित्व की नींव रखते हैं।

किशोरावस्था: पहचान की तलाश

यह वह दौर है जब बालक अपने अस्तित्व के अर्थ को खोजने लगता है। शारीरिक बदलावों के साथ विचारों में भी उथल-पुथल होती है। स्वतंत्रता की चाह और परिवार के स्नेह के बीच संतुलन बनाते हुए वह आत्मबोध की ओर बढ़ता है। गुरुजनों की सलाह और मित्रों का साथ इस यात्रा के सहचर बनते हैं।

युवा अवस्था: जीवन निर्माण और आत्मनिर्भरता का युग

अब वह जीवन के वास्तविक संघर्षों से परिचित होता है—करियर की दिशा, सिद्धांतों की परिभाषा और जिम्मेदारियों का बोध। माता-पिता का सहारा बनने और परिवार के मान को बनाए रखने का संकल्प उसमें गहराता है। यही वह समय है जब वह ईमानदारी, धैर्य और आत्मबल के वास्तविक अर्थ समझता है।

◉ विवाह और पितृत्व: जिम्मेदारी और प्रेम का संगम

विवाह एक नए अध्याय की शुरुआत है—सपनों का साझा, जिम्मेदारियों का विस्तार। पति और फिर पिता बनने के साथ वह अपने बचपन की यादों को जीता है, और वही स्नेह अपने बच्चों में उड़ेलना चाहता है। अब वह परिवार का आधार बनता है—संस्कारों का रक्षक और परंपराओं का संवाहक।

👑 परिवार का मुखिया: संरक्षक और मार्गदर्शक

समय के साथ जब वह अनुभव और परिपक्वता के शिखर पर पहुंचता है, तो परिवार का नेतृत्व उसके कंधों पर आ टिकता है। अब बच्चे उसकी ओर मार्गदर्शन के लिए देखते हैं, और बुजुर्ग उसका परामर्श मानते हैं। यह पद केवल सम्मान का नहीं, बल्कि जिम्मेदारी का भी प्रतीक है—परिवार में एकता बनाए रखना, निर्णय लेना और आने वाली पीढ़ी को सही दिशा देना।

एक पुरुष बालक की यात्रा केवल व्यक्तिगत विकास की कहानी नहीं, बल्कि परिवार और समाज के विकास की भी गाथा है। हर चरण उसे नया आकार देता है, नई समझ देता है। अंततः वह अपने पालन-पोषण का परिणाम और अपनी विरासत का निर्माता बनता है—बीते कल के सपनों और आने वाले कल की उम्मीदों के बीच एक सशक्त सेतु।

जो सुनते अपनी कानों से,
जो देखते अपनी आँखों से,
जरूरी नहीं वह वास्तविक हो,
जरूरी नहीं वह दृश्य शाश्वत ही हो ।

दिखे अंबर धरती के ऊपर,
जरूरी नहीं तैरें धरती पानी पर,
दिखे सूरज काटते चक्कर
जरूरी नहीं वह काटते हम पर।

दिखे जो उल्टा दृश्य मरुदान में,
जरूरी नहीं वह सत्य हो उस स्थान में,
घिरे जो धरती हरियाली में,
निशा की प्रहरी चंद्रमा की रश्मि में ।

दुनिया पड़ी इस भ्रम में,
जिसे देखते हम नयन में,
देख तू मानव अपनी कर्म में
झांक अपनी अंतरमन में ।

अहम न कर इस जीवन में,
खाक तो मिलना है मिट्टी में,
गुरुर छोड़ हे मानव,
निकाल अपने अंदर का दानव।



श्री गोवर्धन साहा, कार्यालय अधीक्षक
पूर्वी क्षेत्र कार्यालय

राष्ट्रीय भू-स्थानिक नीति, 2022 - संक्षिप्त विवरण



श्री राहुल शर्मा, उप-अधीक्षण सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

➤ प्रमुख तथ्य

- राष्ट्रीय भू-स्थानिक नीति, 2022 (एनजीपी-2022), को भारत सरकार द्वारा 28 दिसंबर, 2022 को अधिसूचित किया गया, जो एक नागरिक-केंद्रित नीति है, जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय विकास, आर्थिक समृद्धि और एक समृद्ध सूचना अर्थव्यवस्था को समर्थन देने के लिए भू-स्थानिक क्षेत्र को मजबूत करना है।
- एनजीपी सरकारी एजेंसियों, निजी क्षेत्र और शिक्षा जगत को सामाजिक और आर्थिक लाभ के लिए भू-स्थानिक डेटा साझा करने के लिए प्रोत्साहित करती है। जिसके लिए राष्ट्रीय भू-स्थानिक डेटा रजिस्ट्री (NGDR) केंद्रीकृत अभिगम को विकसित किया जा रहा है।
- अंतर्राष्ट्रीय मानकों को ध्यान में रखते हुए (UN-GGIM), नीति ने संबंधित नोडल मंत्रालय/विभागों को निम्नलिखित 14 मौलिक भू-स्थानिक डेटा विषय आवंटित किए हैं जो न केवल सामूहिक जिम्मेदारी सुनिश्चित करेंगे बल्कि डेटा निर्माण के दोहराव को भी समाप्त करेंगे।
 1. भूमितीय संदर्भ फ्रेम
 2. ऑर्थोइमेजरी
 3. कार्यात्मक क्षेत्र (प्रशासनिक सीमा डेटाबेस)
 4. स्थलनाम (भौगोलिक नाम डेटाबेस)
 5. ऊँचाई और गहराई (डीईएम)
 6. जल
 7. परिवहन नेटवर्क
 8. इमारतें और बस्ती
 9. भूमि आवरण और भूमि उपयोग
 10. भौतिक अवसंरचना
 11. भूमि पार्सल

12. पते

13. भूविज्ञान और मिट्टियाँ

14. जनसंख्या वितरण

- उपरोक्त 14 राष्ट्रीय मौलिक भूस्थानिक डेटा विषय वस्तुओं के निर्माण और रखरखाव का कार्य उपयुक्त नोडल मंत्रालयों में बांटा गया है , जैसे 'जल' विषयवस्तु के भूस्थानिक डेटा को बनाने का कार्य जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग को दिया गया है

➤ लक्ष्य एवं उद्देश्य

नींव निर्माण

**वर्ष
2025**

- * जियोस्पेशियल सेक्टर के उदारीकरण और मूल्य संवर्धित सेवाओं के साथ व्यावसायिकीकरण ।
- * सभी डिजिटल डेटा के लिए एक समेकित इंटरफ़ेस की स्थापना ।
- * आधुनिक पोज़िशनिंग तकनीकों का उपयोग कर राष्ट्रीय जियोडेटिक फ्रेमवर्क को पुनः परिभाषित करना पूरे देश के लिए उच्च सटीकता वाला जोईड करना ।
- * जियोस्पेशियल जानकारी प्रबंधन को सुदृढ़ करने हेतु सरकार, उद्योग, निजी क्षेत्र, शिक्षा और नागरिक समाज की सहभागिता ।

सुदृढ़ीकरण

**वर्ष
2030**

- * उच्च रिज़ॉल्यूशन भौगोलिक सर्वेक्षण और मानचित्रण (शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के लिए 5-10 सेमी और जंगलों और बंजर भूमि के लिए 50-100 सेमी)।
- * पूरे देश के लिए उच्च सटीकता वाला डिजिटल उन्नयन मॉडल (DEM) (समान क्षेत्रों के लिए 25 सेमी, पहाड़ी और mountainous क्षेत्रों के लिए 1-3 मीटर)।
- * एक भू-स्थानिक ज्ञान अवसंरचना (GKI) विकसित करना जो एकीकृत डेटा और सूचना ढांचे द्वारा समर्थन।
- * देश की भविष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए क्षमताओं, कौशल और जागरूकता को बढ़ाना।

अनुप्रयोग

**वर्ष
2035**

- * ब्लू इकोनॉमी का समर्थन करने के लिए अंदरूनी जल स्रोतों और उथले/गहरे समुद्रों का समुद्र-सतह की भू-आकृति के लिए उच्च रेसोल्यूशन / सटीक बैथीमेट्रिक भू-स्थानिक डेटा तैयार करना।
- * प्रमुख शहरों और कस्बों में भूमिगत बुनियादी ढांचे का सर्वेक्षण और मानचित्रण।
- * प्रमुख शहरों और कस्बों का राष्ट्रीय डिजिटल द्विवन तैयार करना।

➤ भारत सर्वेक्षण विभाग की भूमिका

- भारत सर्वेक्षण विभाग भू-स्थानिक डेटा उत्पादन का केंद्र बिंदु के रूप में कार्य कर रहा है।
- ये विभाग विभिन्न हितधारकों के सहयोग से निम्न पांच विषयवस्तुओं को विकसित करेगा।

1. भूमितीय संदर्भ फ्रेम
2. ऑर्थोइमेजरी
3. कार्यात्मक क्षेत्र (प्रशासनिक सीमा डेटाबेस)
4. स्थलनाम (भौगोलिक नाम डेटाबेस)
5. ऊँचाई और गहराई (DEM)

- ये विभाग विभिन्न हितधारकों द्वारा की जाने वाली विभिन्न मानचित्रण गतिविधियों से उत्पन्न भिन्न डेटा समूहों को सहज रूप से एक में संगत कर भू-संदर्भ ढांचे में समेकित करेगा।
- भारत सर्वेक्षण विभाग अन्य संस्थानों और निजी क्षेत्रों के सहयोग से एनजीडीआर (NGDR) एवं यूजीआई (UGI) जैसी युक्तियों को विकसित और संचालित करेगा।
- **नेशनल जियोस्पेशियल डेटा रजिस्ट्री (NGDR)** – राष्ट्रीय स्तर पर, सभी उपरोक्त 14 विषयों से संबंधित डेटा को विभिन्न स्रोतों से एकत्रित/ संग्रहित/प्रसारित करने के लिए एक डेटा रिपॉजिटरी बनाई जाएगी, जो देश में सभी प्रकार के भू-स्थानिक डेटा और सेवाओं के लिए सामान्य प्लेटफार्म के रूप में कार्य करेगा। इस डेटा को फिर सभी सरकारी उपयोगकर्ताओं के लिए निःशुल्क और निजी उपयोगकर्ताओं के लिए मामूली शुल्क पर उपलब्ध कराया जायेगा।
- **एकीकृत भूस्थानिक इंटरफ़ेस (UGI)** - एनजीडीआर में मौजूद भूस्थानिक डेटा और मेटाडेटा का उपयोग करते हुए उपभोक्ता-उन्मुख उत्पादों, अनुप्रयोगों, सेवाओं और समाधानों के लिए एक इलेक्ट्रॉनिक डेटा क्वेरी और प्रोसेसिंग सेवा बनाई जाएगी।

➤ भू-स्थानिक डेटा संवर्धन और विकास समिति (GDPDC)

- यह समिति नीति के विभिन्न प्रावधानों के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने हेतु सर्वोच्च निकाय है, जो कि देश में भू-स्थानिक क्षेत्र के विकास के मार्गदर्शन के लिए समय-समय पर दिशानिर्देशों को जारी करेगा।
- इसका गठन सरकार द्वारा किया जाता है। इस नीति के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग सरकार का नोडल विभाग होगा। GDPDC के सदस्य सचिव भारत के महासर्वेक्षक है।

- GDPDC में सभी विषय से सम्बंधित नोडल मंत्रालयों/विभागों के साथ-साथ भू-स्थानिक उद्योगों के सदस्य शामिल होंगे।

➤ भूस्थानिक कौशल परिषद (Geospatial Skill Council)

- नीति के कार्यान्वयन के साथ, सर्वेक्षण और मानचित्रण के क्षेत्र में तीव्र वृद्धि देखने को मिल सकती है, जिससे भूस्थानिक सूचना क्षेत्र में विभिन्न नौकरी भूमिकाओं के लिए रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।
- इस संसाधन अंतर को भरने के लिए, DST एवं SOI, उद्योग और शैक्षणिक विशेषज्ञों के साथ मिलकर राष्ट्रीय कौशल विकास परिषद (NSDC) के साथ काम करके एक भूस्थानिक सूचना कौशल परिषद को गठित किया जायेगा, जिसका मुख्य उद्देश्य विभिन्न जियोस्पेशियल सेक्टर में विभिन्न नौकरी-भूमिकाओं/ कौशलताओं के लिए बहु-स्तरीय राष्ट्रीय कौशल योग्यता ढांचे (NSQF) के हिस्से के रूप में कौशल अंतर अध्ययन संचालित करना, योग्यता पैक विकसित करना और व्यावसायिक मानक तैयार करना है।
- राष्ट्रीय भू-सूचना विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान (NIGST), भारतीय दूरसंचार संस्थान (IIRS) के जैसे उपयुक्त संस्थानों को भू-सूचना विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विशेष पाठ्यक्रम प्रदान करने वाले उत्कृष्टता केंद्रों के रूप में विकसित किया जायेगा।

➤ निजी क्षेत्र की भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ

- डाटा का वास्तविक संग्रह और संयोजन और डाटा थीम्स का विकास फरवरी, 2021 के दिशानिर्देशों के अनुरूप निजी क्षेत्र की भागीदारी के साथ बढ़ते हुए किया जाएगा।
- सभी नोडल विभागों के साथ समन्वय कर नागरिकों की विभिन्न भू-स्थानिक या स्थान-आधारित समाधानों से संबंधित आवश्यकताओं और मांगों को मुख्य रूप से निजी क्षेत्र द्वारा पूरा किया जायेगा।
- निजी क्षेत्र भू-स्थानिक और मानचित्रण अवसंरचनाओं के निर्माण और रखरखाव, नवाचार और प्रक्रिया सुधार और भू-स्थानिक डेटा के मुद्रीकरण में प्रमुख भूमिका निभाएगा।

नक्शा एवं अमृत परियोजना

श्री संतोष प्रसाद, अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



नक्शा परियोजना (NAKSHA PROJECT)

नक्शा प्रोजेक्ट सर्वे ऑफ इंडिया (भारतीय सर्वेक्षण विभाग) के महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट्स में से एक है।

यह परियोजना: शहरी भूमि रिकॉर्ड्स को आधुनिक बनाने की एक पहल है

- भारत सरकार ने शहरी क्षेत्रों में भूमि रिकॉर्ड्स को आधुनिक बनाने और उन्हें डिजिटलीकरण करने के उद्देश्य से नक्शा परियोजना की शुरुआत की है।
- यह परियोजना भूमि संसाधन विभाग, ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा कार्यान्वित की जा रही है।

नक्शा परियोजना के उद्देश्य:

- शहरी भूमि रिकॉर्ड्स को डिजिटलीकृत करना और उन्हें अद्यतन बनाना
- भूमि विवादों को कम करना और पारदर्शिता बढ़ाना
- शहरी योजना और विकास में सुधार करना
- संपत्ति लेनदेन को आसान और सुरक्षित बनाना

नक्शा परियोजना की विशेषताएं:

- ड्रोन और एरियल सर्वेक्षण का उपयोग करके उच्च-सटीकता वाले नक्शे तैयार करना
- जीआईएस प्लेटफॉर्म का विकास करना जो भूमि रिकॉर्ड के प्रबंधन के लिए एक एकीकृत मंच प्रदान करता है
- भूमि रिकॉर्ड को सार्वजनिक रूप से सुलभ बनाना, जिससे नागरिकों को अपने संपत्ति अधिकारों के बारे में जानकारी प्राप्त करने में मदद मिलती है

नक्शा परियोजना का महत्व:

- शहरी क्षेत्रों में भूमि विवादों को कम करने और पारदर्शिता बढ़ाने में मदद मिलेगी।
- शहरी योजना और विकास में सुधार होगा, जिससे शहरों का संरचित विकास हो सकेगा
- संपत्ति लेनदेन आसान और सुरक्षित होंगे, जिससे आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा

निष्कर्ष:

नक्शा परियोजना शहरी भूमि रिकॉर्ड्स को आधुनिक बनाने और उन्हें डिजिटलीकरण करने की एक महत्वपूर्ण पहल है। इसके कार्यान्वयन से शहरी क्षेत्रों में भूमि विवादों को कम करने, पारदर्शिता बढ़ाने और शहरी योजना और विकास में सुधार करने में मदद मिलेगी।

अमृत परियोजना (AMRUT Project)

भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा अमृत परियोजना (AMRUT - Atal Mission for Rejuvenation and Urban Transformations) कायाकल्प और शहरी परिवर्तन के लिए अटल मिशन एक कदम स्वच्छता की ओर है। अमृत 2.0 की 50,000 - 99,999 जनसंख्या वाले द्वितीय श्रेणी के शहरों के जी आई एस आधारित मास्टर प्लान तैयार करने की उप-योजना के तहत ड्रोन का उपयोग करके ज्योडेटबेस का निर्माण करना है।

अमृत परियोजना: शहरी कायाकल्प की एक पहल

भारत सरकार द्वारा शुरू की गई अमृत परियोजना, शहरी क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण पहल है। भारतीय सर्वेक्षण विभाग, देश के मानचित्रण और भू-स्थानिक डेटा के लिए जिम्मेदार होने के नाते, इस परियोजना में अपनी विशेषज्ञता का योगदान दे रहा है।

परियोजना का मुख्य उद्देश्य

- अमृत परियोजना का मुख्य लक्ष्य शहरी स्थानीय निकायों में बुनियादी सुविधाओं को बढ़ाना है। इसमें पानी की आपूर्ति, सीवरेज, शहरी परिवहन, तूफानी जल निकासी और हरे-भरे स्थानों का विकास शामिल है। इस परियोजना का दृष्टिकोण "सभी के लिए पानी" और "सभी के लिए सीवरेज" सुनिश्चित करना है।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग की भूमिका

भारतीय सर्वेक्षण विभाग इस परियोजना के सफल कार्यान्वयन के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भू-स्थानिक डेटा और सटीक मानचित्रण के माध्यम से, विभाग शहरी नियोजन और विकास के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करता है।

* **शहरी मानचित्रण:** विभाग उच्च-रिज़ॉल्यूशन वाले मानचित्र तैयार करता है जो शहरी बुनियादी ढांचे की योजना बनाने और उसे लागू करने में मदद करते हैं।

* **डेटा संग्रह और विश्लेषण:** सटीक स्थलाकृतिक सर्वेक्षण और भूमि उपयोग/भूमि कवर डेटा अमृत परियोजनाओं के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करते हैं।

* **परियोजना निगरानी:** भू-स्थानिक प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके, भारतीय सर्वेक्षण विभाग परियोजनाओं की प्रगति की निगरानी और मूल्यांकन में सहायता करता है।

कोलकाता में अमृत परियोजना

कोलकाता, पश्चिम बंगाल की राजधानी होने के नाते, अमृत परियोजना के तहत कई महत्वपूर्ण पहलों का गवाह बन रहा है। शहर में पानी की आपूर्ति प्रणाली में सुधार, सीवरेज नेटवर्क का विस्तार, और सार्वजनिक परिवहन को सुदृढ़ करने पर जोर दिया जा रहा है।

भविष्य की दिशा

अमृत परियोजना के माध्यम से, सरकार का लक्ष्य अधिक टिकाऊ और रहने योग्य शहर बनाना है। भारतीय सर्वेक्षण विभाग अपनी तकनीकी विशेषज्ञता के साथ इस यात्रा में एक प्रमुख भागीदार बना रहेगा।

आँख



श्री सत्य प्रकाश राउत, कनिष्ठ अनुवादक अधिकारी
पूर्वी क्षेत्र कार्यालय

बड़ी अजीब सी बैचेनी है यारों
जिन आंखों से भविष्य देख रहे हैं,
शायद वही आंखे भविष्य न देख पाए।
बड़ी अजीब सी विडंबना है यारों
जिन आंखों से वर्तमान सजों रहे है,
शायद यही आंखे इन फलों को चख न सके।
बड़ी अजीब सी कशमकश है यारों
जिन आंखों से रास्ते बुन रहे हैं,
शायद वही रुकावटें न बना दे।
बड़ी अजीब सी सफर है यारों
जिन आंखों से संबंधियों का स्नेह मिल रहा है,
शायद वही अंत में तकरार न बन जाए।
बड़ी अजीब सी अड़चनें हैं यारों
जिन आंखों से जगमगाती दुनियां देखने को मिल रहा,
शायद वही अंधेरा न छा जाए।
बड़ी अजीब सी एहसास है यारों
जिन आंखों से शिद्दत से मेहनत किए जा रहे,
शायद वही कही पानी न फिर जाए।

बड़ी अजीब सी दर्द है यारों
जिन आंखों से अकेलापन देखने को मिल रहा
है, शायद वही अंततः अकेला ही न छोड़ जाए।
बड़ी अजीब सी कसौटी है यारों
जिन आंखों से लोगों पर विश्वास जता रहे हैं,
शायद वही धोखा न दे जाए।
बड़ी अजीब सी दयालुता है यारों
जिन आंखों से खुशियों बांट रहे हैं, शायद वही
दुखी न कर जाए।
बड़ी अजीब सी भावना है यारों
जिन आंखों से भावनाओं को पिरोते देखा है,
शायद वही चकनाचूर न हो जाए।

बातें 'उनकी', सहना 'हमारा'

- पतियों के धैर्य की कहानी



श्री अनिरुद्ध बासु, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय


कहा जाता है – “हर सफल पुरुष के पीछे एक स्त्री होती है,” पर यह भी सच है कि हर विवाहित पुरुष के पीछे एक अखंड धैर्य की परीक्षा चलती रहती है!

घर की दीवारें जानती हैं कि एक पति के कानों ने कितनी बार सुना –
“मैं न होती तो तुम्हारा क्या होता?”

या

“तुम्हारे जैसे आदमी के साथ तो कोई रह ही नहीं सकती थी!”

यह संवाद सिर्फ शब्द नहीं, बल्कि एक विवाहित जीवन का ध्वनिप्रवाह हैं, जो हर घर के वातावरण में किसी न किसी रूप में गूंजता है।

 पत्नी संवादों का शाश्वत संग्रह


बाजार की सब्जी से लेकर मोबाइल की बैटरी तक, हर विषय पर पत्नी वर्ग का कोई न कोई तीखा-मीठा संवाद तैयार रहता है। जैसे:

“जगत की हर चीज याद रहती है, बस मेरी बात नहीं!”

“तुम्हारे जैसे भुलक्कड़ को तो अकेले रहना चाहिए था!”

“कितने अच्छे रिश्ते थे मेरे लिए, अब पछता रही हूँ!”

इन संवादों की एक विशेषता होती है—ये समय, स्थान या परिस्थिति नहीं देखते। कभी चाय पीते वक्त, कभी टीवी देखते हुए, तो कभी दरवाजे की घंटी बजते ही—संवाद वितरण का कार्यक्रम प्रारंभ!

 पति: शांति का ब्रह्मचारी

पति वर्ग के पास उत्तर तो बहुत होते हैं, पर अनुभव सिखा देता है

“मौन ही विवेक है, और विवेक ही बचाव।”

इसलिए जब पत्नी कहती है, “तुम्हारे जैसे आदमी के साथ कोई नहीं रह सकती थी,” तो पति मुस्कुराते हुए सोचता है

“सच कह रही हैं, अब तक मैं खुद भी नहीं रह पाता अगर जवाब दे देता!”

पत्नी की बातों को सुनना ही एक मानसिक ध्यान योग है। हर पति एक प्रशिक्षित साधक है—जो बाहर शोर मचाता है, लेकिन घर आते ही “हाँ जी” के मंत्र से पूरे घर में शांति स्थापित कर देता है।

● सहनशीलता का विज्ञान

कई समाजशास्त्रियों का मानना है कि पति का धैर्य मानव सभ्यता की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

पत्नी की आवाज़ सुनकर भी अनसुना करना, व्यंग्य को मुस्कान में बदलना, और दोष को “कोई बात नहीं” में परिवर्तित करना—ये क्षमताएँ किसी योगी से कम नहीं।

पति वर्ग समझता है कि “विवाद में विजय” का अर्थ अक्सर “रात्रिभोज का परित्याग” होता है, इसलिए वह शांति को प्राथमिकता देता है।

😊 कड़ाही और खुरपी का दर्शन

कहते हैं, जब जीवनसाथी से संवाद न बने, तब महिलाएँ कड़ाही और खुरपी से संवाद कर लेती हैं—और इस ‘आवाज़ के अभ्यास’ से आत्मा को शांति मिलती है।

पति वर्ग जानता है—इस समय कुछ कहना नहीं, केवल कमरे का कोना बदल लेना ही सर्वोत्तम रणनीति है।

क्योंकि जब तक कड़ाही शांत न हो, तर्क व्यर्थ है!

🌿 रिश्तों में मिठास का मंत्र

पति-पत्नी का संबंध संवाद, तर्क, और थोड़ा बहुत सहनशील हास्य पर आधारित है।

पत्नी का ताना भी प्रेम का ही एक रूप है—वह शिकायत में भी लगाव छिपा कर रखती है।

और पति का मौन, घर की शांति का आधार है।

इसलिए कहा जा सकता है—

“पति सुनता है, पत्नी बोलती है—और यही जीवन का संगीत है।”

दुर्गा माँ

दुर्गा माँ आई,
खुशियाँ साथ में लाई।
सज गई फिर सब गलियाँ,
चारों ओर रौनक छाई।

हर तरफ गूंजे जयकारे,
माँ की मूरत दिल को प्यारे।
सिंदूर खेला, ढोल की ताल,
भक्तों में छया अनोखा हाल।।

आरती की ज्योति में चमके चेहरा,
माँ की कृपा से मिटे हर अँधेरा।
सजी है पंडालों की कतार,
दिल में उमंग, आंखों में प्यार।।।

झूम-झूम भक्तों ने मंगल गाया,
दुर्गा माँ की आरती कराया।
इस पूजा में मिलता सबका साथ,
भक्ति से बढ़ जाए हम सब की आश।।

माँ की ममता है अपरंपार,
सभी करते हैं जय-जय कार।
दुर्गा माँ हम सब को आशीष दें,
सुख-शांति से जीवन को भर दें।।



श्री राणा दास, कार्यालय अधीक्षक
मेघालय एवं अरुणाचल प्रदेश भू-स्थानिक निदेशालय



मेरे जीवन की पराकाष्ठा



श्री जय प्रकाश राउत : पिता - श्री सत्य प्रकाश राउत
कनिष्ठ अनुवादक अधिकारी, पूर्वी क्षेत्र कार्यालय

मैं, मध्यम वर्गीय, ६० के दशक में जन्मा एक साधारण व्यक्ति जिसे भूत, वर्तमान और भविष्य ने समयानुरूप परिवर्तित किया जो जीवन के विभिन्न पहलुओं और अनुभवों को समेटे हुए जी रहा है। बात अगर समाज, संबंधी और मानवीय आवरण की हो, तो मैंने इन्हे भी बहुत सरलता से चखा हैं। बात अगर कहना शुरू करू तो दूर तक जाएगी, वाद-विवाद बन जाएगी क्योंकि ये समाज ठहरा सिर्फ और सिर्फ आलोचनाओं को टटोलना पर जो भी हो सत्य की पराकाष्ठा को झूठ से ढका नहीं जा सकता। इस मतलबी दुनिया में मैंने अपनों को ढूँढने में अपनी सारी क्षमता लगा दिया पर मिला सिर्फ शून्य। आप को लगता होगा कि सिर्फ गोल-गोल घुमा रहा हूँ पर करू भी तो क्या पृथ्वी भी तो गोल हैं परंतु धैर्य रखिए पर्दा उठने ही वाला हैं जो जीवन वृत्तांत के मार्मिक स्वरूप को दर्शाता हैं।

आइए, आप को अपने जीवन वृत्तांत में ले चलता हूँ। बाल रूप में जन्मा बालक बोध जो भिन्न अठखेलियों को टटोलता और मस्ती में खेलता, कूदता, चिड़ाता और बचपन के रंग में बह जाता। बचपना कब जवानी में बदला पता ही नहीं चला पर जो भी हो बचपन का वो दौर आज भी स्मृति में उपजता रहता हैं। जवानी के दहलीज पर पारिवारिक बोझ, आर्थिक बोझ, कार्मिक बोझ इत्यादि ने मुझे जकड़ लिया और मेरा बोझिल कंधे ने फिर मुझे स्वतंत्र होने नहीं दिया। सोचा जवानी के इस सफर में हमसफर मिली और जीवन को सुचारु रूप में कंधे से कंधे मिलाकर आगे चलेंगे पर संबंधियों के स्वार्थ लोलुपता और अपनों का धोखे ने मुझे तोड़-मरोड़ दिया पर फिर भी मैंने उफ़ नहीं किया। इस तरह से संघर्षमयी जीवन चलता रहा और फिर मेरे जीवन में आशा के भावी पीढ़ियों का आगमन हुआ जिनके सहारे मेने सभी आकांक्षाओं को खत्म कर नई ऊर्जा के साथ जीवन जीना शुरू किया और ठान लिया कि भावी पीढ़ियों को सुधारना है, सवारना है, बेहतर बनाना है और समाज के समक्ष स्वावलम्बी रूप में खड़ा करना हैं। इस तरह से जीवन के एक नए दौर में चलना शुरू किया और गाड़ी पटरी पर चलती रही जिससे भावी पीढ़ियों को शिक्षा, संस्कार, मानविकता, धर्मोपारायण आदि के गुणों से परिलक्षित किया पर आज के इस राजनीतिक प्रतिद्वंद्वीता ने सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक आदि पहलुओं को प्रभावित कर रखा है जिससे भावी पीढ़ियाँ भी क्षत-विक्षत हो रही हैं।

आज मेरी दशा जीवन के अंतिम सीमा से गुजरती हुयी विभिन्न रोगों के थपेड़ों से कमजोर होती जा रही है, क्योंकि परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है पर आशाभूत आकांक्षाएँ कुछ तो सफल और कुछ असफलताओं से गुजर रही हैं। आशा है कि शायद कोई राह मिल जाए। मेरी विफलताएँ सिर्फ मेरी भावी पीढ़ियों के सफलताओं से जुड़ा हैं। देर ही सही पर दुरुस्थ हो रहा है। हाँ, ये बात सच है कि बहुधा बचपन का पुनरागमन होता हैं, जिससे मैं गुजर भी रहा हूँ। गाने का शौक हो जेसे किशोर, रफी, लता आदि या कपड़े

पहनने की आदतों में बदलाव तो हुआ है। निरंतर सुबह से दोपहर और दोपहर से रात कि एक ही पट कथा लिख रहा हूँ। जीवन जिए जा रहा हूँ। अंत में बस यही कहना चाहूँगा कि भूत हमेशा वर्तमान और भविष्य की कुंजी होती हैं। चलते-चलते एक शायरी सुनाता हूँ
“ हर जख्म के रूप से अंदाजे बदल जाती है , कभी-कभी जीवन की राहें संभल जाती हैं ।“

अंतरिक्ष में भारत के बढ़ते कदम

श्री अंशुमन सरकार, अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) भारत का राष्ट्रीय अंतरिक्ष संस्थान है, इसका गठन 15 अगस्त 1959 को किया गया था इसरो का मौलिक उद्देश्य विभिन्न राष्ट्रीय आवश्यकताओं अर्थात संचार प्रौद्योगिक, दूरदर्शन प्रसारण, मौसम संबंधी सेवाओं के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी को वैश्विक आयाम देना है।

भारत का पहला उपग्रह "आर्यभट्ट" 19 अप्रैल 1975 को सोवियत संघ के रॉकेट की सहायता से अंतरिक्ष में छोड़ा गया था, 7 जून 1979 को भारत का दूसरा उपग्रह भास्कर को पृथ्वी की कक्षा में स्थापित किया गया, 1980 में रोहिणी उपग्रह पहले भारत निर्मित प्रक्षेपण यान है एस.एल.वी.- 3 द्वारा कक्षा में स्थापित किया गया। वर्ष 1982 में INSAT-1A और 1983 ईस्वी में INSAT-1B का प्रक्षेपण 1984 में भारत और सोवियत संघ द्वारा संयुक्त अंतरिक्ष अभियान में राकेश शर्मा का पहला भारतीय अंतरिक्ष यात्री बनना और 1990 में INSAT-1D का सफल प्रक्षेपण किया गया था, 1997 में कल्पना चावला पहली भारतीय महिला एक मिशन स्पेशलिस्ट और प्राइमरी रोबोटिक आर्म ऑपरेटर के रूप में बाहरी अंतरिक्ष के लिए उड़ान भरी थी, 2003 में उनकी दूसरी अंतरिक्ष यात्रा में मौत हुई थी।

22 अक्टूबर 2008 में चंद्रयान -1 को प्रक्षेपित किया गया, 8 नवंबर 2008 को सफलतापूर्वक चंद्रमा की कक्षा में स्थापित किया गया 22 जुलाई 2019 में GSIV MK III द्वारा चंद्रमा पर लॉन्च किया गया था, लेकिन उत्तरण के अंतिम चरण के दौरान नियंत्रण खोने के कारण लैंडर चंद्रमा की सतह पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया।

14 जुलाई 2023 को IVM- 3 द्वारा सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र श्रीहरिकोटा से लांच किया गया मुख्य वैज्ञानिक उद्देश्य चंद्र-जल की स्थिति का मानचित्रण करना था चंद्रयान-3 23 अगस्त 2023 को शाम 6:05 पर चंद्रमा के दक्षिण मेरु पर सफलतापूर्वक उत्तर आदित्य । 1, 2 सितंबर 2023 को सूर्य की ओर भेजा गया 1.5 मिलियन किलोमीटर दूर अवस्थान करके सौर-तूफान और भौगोलिक स्थिति के बारे में अवगत कराएंगे

बुद्ध की बुद्धिमानी



श्री अनुपम बैरागी, अधिकारी सर्वेक्षक
पूर्वी क्षेत्र कार्यालय

एक समय की बात है । तथागत (गौतम बुद्ध) किसी गाँव के एक रास्ता से गुजर रहे थे । उन्हें देखकर गाँव के कुछ लोग उनके पास आए । उनकी वेशभूषा देख उनका उपहास करने लगे । तथागत ने कहा, “यदि आप लोगों की बात समाप्त हो गई हो, तो मैं यहां से जाऊं ? मुझे दूसरे स्थान पर भी पहुँचना है।” बुद्ध की यह बात सुनकर वे ग्रामीण लोग हैरान थे । उन्होंने गौतम बुद्ध से कहा कि, “हमने आपका इतना अपमान किया और आप दुःखी भी नहीं हुए।” तब बुद्ध ने उत्तर दिया, “मुझे अपमान से दुःख नहीं होता और स्वागत से सुख भी नहीं होता है । इसीलिए मैं वही करूंगा जो मैंने पिछले गाँव में किया था । “एक ग्रामीण ने तुरंत उनसे पूछा, “आपने पिछले गाँव में ऐसा क्या किया था?” तब तथागत बोले, “पिछले गाँव में कुछ लोग फल-फूल, मिठाइयां लेकर आए थे । तब मैंने उनसे कहा था कि मेरा पेट भरा हुआ है। मुझे माफ़ करो । तब मैंने उनके फल वापस लौटा दिए थे । जिस तरह से आपने मुझे अपशब्द भेंट के रूप में दिया , ठीक उसी तरह से मैं भी इन्हें आपको वापस लौटाता हूँ।

प्रेरणा – जीवन में वही बात ग्रहण करें, जो ग्रहण करने योग्य हो ।



चंद्रयान 3: भारत का महत्वाकांक्षी अंतरिक्ष मिशन



श्री प्रलय कुमार दास, सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

भारत, जिसे "अंतरिक्ष महाशक्ति" के रूप में भी जाना जाता है, ने अंतरिक्ष अनुसंधान में लगातार अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) ने कई महत्वपूर्ण मिशनों का संचालन किया है, जिनमें चंद्रयान 1 और चंद्रयान 2 शामिल हैं। 14 जुलाई 2023 को, ISRO ने चंद्रयान 3 मिशन को सफलतापूर्वक लॉन्च किया, जो चंद्रमा पर भारतीय ध्वज को फहराने के सपने को पूरा करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम था। यह मिशन चंद्रयान 2 के असफल लैंडिंग के बाद भारत के लिए एक महत्वपूर्ण पुनः प्रयास था।

चंद्रयान 3 का उद्देश्य:

चंद्रयान 3 का मुख्य उद्देश्य चंद्रमा की सतह पर विक्रम लैंडर को सफलतापूर्वक उतारना था। इस मिशन के तहत एक लैंडर और रोवर को चंद्रमा पर भेजा गया। इससे पहले, चंद्रयान 2 के लैंडर विक्रम ने चंद्रमा की सतह पर उतरने का प्रयास किया था, लेकिन तकनीकी समस्याओं के कारण वह सफल नहीं हो सका था। चंद्रयान 3 ने इस चुनौती को स्वीकार किया और सफलता प्राप्त की।

चंद्रयान 3 का उद्देश्य चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र में मौजूद पानी के अंश और खनिजों का अध्ययन करना था, क्योंकि यह क्षेत्र अब तक अपरिचित रहा है और इसमें वैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण जानकारी छिपी हो सकती है।

मिशन की विशेषताएँ:

1. *लैंडर और रोवर:*

चंद्रयान 3 में दो मुख्य भाग थे - विक्रम लैंडर और प्रज्ञान रोवर। विक्रम लैंडर का मुख्य कार्य चंद्रमा की सतह पर सुरक्षित रूप से उतरना था, जबकि प्रज्ञान रोवर चंद्रमा की सतह पर चलकर विभिन्न वैज्ञानिक प्रयोगों को अंजाम देता है।

2. *चंद्रमा का दक्षिणी ध्रुव:*

चंद्रयान 3 को विशेष रूप से चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतारा गया। यह क्षेत्र वैज्ञानिकों के लिए बहुत रुचिकर है क्योंकि यहाँ पानी के अंश होने की संभावना है, जो भविष्य में मानव मिशनों के लिए उपयोगी साबित हो सकते हैं।

3. *उन्नत तकनीकी उपकरण:*

चंद्रयान 3 में कई उन्नत तकनीकी उपकरणों का समावेश किया गया था, जैसे कि उच्च गुणवत्ता वाले कैमरे, स्पेक्ट्रोमीटर, और अन्य वैज्ञानिक उपकरण, जिनकी मदद से चंद्रमा की सतह के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त की जा सके।

चंद्रयान 3 की सफलता:

14 जुलाई 2023 को चंद्रयान 3 ने श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से श्रीलंकाई समय अनुसार 2:35 बजे लॉन्च किया। चंद्रयान 3 ने 23 अगस्त 2023 को चंद्रमा की सतह पर सफलतापूर्वक लैंडिंग की, जो भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए एक ऐतिहासिक क्षण था। यह लैंडिंग चंद्रमा की दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र में की गई, जो वैज्ञानिक दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण है। भारत ने इस सफलता के साथ अंतरिक्ष अनुसंधान में एक नई मील का पत्थर स्थापित किया।

चंद्रयान 3 के योगदान:

1. *वैज्ञानिक विकास:*

चंद्रयान 3 के द्वारा प्राप्त जानकारी से चंद्रमा की सतह के बारे में अधिक समझ विकसित होगी, जो भविष्य में अंतरिक्ष मिशनों के लिए मार्गदर्शक साबित हो सकती है।

2. *भारत का अंतरिक्ष क्षेत्र में दबदबा:*

इस सफलता के साथ भारत ने अंतरिक्ष में अपनी श्रेष्ठता को साबित किया है और दुनिया के अग्रणी देशों के साथ खड़ा हो गया है। यह भारत के लिए एक गर्व का क्षण है।

3. *अंतरराष्ट्रीय सहयोग:*

इस मिशन में ISRO ने विभिन्न अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों के साथ सहयोग किया। इससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की प्रतिष्ठा और मजबूत हुई है।

निष्कर्ष:

चंद्रयान 3 भारत के अंतरिक्ष अनुसंधान की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह न केवल भारत के लिए, बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक प्रेरणा का स्रोत बन गया है। इस मिशन ने यह सिद्ध कर दिया कि भारत विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपनी जगह बना चुका है। ISRO की इस सफलता से भविष्य में कई नई खोजों की संभावना जताई जा रही है, जो मानवता के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकती हैं।

चंद्रयान 3 भारत के अंतरिक्ष मिशनों की सफलता का प्रतीक है और यह हमारे वैज्ञानिक दृष्टिकोण और संकल्प को दर्शाता है।

उद्यान भ्रमण

श्री अभिजित राय, सहायक प्रबंधक
पश्चिमी मुद्रण वर्ग



एक समय की बात है, एक आदमी अपने दोस्त के साथ सुबह एक गांव में भ्रमण कर रहा था। उसने कई सुंदर फूलों-फलों वाला बगीचा देखा जो कंटीले तारों से घिरा हुआ था। वहां एक द्वारपाल बैठा हुआ था। वे दोनों द्वारपाल से अनुमति लेकर वहाँ घूमने लगे। कुछ दूर तक जाने पर उन्होंने देखा कि कुछ लोग आकाश से बातें करते हुए अपनी छाया पर मुहर लगा रहे थे। वे लोग हँस रहे थे और बिना किसी कारण के रो भी रहे थे। यह स्थान एक मानसिक अभयारण्य होने का एहसास दिला रहा था। वे दोनों तुरंत वहाँ से जाने के लिए द्वार के पास पहुँचे पर गेट कीपर ने उन्हें मना कर दिया। वह उनसे कहने लगा कि आप क्यों भाग रहे हैं? आपका तो इलाज चल रहा है। उसने उनको अंदर डॉक्टर के पास ले गया। उन्होंने डॉक्टर को बताया कि गेट कीपर की अनुमति से वे अंदर आए थे पर गेट कीपर अब उन्हें बाहर जाने से मना कर रहा है। डॉक्टर को यह बात सुनकर बहुत हंसी आई। उन्होंने उनसे कहा कि ड्यूटी बदलने के कारण गेट कीपर बदल गया है। अतः डॉक्टर बाबू ने वर्तमान गेट कीपर से दोनों को जाने देने के लिए कहा। रिहा होने पर द्वारपाल ने उनसे कहा कि जब भी आप किसी स्थान पर जाएँ तो सबसे पहले वहाँ अपना नाम दर्ज करें।

खिचड़ी का भोग



श्री काली प्रसाद मिश्र, सर्वेक्षण सहायक (सेवानिवृत्ति),
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

बहुत समय पहले की बात है एक बूढ़ी मां जिसका नाम था कर्माबाई वह भगवान श्री कृष्ण को अर्थात् जगन्नाथ जी या विठ्ठल जी को अपने बेटे की तरह मानती थी। उन्हें रोज फलमेवा मिष्ठान की भोग लगाती थी। एक दिन उसके मन में आया की क्यों ना जगन्नाथ जी को खिचड़ी खिलाएं और उसने खिचड़ी बनाई। जब प्रातः काल भगवान आए तो उन्होंने वात्सल्य की तरह मां की तरह उन्हें खिचड़ी खिलाई। जगन्नाथ जी ने कहा अर्थात् भगवान श्री कृष्ण ने कहा मां तुम मुझे इसी तरह प्रतिदिन खिचड़ी खिलाया करो। यह काम बरसों चलता रहा। एक दिन एक संत मां कर्माबाई के घर आए। उन्होंने देखा की कर्माबाई बिना नहाए हुए खिचड़ी बनाकर भोग लगा रही है। संत जी ने कहा मां तुम ये क्या कर रही हो। बिना नहाए हुए भोग लगाना अपराध है। कल से आप नहा धोकर तब खिचड़ी बनाएं। कर्मा बाई ने ऐसा ही किया और दूसरे दिन उसने नहा धोकर खिचड़ी बनाई। खिचड़ी बनाने में देर हो गई तब तक भगवान विठ्ठल दास जी आए। मां मुझे खिचड़ी दो, मां मुझे खिचड़ी दो। किसी प्रकार किसी तरह खिचड़ी बनाकर कर्मा बाई ने दिया। उसने कहा मां जल्दी बनाया करो मुझे मंदिर भी जाना है। उस दिन भगवान ने खिचड़ी खाई परंतु जल्दी में मुंह धोना ही भूल गए। जब वहां अर्थात् जगन्नाथ जी अपने मंदिर में पहुंचे पुरोहित ने देखा कि उनके मुंह में खिचड़ी लगी हुई है। भगवान ने पुजारी से कहा कि मैं कर्माबाई के यहां खिचड़ी खाकर आ रहा हूं। पुजारी ने कहा भगवान आप यही खिचड़ी खा लिया करें। वे बोले नहीं उनकी खिचड़ी बहुत ही अच्छी रहती है। एक दिन भगवान ने कहा - पुजारी जी मैं सोचता हूं कि जिस दिन मां कर्मा का देहांत हो जाएगा उसे दिन मुझे खिचड़ी कौन खिलाएगा पुरोहित ने कहा भगवान मैं खिलाऊंगा। भगवान कर्मा बाई के यहां प्रतिदिन जाते खिचड़ी खाते और तब मंदिर में आ जाते थे एक दिन पुजारी ने देखा कि भगवान की आंखों से अश्रु धारा बह रही है। पुजारी ने पूछा भगवान क्या बात है आज आप रो रहे हैं विठ्ठल दास ने कहा पुजारी जी आज हमारी मां कर्माबाई का स्वर्गवास हो गया। मैं सोचता हूं कल से मुझे खिचड़ी का भोग कौन देगा। पुजारी ने कहा भगवान आज से आपके भोग में खिचड़ी ही रहेगा, उसके बाद 56 प्रकार का भोग लगेगा

उसी दिन से आज तक भगवान विठ्ठल दास अर्थात् जगन्नाथ जी का भोग प्रातः काल खिचड़ी का ही लगता है उसके उपरांत ही उन्हें 56 प्रकार का भोग खिलाया जाता है। इस प्रकार मां कर्माबाई मरकर भी अमर है और रहेगी।

विज्ञान के लाभ

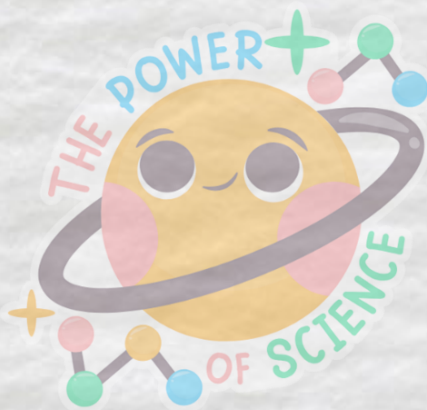


श्री सुजॉय दे, अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

विज्ञान के बिना मानव जाति अधूरा हैं। इससे मानव को असीमित शक्तियाँ प्राप्त हुई हैं। आज मनुष्य विज्ञान की सहायता से दूरियाँ तय कर सकता है। विज्ञान ने हमें कंप्यूटर, मोबाईल फोन, ट्विटर आदि प्रदान किया है।

विज्ञान ने बिजली के कई उपकरण प्रदान किए हैं। इसने मानव जीवन को सरल और आसान बना दिया है। खाद्य पदार्थ के रूप में नमक से लेकर संचार के विभिन्न साधन विज्ञान की देन हैं। किसी भी देश को विकसित देश तभी कहा जा सकता है जब उसके पास तकनीकी प्रगति हो। वास्तव में विज्ञान के समझ के बिना आज की आधुनिक दुनिया इतनी आधुनिक नहीं होती। कृषि और चिकित्सा क्षेत्र में विज्ञान का बहुत बड़ा योगदान है।

बोर्ड, चाक के उपयोग को हटाकर स्मार्ट क्लास दिया जा रहा है। हमें हमेशा तेज इंटरनेट की आवश्यकता होती है जिसका श्रेय विज्ञान को ही दिया जाएगा। आविष्कार के रूप में जैसे स्मार्ट फोन, स्मार्ट टीवी आदि अद्भुत हैं। विज्ञान के उपयोग से हम एक बेहतर जिंदगी जी रहे हैं। सुबह में उठकर ब्रश करने से लेकर रात के सोने तक विभिन्न आवश्यकताओं को विज्ञान ही परिपूर्ण करता है। आज हम लोग विज्ञान पर इतना निर्भर हो गए हैं कि हम यह सोचकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं कि हमारे पूर्वज बिना विज्ञान के जीवन व्यतीत कर पाए। विज्ञान हमें विभिन्न प्रकार से प्रतिदिन प्रभावित करता है। वर्तमान आधुनिक युग बिना विज्ञान के संचालित नहीं हो सकता।



भारतीय सर्वेक्षण विभाग में नियुक्ति का प्रथम दिन



सुश्री सुमन श्रीवास्तव, प्रवर श्रेणी लिपिक
पूर्वी क्षेत्र कार्यालय

मेरी पहली नियुक्ति भारतीय सर्वेक्षण विभाग में 12 मार्च 2018 को हुई थी। नियुक्ति का प्रथम दिन किसी भी प्रतियोगी परीक्षार्थी के लिए अहम होता है, चाहे वह नौकरी छोटी हो या बड़ी मायने नहीं रखती। भारतीय सर्वेक्षण विभाग में मेरी पहली नियुक्ति इस विभाग के मुख्यालय देहरादून में हुई थी। मेरे गृह नगर बिहार (मुंगेर) से 1500 किलोमीटर दूर स्थित किसी स्थान में नियुक्ति और घर को छोड़ने का दुःख मन को थोड़ा सा उदास और खुशी का एहसास कराने वाला था।

नियुक्ति वाले दिन मुझे IAP सेक्शन में रिपोर्ट करनेको कहा गया। उस सेक्शन के सारे कर्मचारी एवं अधिकारी काफी सहयोगी थे। वहाँ के परिवेश में मुझे एक बार में मानो ऐसा लगा कि जिस परिवार को मैं कभी पीछे छोड़ गयी थी, वह मुझे यहाँ मिल गया है। मेरे पिताजी भी साथ में गए थे, उनके साथ भी उन लोगों का व्यवहार काफी अच्छा रहा, जॉइनिंग की सारी औपचारिकताएँ ऑफिस के लोगों ने ही पूरी करवाई, मेरे सेक्शन इंचार्ज भी काफी सपोर्टिव थे, सेक्शन इंचार्ज होने के साथ ही वे एक अच्छे इन्सान भी थे। सारी औपचारिकताएँ पूरी होने के बाद मुझे मेरा कार्यस्थल और कार्य बताया गया, इतना ही नहीं बल्कि शहर में नई होने के कारण और भी तरह की मदद की पेशकश उन सबों ने मिलकर की। मुझे यह सब सुनकर और देखकर बहुत अच्छा महसूस हुआ, सभी तरह के डर और शंकाएँ वही रफू-चक्कर सी हो गई और धीरे-धीरे मैं नए माहौल के साथ ढलने लगी। इस सेक्शन में ही पहली बार मैंने बिल(Bill)को बनते देखा और मेरी अभिरुचि लेखा विभाग की तरफ बढ़ी।

उसके बाद भी लोग बदले मेरा सेक्शन भी बदला परन्तु उन लोगों का व्यवहार मेरे लिए कभी परिवर्तित नहीं हुआ। आज भी उस सेक्शन को मैं अपना ही सेक्शन कहती हूँ।



ऐतिहासिक तथ्यों के आईने में 'बिहार'



श्री सजल कुमार घोष, वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

पूर्वी क्षेत्र कार्यालय

इसे 'बिहार' कहा जाता था – जिसका अर्थ समूह में बुद्धिजीवियों का घूमना विशेष रूप से बौद्ध भिक्षुओं द्वारा बहस करना अथवा चर्चा करना। बिहार की प्रथम राजधानी 'राजगृह' रखा गया जिसे बाद में अजातशत्रु के पुत्र 'उदयिन' द्वारा पाटलिपुत्र में स्थानांतरित कर दिया गया। 400 ईसा पूर्व गुप्त काल जिसे स्वर्ण युग के रूप में माना जाता है जो लंबे समय तक पाटलिपुत्र को ग्रेटर इंडिया की पहली राजधानी के रूप में बनी रही। इस युग में घरों में तालें नहीं लगते थे। बिहार ने दुनिया को तीन धर्मों से परिचित कराया, जैन धर्म जिसे महावीर द्वारा 565 ईसा पूर्व (जन्म स्थान – वैशाली); बौद्ध धर्म जिसे भगवान बुद्ध द्वारा 542 ईसा पूर्व; सिख धर्म जिसे गुरु गोविंद सिंह द्वारा जिनका जन्म पटना में 1666 ईसा पूर्व में हुआ। उन्होंने सिक्ख धर्म के लिए केश, कंधा, कड़ा आदि को पहचान के रूप में प्रस्तुत किया। वैशाली को संसार का पहला लोकतंत्र माना जाता है, क्योंकि यहाँ 600 ईसा पूर्व प्रत्यक्ष मतदान प्रणाली थी।

बिहार ने दुनिया को नालंदा विश्वविद्यालय के रूप में पहला विश्वविद्यालय दिया। दुनिया को 'दशमलव' से अवगत करने वाला आर्यभट्ट भी बिहार के ही रहने वाले था। आयुर्वेद के जनक धन्वंतरि, संस्कृत व्याकरण के जनक महर्षि पाणिनि भी बिहार के ही पुत्र थे। योग का जन्म यही पटलीपुत्र में जन्मे 'पतंजलि' द्वारा हुआ था। 'चरक' द्वारा दिया गया स्वास्थ्य संहिता भी पटलीपुत्र से जुड़ी थी। इसने कोटिल्य (चाणक्य) को राजनीतिक, कूटनीतिज्ञ और महान अर्थशास्त्री के रूप में दिया। महान अशोक ने दुनिया को पहली बार राज्य के कल्याण की अवधारणा को दिया। इसने अशोक चक्र भी दिया, जो आजकल हमारा राष्ट्रीय प्रतीक है और भारतीय नोटों पर भी मुद्रित किया जाता है। मोहन दास जो चंपारण आंदोलन (1934) के बाद गांधी बन गए। पहली बार बंगाल के सपूत 'रवींद्रनाथ टैगोर' ने उन्हें 'महात्मा' कह कर बुलाया। इसने कई गणमान्य व्यक्ति/क्रांतिकारी दिए जैसे बिरसा मुण्डा, बाबू कुंवर सिंह, खुदीराम बोस (मुजफ्फरपुर) आदि। भारत के प्रथम राष्ट्रपति 'डॉ राजेन्द्र प्रसाद' भी इसी धरती से आते थे।

बिहार

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

धरती के पत्तों को छूते,
सर्वेक्षण का काम करते
भारतीय सर्वेक्षण के सिपाही
ज्ञान की मशाल जलाते चलते ।

नदियों की धाराओं से लेकर
पहाड़ों की ऊँचाइयों तक
गुनगुनाते सर्वेयर
धरती के राज उजागर करते ।

तारों से धरती तक
सभी सीमाएँ देखते हैं,
इस विभाग के नायक
गौरव से अपना कर्तव्य निभाते हैं ।

हर कदम पर है मेहनत
हर सर्वे में है नई बात
इस विभाग की महिमा
सर्वदा रहेगी साथ ।

सर्वेक्षण का ये यंत्र
विकास की राह को दिखाता है,
भारतीय सर्वेक्षण विभाग
हम सबों को एक साथ जोड़ता है ।



सुश्री सुमन श्रीवास्तव, अवर श्रेणी लिपिक
पूर्वी क्षेत्र कार्यालय

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

सुश्री पूनम कुमारी, एमटीएस
पूर्वी क्षेत्र कार्यालय



जिंदगी

जब तक चलेगी जिंदगी की सांसे
कहीं प्यार कहीं टकराव मिलेगा !!
कहीं बनेंगे संबंध अंतर्मन से तो
कहीं आत्मीयता का अभाव मिलेगा
कहीं मिलेगी जिंदगी में प्रशंसा तो
कहीं नाराजगियों का बहाव मिलेगा
कहीं मिलेगी सच्चे मन से दुआ तो
कहीं भावनाओं में दुर्भाव मिलेगा !!
कहीं बनेंगे पराए रिश्ते भी अपने तो
कहीं अपनों से ही खिंचाव मिलेगा !!
कहीं होगी खुशामदे चेहरे पर तो
कहीं पीठ पे बुराई का घाव मिलेगा !!
तू चलाचल रही अपने कर्मपथ पे
जैसा तेरा भाव वैसा प्रभाव मिलेगा !!
रख स्वभाव में शुद्धता का स्पर्श तू
अवश्य जिंदगी का पड़ाव मिलेगा !!

कलम या कि तलवार

दो में से क्या तुम्हें चाहिए कलम या कि तलवार
मन में ऊँचे भाव कि तन में शक्ति विजय अपार

अंध कक्ष में बैठ रचोगे ऊँचे मीठे गान
या तलवार पकड़ जीतोगे बाहर का मैदान

कलम देश की बड़ी शक्ति है भाव जगाने वाली,
दिल की नहीं दिमागों में भी आग लगाने वाली

पैदा करती कलम विचारों के जलते अंगारे,
और प्रज्वलित प्राण देश क्या कभी मरेगा मारे
एक भेद है और वहां निर्भय होते नर -नारी,
कलम उगलती आग, जहाँ अक्षर बनते चिंगारी

जहाँ मनुष्यों के भीतर हरदम जलते हैं शोले,
बादल में बिजली होती, होते दिमाग में गोले

जहाँ पालते लोग लहू में हालाहल की धार,
क्या चिंता यदि वहाँ हाथ में नहीं हुई तलवार

धनतेरस

श्री शशांक साहा, कार्यालय अधीक्षक
पूर्वी क्षेत्र कार्यालय



यह दिन भगवान धन्वन्तरि की कृपा प्राप्त करने के लिए बेहद शुभ माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन समुद्र मंथन के दौरान भगवान धन्वन्तरि समुद्र से अवतरित हुए थे। इसी वजह से धनतेरस का त्योहार मनाया जाता है। धनतेरस या धनत्रयोदशी का त्योहार कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि के रूप में मनाया जाता है। यह दीपावली जैसे त्योहार को मनाने का सबसे शुभ और प्रथम दिन है। धनतेरस के दिन मां लक्ष्मी के साथ-साथ भगवान कुबेर की पूजा अर्चना की जाती है। इसके अलावा इस दिन सोना-चांदी के अलवा वाहन, वर्तन, वस्त्र आदि की खरीदारी करना शुभ माना जाता है। यह मान्यता है, कि इस दिन कुछ शुभ चीजों को खरीद कर घर लाने से मां लक्ष्मी और धन के देवता कुबेर अत्यधिक प्रसन्न होते हैं। धन्वन्तरि जी की नाम भले ही धन से आरंभ होता है, किन्तु वास्तव में वह धन नहीं, स्वास्थ्य-दाता के रूप में हैं। इन्हीं को भारत के सनातन उपचार एवं स्वास्थ्य पद्धति आयुर्वेद के जनक माने जाते हैं। भारतीय संस्कृति में स्वास्थ्य को ही सबसे बड़ा धन माना गया है। इसी दिन को राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। धनतेरस को धन के साथ जोड़ना अनुचित हैं। हम इस विषय पर अज्ञान है, जिसके फलस्वरूप व्यवसायी इसका लाभ उठा रहे हैं। अतः धनतेरस सोना-चांदी खरीदने का दिन नहीं है अपितु आयुर्वेद औषधियाँ खरीदने का दिन हैं।

बेटियां

घर की शान होती है बेटियां
अपने पिता की जान होती है बेटियां
दादा-दादी की खिलौना होती है बेटियां
घर आंगन को महकाती है बेटियां
छोटी-छोटी शरारतों से खुश कर जाती है बेटियां
परिवार में एक नहीं दो घरों का मान बढ़ाती है बेटियां
छोटे बड़े काम में सलाहकार बनती है बेटियां।
बेटियां वह रौशनी है जो जहां रौशन कर जाती है बेटियां।
जाने बेटियों को अपनाने से क्यों डरते हैं।
बेटियां वह फूल है जो जिस घर में हो, उस घर का सूरत बदल देती है बेटियां।
जितना कहा जाए उतनी कम है बातें, नसीब से मिलती है घर परिवार में बेटियां।
कहने को तो बहुत कुछ है हर परिवार में, पर उस घर से पूछो जहां नहीं होती बेटियां।



श्रीमती सरिता कुमारी राम, एमटीएस
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

स्वास्थ्य का महत्व एक स्वस्थ जीवन के लिए



श्री दुर्गादास चटर्जी, कार्यालय अधीक्षक
पूर्वी क्षेत्र कार्यालय

स्वस्थ जीवन जीने के लिए स्वास्थ्य बहुत महत्वपूर्ण है। स्वास्थ्य हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, इसके बिना हमारा जीवन अर्थहीन है। एक स्वस्थ शरीर और मन हमें जीवन के सभी लक्ष्यों को पूरा करने में मदद करता है। स्वास्थ्य के बिना हमारा जीवन दर्द और बीमारियों से भर जाता है, जिससे हमारा जीवन उदास हो जाता है।

स्वास्थ्य का महत्व हमारे जीवन में कई मायनों में दिखाई देता है। अपने शरीर को स्वस्थ रखने से हम अपने दैनिक कार्यों को आसानी से पूरा कर सकते हैं। स्वास्थ्य हमारे मन को भी मजबूत करता है, जो हमें मानसिक रूप से स्थिर बनाता है और हमें जीवन में चुनौतियों का सामना करने में मदद करता है। अपने स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए हमें अपनी जीवन शैली में कुछ बदलाव करने की आवश्यकता है। हमें पौष्टिक भोजन खाना चाहिए। नियमित रूप से व्यायाम करना चाहिए। हमें पर्याप्त मात्रा में नींद लेनी चाहिए, ताकि हमारा शरीर और मन आराम से आराम कर सके।

स्वास्थ्य का महत्व हमारे जीवन में कई मायनों में दिखाई देता है। हम एक स्वस्थ जीवन जीते हैं, जो हमें खुशी और संतुष्टि देता है। हम अपना जीवन पूरी तरह से जी सकते हैं और अपने परिवार और दोस्तों के साथ अधिक समय बिता सकते हैं।

यदि हम स्वस्थ जीवन जीते हैं तो हमें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलती है। हम अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं और अपने सपनों को पूरा कर सकते हैं। हमारा जीवन विफल हो सकता है, इसलिए हमें अपने स्वास्थ्य के महत्व को समझना चाहिए और इसके लिए काम करना चाहिए। अंत में, स्वस्थ जीवन जीने के लिए स्वास्थ्य बहुत महत्वपूर्ण है। हमें अपनी जीवन शैली बदलनी चाहिए और अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखना चाहिए। हमें स्वस्थ रहना चाहिए क्योंकि यह हमें खुशी और संतुष्टि देता है।

लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका



श्री शशांक साहा, कार्यालय अधीक्षक

पूर्वी क्षेत्र कार्यालय

लोकतंत्र तिरंगे की भाँति है, जिसके तीन रंग हैं-विधानपालिका, कार्यपालिका और एक न्यायपालिका किन्तु तिरंगा तब तक पूरा नहीं होता, जब तक कि उसमें अशोकचक्र न हो। यह अशोकचक्र है – मीडिया जो लोकतंत्र रूपी रथ का सारथी है और संचालक भी।

लोकतंत्र लोक-इच्छा से चलता है, लोक-इच्छा बढ़ावा देने का काम-मीडिया करती है। मीडिया का अर्थ है – समाचार-पत्र, रेडियो, पत्रिकाएँ, दूरदर्शन तथा इंटरनेट पर चल रहे स्वतंत्र चैनल। ये चैनल दिन-रात मतदाताओं को जागरुक करती हैं। विभिन्न विषयों पर पक्ष-विपक्ष दिखाना, लाभ-हानियाँ बताना, खूब बहस होना, सार्थक-निरर्थक चर्चाएँ होना जैसे एक प्रकार से समुद्र-मंथन के होने जैसा प्रतीत होता है जिसके फलस्वरूप उसमें से अमृत भी निकलता है और विष भी फिर जनता पर छोड़ दिया जाता है कि वह अपने विवेक से निर्णय करे – कौन सही है और कौन गलत ? कौन शुभ है और कौन अशुभ? कई बार तो मीडिया राक्षस जैसा प्रतीत होता है जो दिन-रात चीख-चीखकर हमारी नींद खराब कर देता है पर यह हमें सावधान भी करता है। यह तो पहरेवार है जो रात को सोते समय 'जगते रहो' की आवाज लगाता है जिससे नींद में खलल पड़ती है किन्तु यह हमें संकटों से भी बचाकर रखता है। अतः मीडिया लोकतंत्र का रक्षक, प्रेरक और पालक है।

मीडिया की उपेक्षा नहीं की जा सकती। यदि सभी मीडिया मिलकर एक स्वर में दिन को रात और रात को दिन कहने लगे तो भ्रम पैदा हो सकता है। सरकार चाहे जिसकी भी हो वह अपने तरह से मीडिया की नाक में नकेल कसती है। सच तो यह है कि लोकतंत्र में अनेक विचार धाराएं होती हैं जिनमें प्रकट टकराव होता है। यह तो होना स्वाभाविक और आवश्यक भी है पर उनमें आपसी शत्रुता, मलिनता तथा द्वेष नहीं होना चाहिए। उनका उद्देश्य दूसरे को नीचा दिखाना नहीं, अपितु सत्य को दूसरे पक्ष से दर्शन कराना होना चाहिए। अतः इस प्रकार से एक सच्चा लोकतंत्र विकसित होगा।

महाकाल

अनभिज्ञ में मर्मज्ञ है,
धरा पर है सर्वज्ञ है,
स्वछंद विचरता है सबमें,
वैज्ञानिक है गणितज्ञ है,
मानव भी उसका निर्मित है,
वह छुपा हुआ प्रदर्शित है,
वह ढाल है वह काल भी,
वह सूक्ष्म है विकराल भी,
नाम है उसका महादेव,
और महाकाल भी ।



श्री आशुतोष रावत, एम. टी. एस.
ओडिशा एवं छत्तीसगढ़ जी. डी. (छत्तीसगढ़ विंग)

लेकिन बीज किसने बोया



श्री आर. के. पाण्डेय, कार्यालय अधीक्षक
ओडिशा एवं छत्तीसगढ़ जी. डी. (छत्तीसगढ़ विंग)

एक सेठ जी ने अपने मैनेजर को इतना डाटा कि मैनेजर को बहुत गुस्सा आया पर सेठ जी कुछ बोल न सका, वह अपना गुस्सा किस पर निकालते वो गया सीधा अपनी कंपनी स्टाफ के पास और सारा गुस्सा कर्मचारियों पर निकल दिया, अब कर्मचारी किस पर अपना गुस्सा निकालते । तो जाते जाते अपने गेट के वॉचमैन पर उतारते गये।

अब वॉचमैन किस पर निकला अपना गुस्सा । तो वह घर गया और अपनी बीवी को डाँटने लगा बिना किसी बात पर। वो भी उठी और अपने बच्चे की पीठ पर 2 धमाक-धमाक लगा दिया – सारा दिन T. V. देखता रहता है, काम कुछ करता नहीं है । अब बच्चा घर से गुस्से से निकला और सड़क पर सो रहे कुत्ते को पत्थर दे मारा, कुत्ता हड़बड़ाकर भागा और सोचने लगा कि इसका मैंने क्या बिगाड़ा है । और गुस्से में उस कुत्ते ने एक आदमी को काट खाया – और कुत्ते ने जिसे काटा वह आदमी कौन था । वही सेठ जी थे जिन्होंने अपने मैनेजर को डाटा था सेठ जी जब तक जिए तब तक यही सोचते रहे कि उस कुत्ते ने आखिर मुझे क्यों काटा । आया कुछ समझ में जाने अनजाने में कितने लोग हमारे व्यवहार से त्रस्त होते हैं। परेशान होते हैं और कितनों का तो नुकसान भी होता है । क्योंकि हम तो अपनी मस्ती में ही मस्त हैं ।

मोबाइल फोन: वरदान या अभिशाप



श्री राजेश सिंह, प्रवर श्रेणी लिपिक

उत्तर प्रदेश भू-स्थानिक निदेशालय

मोबाइल फोन, वर्तमान समय की सबसे बड़ी जरूरत है। यदि हम तीन या चार दशक पूर्व की बात करें जब सुदूर बसे हुए किसी मित्र या रिश्तेदार का हालचाल पूछने के लिए चिट्ठियों का सहारा लिया जाता था, जिसमें दस से पन्द्रह दिन का समय लग जाता था। टेलीग्राम करने के लिए लाइनें लगती थीं, जिसमें कई घंटे या कभी-कभी पूरा दिन लग जाता था। फिर कुछ समयांतराल के बाद लैंडलाइन फोन आया, जिसके द्वारा देश-विदेश में आसानी से बात होने लगी। फिर कुछ समयांतराल के पश्चात विज्ञान ने और तरक्की की और वायरलेस फोन का निर्माण हुआ, जिसे मोबाइल कहा गया। पहला मोबाइल फोन 03 अप्रैल 1973 को मोटोरोला कम्पनी के मार्टिन कूपर द्वारा अमेरिका के न्यूयार्क शहर में बनाया गया। भारत में पहला मोबाइल फोन 21 जुलाई 1995 को पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री श्री ज्योति बासु द्वारा प्रयोग किया गया था, जो नोकिया कम्पनी का था।

मोबाइल फोन, मानव समाज के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। यह मनोरंजन का सबसे बड़ा साधन है। आज स्मार्टफोन आ रहे हैं, जोकि मल्टीटास्किंग हैं इसमें अलार्म घड़ी, कैलकुलेटर, कैमरा, एफएम, म्यूजिक प्लेयर, मूवी प्लेयर, वीडियो रिकार्डर, एल्बम इत्यादि विकल्प उपलब्ध होते हैं। मोबाइल को इन्सान 24X7X365 दिन अपने साथ रखता है। इससे देश-विदेश में क्षणभर में बात हो जाती है मोबाइल फोन तकनीकी का नायाब नमूना है। यह विज्ञान का एक अद्भुत चमत्कार है। मोबाइल से देश-दुनिया के बारे में जान सकते हैं। सोशल मीडिया के द्वारा दूर बैठे दोस्त, रिश्तेदार से जुड़ सकते हैं। मोबाइल में जीपीएस नेविगेशन होने से रास्ता पता कर सकते हैं, यह हमारा मार्गदर्शक भी होता है। इसमें एक-दूसरे को देखकर बात कर सकते हैं तथा वीडियो भी भेज सकते हैं। मोबाइल हमारा ज्ञानवर्धक भी होता है। पहले ज्ञान किसी के द्वारा या किताब से मिलता था लेकिन अब हर कोई तुरंत गूगल से जानकारी लेता है। इंटरनेट से ज्ञान, समाचार इत्यादि सबकुछ जान सकते हैं।

“मोबाइल वरदान है, मोबाइल अभिशाप, अकथ ज्ञान भंडार यह, ‘शुभम’ शीत अरु ताप..”

आज, मोबाइल फोन से ऑनलाइन कक्षाएं भी चलाई जाती हैं। कोविड -19 महामारी के दौरान, मोबाइल फोन बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ था। आज यह आम धारणा है कि यदि मोबाइल फोन है, तो सबकुछ है। यह सुबह आपको अलार्म से जगाता है। इसमें रिमाइंडर के तौर पर जरूरी बातें सेव कर

सकते हैं। यह एक डायरी है, जिसमें नंबर सेव हो जाते हैं। घर में सीसीटीवी लगाकर उसका फुटेज कहीं से भी देख सकते हैं। अपना बैंक अकाउंट भी देख सकते हैं तथा ऑनलाइन लेनदेन भी कर सकते हैं।

यदि मोबाइल फोन की बुराइयों पर ध्यान दें, तो यह विद्यार्थी जीवन में सर्वाधिक दुष्प्रभाव डालता है क्योंकि उनका सारा ध्यान सर्वदा इसी में लगा रहता है। मोबाइल फोन में कई अवांछित चीजें भी होती हैं, जिन्हें बच्चों को नहीं देखना चाहिए। आजकल छोटे-छोटे बच्चे दिनभर इसमें गेम्स व वीडियो चलाते हैं, जिसकी गंदी आदत लगने से पढ़ाई व दूसरे कार्यों में ध्यान नहीं लगा पाते हैं। बच्चे बाहर जाकर खेलने के बजाय मोबाइल में खेलना पसन्द करते हैं, जिससे उनकी सेहत में नुकसान होता है, उनकी आखें खराब होती हैं। मोबाइल से निकलने वाली विद्युतचुम्बकीय किरणें शरीर पर घातक प्रभाव डालती हैं, जिससे बड़ी बीमारियों के खतरे बढ़ रहे हैं। मोबाइल फोन कई बार जानलेवा भी साबित होता है। मोबाइल फोन की बैटरी फटने से कई लोगों के नुकसान की खबरें समाचार पत्रों में आती रहती हैं। मोबाइल फोन की लत एक गंदी लत है जिसे नोमोफोबिया नाम दिया गया है। आज, समय की मांग है, कि नशामुक्ति केंद्र की तरह मोबाइल मुक्ति केंद्र भी होना चाहिए। दिनभर मोबाइल फोन में व्यस्त रहने के कारण बच्चे ढंग से पढ़ाई नहीं करते, लोग अपना कामकाज छोड़कर मोबाइल की दुनिया में लगे रहते हैं, जिससे काम का समय बर्बाद होता है। लोग मोबाइल फोन को देर रात तक चलाते हैं, जिससे नींद पूरी न होने से शारीरिक व्याधियाँ उत्पन्न होती हैं।

“कर उपयोग मोबाइल का, जितना हो अनिवार्य, अति इसकी है रुग्णता, बाधित करती कार्य..”

लोग परिवार के साथ बैठकर भी मोबाइल में व्यस्त रहते हैं। मोबाइल फोन बाहरी दुनिया से तो जोड़ता है पर आसपास की दुनिया से तथा अपनों से दूर करता जा रहा है। लोग वाहन चलाते समय भी इसका उपयोग करते हैं, जिससे दुर्घटनाएँ होती हैं।

“लीड लगी थी कान में, मन भी था मदहोश उड़ा गयी गाड़ी उसे, मिटा जिन्दगी, जोश..”

मोबाइल फोन की आदत को कोई भी, आज छोड़ नहीं पा रहा है। दिनोदिन जनसंख्या वृद्धि के साथ इसके उपभोक्ता भी बढ़ रहे हैं, जिससे मोबाइल टावर कम्पनियाँ भी बढ़ रही हैं। मोबाइल टावर से निकलने वाला विकिरण मानव के साथ-साथ जीव-जन्तुओं तथा पेंड-पौधों को भी दुष्प्रभावित करता है। मोबाइल टावर, उपभोक्ता के मोबाइल फोन से विद्युतचुम्बकीय किरणों द्वारा जुड़ते हैं, जिनकी अधिकता से इसके दुष्परिणाम सामने आते हैं। जैसे- मानव मस्तिष्क का सुस्त होना, सरदर्द, ट्यूमर, माइग्रेन की समस्या, भूलने की बीमारी, अनिद्रा, तनाव, धडकन बढ़ना, पाचन की समस्या, बहरापन, बांझपन, आँखों में पानी आना, चिड़चिड़ापन, कैंसर सेल्स का बनना, गर्भवती महिलाओं का भ्रूण कमजोर हो जाता है तथा गर्भपात हो जाता है। मोबाइल टावर के विकिरण के कारण पक्षी शहरों से दूर हो गये क्योंकि टावर के विकिरण के संपर्क में आने से उनकी मौत हो जाती है। मधु-मक्खियों में प्रजनन की समस्या आ रही है। मोबाइल टावर एंटीना के सीधे सम्पर्क में आने से, पेड़ों के ऊपरी हिस्से सूख रहे हैं तथा उनका विकास अवरुद्ध हो गया है।

कहा जाता है कि “Technology is a good servant but bad master”। तकनीक का उपयोग आवश्यकता पूर्ति के लिए किया जाना चाहिए, न कि आदी होने के लिए; क्योंकि आवश्यकता अविष्कार की जननी होती है। मोबाइल टावर के अधिक विकिरण की शिकायत हेतु दूरसंचार विभाग एवं संचार मंत्रालय ने “तरंग” पोर्टल लांच किया है तथा भारतीय दूरसंचार नियामक एवं प्राधिकरण, मोबाइल टावर के विकिरण को नियमित आधार पर देखता रहता है। हमें मोबाइल फोन को एक उपयोगी उपकरण के रूप में प्रयोग में लेना चाहिए न कि आदी होने के लिए।

“मोबाइल फोन का अविष्कार, दुनियाँ का सबसे बड़ा चमत्कार,
जब से हाथ लगा इन्सान के, इन्सान हो गया बेकार..
आज बिन मोबाइल फोन के, इन्सान रह नहीं सकता,
इसके बिन कुछ पल भी बिता नहीं सकता..
अच्छाइयाँ कूट-कूट के है, भरीं इसमें .
पर बुराइयों की भी, कमी नहीं इसमें ..
इसका सदुपयोग कर जिन्दगी संवर भी सकती है.
किया दुरुपयोग जो इसका, तो बर्बादी मुफ्त मिलती है..”

महादानी



श्री काली प्रसाद मिश्र, सर्वेक्षण सहायक (सेवानिवृत्ति),
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

एक समय की बात है भगवान कृष्ण और अर्जुन दोनों घूम रहे थे। अचानक अर्जुन ने कहा भगवान आप मुझे यह बताने का कष्ट करें कि लोग कर्ण को महादानी क्यों कहते हैं जबकि दान तो मैं भी करता हूँ। भगवान श्री कृष्ण ने सोचा अर्जुन के भीतर अहंकार बैठ गया है। उन्होंने कहा जो जैसा रहेगा उसे वैसा ही कहा जाएगा। वो महादानी है इसलिए उसे महादानी कहते हैं। तुम दान करते हो परंतु तुम्हारे अंदर दानी बनने की ललक है इसलिए तुम दानवीर नहीं हो। अर्जुन ने कहा भगवान ऐसी बात नहीं है दान मैं भी करता हूँ उससे कहीं ज्यादा दान करता हूँ। आपतो जानते ही हैं परंतु लोग मुझे दानी नहीं कहते। भगवान की माया से दो पहाड़ियों का उद्गम हुआ जो की स्वर्ण निर्मित था भगवान ने कहा -अर्जुन वो जो पहाड़ी दिखाई दे रही है चलो वहां से घूम कर आते हैं। अर्जुन और भगवान चल कर वहां पहुंचे तो भगवान ने कहा- अर्जुन जो पहाड़ी देख रहे हो वह स्वर्ण निर्मित है। जाओ गांव वालों में स्वर्ण बांट दो और दिखा दो तुम भी दानी हो। अर्जुन गया, गांव वालों को कहा कि आप लोग आइए मैं आप सबों को स्वर्ण दान में

दूंगा। अर्जुन सोना काट काट कर गांव वालों को देता रहा। यह काम दो से तीन दिन तक चला। अर्जुन सोना काटकर देता रहा और अंत में पस्त हो गया। फिर अर्जुन ने कहा - भगवान अब मेरे में इतनी सामर्थ्य नहीं है कि मैं सोने काटकर इन लोगों को दे सकूँ। भगवान ने उन्हें कहा ठीक है चले आओ। अब भगवान ने कर्ण को बुलाया, कर्ण को भगवान श्री कृष्ण ने कहा- कर्ण, यह जो स्वर्ण निर्मित पहाड़ी देख रहे हो इस गांव वालों में बंटवा दो। कर्ण बिना किसी विरोध के बिना किसी बातचीत के गांव में गया और कहा भगवान आप लोग आएं और ये स्वर्ण निर्मित पहाड़ आपको दिख रहा है उससे जितना सोना जिसे इच्छा हो ले लीजिए। फिर वो भगवान के पास आया और दंडवत कर कहा भगवान मैं गांव वालों को सूचना दे दी है। जो जितना सोना ले जा सके ले जा सकता है। भगवान ने कहा ठीक है कर्ण तुम जाओ भगवान श्रीकृष्ण ने कहा अर्जुन देखा तुमने दो-तीन दिन लगातार सोना काटकर कर सभी को देते रहे परंतु कर्ण गांव वालों को कहा जो जितनी सोना जिसे आवश्यकता हो ले जा सकता है। किसी प्रकार की बंदिश नहीं है अर्जुन ने कहा भगवान यह विचार मेरे मन में क्यों नहीं आई कि मैं भी उन लोगों को कह दूँ कि जो पहाड़ से जो सोना ले जा सकते हो ले जाओ भगवान श्री कृष्ण ने कहा अर्जुन तुम्हारे और करण के बीच में यही फर्क है तुम्हें दानी बनने की ललक है परंतु उसे दानी बनने की ललक नहीं है वह नहीं चाहता है कि लोग मुझे दानवीर कहें और जो तुम चाहते हो कि लोग मुझे दानवीर कहे। इस प्रकार भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन के भीतर जो लालसा जो लालच की उत्पत्ति हुई थी वह समाप्त हो गई।

प्रतिभा के धनी - सर आशुतोष मुखर्जी

श्री स्वपन कुमार सरकार, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



सर आशुतोष मुखर्जी एक भारतीय शिक्षक थे जिन्होंने 1906 से 1914 और 1921 से 1923 तक कोलकाता विश्वविद्यालय के उपकुलपति के रूप में सेवा की। वह अपनी मृत्यु तक विश्वविद्यालय के विभिन्न मामलों का ध्यान रख रहे थे। उन्होंने डॉ. सी.वी. रमन और डॉ. एस. राधाकृष्णन की प्रतिभाओं को खोजा।

उनका जन्म 29 जून 1864 को बोंवबाजार, कोलकाता (आज के कोलकाता) में एक हिंदू ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनकी माता का नाम जगततारिणी देवी और पिता का नाम डॉ. गंगा प्रसाद मुखोपाध्याय था। उनका पैतृक नगर जिराट, हूगली ज़िले, पश्चिम बंगाल में था। उनने अपने कानून की परीक्षा उत्तीर्ण की और सफल कानून प्रथा का निर्माण किया। उनने LL.D. की डिग्री प्राप्त की और विश्वविद्यालय में कानून पर व्याख्यान दिए। वे कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश बने, और कुछ

वर्षों तक मुख्य न्यायाधीश के रूप में कार्य किया। उन्होंने विश्वविद्यालय में आईन(Law) का विश्वविद्यालय कॉलेज स्थापित किया।

नवंबर 1879 में, पंद्रह वर्ष की आयु में, मुखर्जी ने कलकत्ता विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षा पास की, जिसमें उन्होंने दूसरा स्थान प्राप्त किया और प्रथम श्रेणी की छात्रवृत्ति प्राप्त की। 1880 में, उन्होंने कोलकाता के प्रेसिडेंसी कॉलेज (अब प्रेसिडेंसी विश्वविद्यालय) में दाखिला लिया, जहां उनकी मुलाकात पी.सी. राय, महेन्द्रनाथ राय और नरेंद्रनाथ दत्त से हुई, जो बाद में स्वामी विवेकानंद के नाम से प्रसिद्ध हुए। 1883 में, मुखर्जी ने कलकत्ता विश्वविद्यालय में बीए की परीक्षा में शीर्ष स्थान प्राप्त किया और गणित में स्नातकोत्तर डिग्री पूरी की। उन्हें गणित और भौतिकी में प्रतिष्ठित प्रेमचंद रायचंद फेलोशिप से सम्मानित किया गया।

वह यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका में विभिन्न विद्वानों के संगठनों का सदस्य या साथी बन गए। वह 21 वर्ष की आयु में रॉयल एस्ट्रोनॉमिकल सोसाइटी के साथी बने, और 22 वर्ष की आयु में रॉयल सोसाइटी ऑफ एडिनबर्ग (FRSE) के साथी बने। 1888 तक, वह हाल ही में स्थापित भारतीय विज्ञान संवर्धन संघ (IACS) में गणित के व्याख्याता थे।

उनने भारतीय विज्ञान कांग्रेस (1914) के उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष थे। उन्होंने बांग्ला तकनीकी संस्थान (1906) की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो बाद में जादवपुर विश्वविद्यालय बन गया। उन्होंने कलकत्ता गणितीय समाज (1908) की स्थापना भी की। आशुतोष कॉलेज भी 1916 में उनके नेतृत्व में स्थापित किया गया।

उसे अक्सर 'बंगाल का बाघ' कहा जाता है क्योंकि उसकी आत्म-सम्मान, साहस और अकादमिक ईमानदारी बहुत अधिक है। ऐतिहासिक विष्णु चंद ने कहा है कि 'विक्रमादित्य' उपाधि भी Sir Ashutosh Mukherjee को प्राप्त है।

जहाँ अकादमिक जीवन ने उनकी जिंदगी पर राज किया, वहीं सर आशुतोष की जिंदगी में ऐसी कई घटनाएँ हैं जो उनकी तीव्र बुद्धि और आकर्षण की ओर इशारा करती हैं। जबकि भारत गांधीजी की दक्षिण अफ्रीका में एक ट्रेन में हुई अपमानजनक घटना से परिचित था, सर आशुतोष के बारे में भी एक समान कथा है, जो एक अवांछित प्रथम श्रेणी के ट्रेन यात्री माने जाते थे। उनके सहयात्री, जो एक सफेद प्लांटेशन के मालिक थे, ने आशुतोष की चप्पलें फेंक दीं जब वह सो रहे थे, क्योंकि उन्हें एक स्थानीय के साथ यात्रा करना अप्रिय लगा। आशुतोष ने अपनी जैकेट को हटाकर पलटवार किया जब वह सोए हुए थे। जब उनकी जैकेट के बारे में पूछा गया, तो आशुतोष ने कहा, "आपकी कोट मेरी चप्पलों को लाने गई है"। उनकी व्यंग्यात्मक हास्यबुद्धि ने उस व्यक्ति की बुद्धिमत्ता को छिपा दिया।

सर अशुतोष अपने रिटायरमेंट के बाद कलकत्ता हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश के रूप में अपनी निजी कानून प्रैक्टिस में वापस चले गए। जहां एक तरफ, वह देश के सबसे प्रतिभाशाली स्वतंत्रता सेनानियों और क्रांतिकारियों के साथ चलने में विश्वास रखते थे, वहीं दूसरी तरफ, वह ब्रिटिश शासन और उनकी प्रशासनिक मशीनरी के साथ भी समान रूप से सहज थे।

सरकारी कार्यालयों में AI का उपयोग



श्री अनिरुद्ध बासु, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

तेज़ी से विकसित होते डिजिटल युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence – AI) एक महत्वपूर्ण उपकरण बन चुकी है, जो कार्यक्षमता, पारदर्शिता और उत्पादकता बढ़ाने में सहायक है। इसी क्रम में ChatGPT जैसे भाषा मॉडल ने सरकारी कार्यप्रणाली को अधिक सशक्त बनाने की दिशा में नई संभावनाएँ खोली हैं। सरकारी कार्यालयों में जहाँ प्रतिदिन भारी मात्रा में पत्राचार, अभिलेखन और नियमों के अनुरूप कार्य करना पड़ता है, वहाँ ChatGPT एक प्रभावी सहायक सिद्ध हो सकता है।

1. कार्यालयी कार्यकुशलता में वृद्धि

सरकारी अधिकारियों को प्रतिदिन विभिन्न प्रकार के नोट, आदेश, परिपत्र, पत्र और प्रतिवेदन तैयार करने होते हैं। AI और ChatGPT की सहायता से:

- शुद्ध एवं व्यवस्थित कार्यालयी आदेश और नोट तैयार किए जा सकते हैं।
- लम्बे पत्रों या रिपोर्टों का संक्षिप्त सारांश त्वरित निर्णय हेतु प्राप्त किया जा सकता है।
- बार-बार उपयोग में आने वाले आदेशों, जैसे गमनागमन आदेश, स्वीकृति आदेश, या कार्यालय ज्ञापन के लिए प्रारूप तैयार किए जा सकते हैं।

इससे लिपिकीय भार कम होता है और अधिकारी नीतिगत एवं निर्णयात्मक कार्यों पर अधिक ध्यान दे सकते हैं।

2. नियमों पर आधारित मार्गदर्शन

सरकारी कार्यप्रणाली विभिन्न नियमों – जैसे केंद्रीय सिविल सेवा (CCS) नियम, ट्रेजरी नियम, रसीद एवं भुगतान नियम – पर आधारित होती है। AI और ChatGPT इन नियमों के संदर्भ में:

- त्वरित परामर्श प्रदान कर सकता है,
- नियमों की व्याख्या कर सकता है,
- एवं उनके अनुरूप प्रारूप सुझा सकता है।

इससे प्रक्रियागत त्रुटियों में कमी आती है और कार्य में एकरूपता बनी रहती है।

3. विधिक एवं न्यायालय संबंधी कार्यों में सहयोग

सरकारी कार्यालयों को प्रायः न्यायालयीन मामलों से जुड़े उत्तर, हलफनामे एवं टिप्पणियाँ तैयार करनी पड़ती हैं। AI और ChatGPT इस क्षेत्र में सहायक है:

- प्रतिनिधित्वों या शिकायतों के उत्तर का मसौदा तैयार करने में।
- पूर्व के निर्णयों के अनुरूप प्रतिवेदन बनाने में।
- विधिक पत्राचार को सुव्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करने में।

इससे केस की तैयारी में गति आती है और विधिक संचार अधिक स्पष्ट एवं सटीक हो जाता है।

4. जन-अभियोग निवारण में सुधार

सरकारी कार्य का एक बड़ा भाग जन-अभियोगों का निवारण करना है। AI और ChatGPT की सहायता से:

- शिष्ट, नियमसम्मत और सुव्यवस्थित उत्तर तैयार किए जा सकते हैं।
- शिकायतों का विश्लेषण कर प्रमुख प्रवृत्तियों को चिन्हित किया जा सकता है।

इससे नागरिकों को पारदर्शी और त्वरित सेवा प्राप्त होती है।

5. प्रशिक्षण एवं ज्ञान प्रबंधन

अक्सर सरकारी कार्यालयों में स्टाफ की कमी या कौशल का अंतर देखने को मिलता है। AI और ChatGPT:

- नए कर्मचारियों को कार्यालयी प्रारूप एवं प्रक्रिया समझाने में एक डिजिटल सहायक की भूमिका निभा सकता है।
- त्वरित संदर्भ सामग्री, दिशा-निर्देश और प्रश्नोत्तर तैयार कर सकता है।

इससे संस्थागत ज्ञान का संरक्षण होता है और कार्यकुशलता बढ़ती है।

6. सीमाएँ एवं सावधानियाँ

यद्यपि ChatGPT अत्यंत उपयोगी है, परंतु सरकारी कार्यों में कुछ सावधानियाँ आवश्यक हैं:

- गोपनीयता: संवेदनशील जानकारी को बिना सुरक्षा प्रबंधों के साझा नहीं करना चाहिए।
- सत्यापन: AI और ChatGPT द्वारा तैयार किए गए मसौदे की अंतिम जाँच एवं प्रमाणन अधिकारी द्वारा अवश्य की जानी चाहिए।
- अनुकूलन: इसे सरकारी नियमों और सुरक्षित प्लेटफॉर्म से जोड़कर ही प्रयोग करना चाहिए।

निष्कर्ष

सरकारी कार्यालयी कार्यों में AI और ChatGPT का प्रयोग प्रशासनिक दक्षता बढ़ाने, रूटीन कार्यभार घटाने और संचार की गुणवत्ता सुधारने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। उचित नियंत्रण और जाँच के साथ इसका उपयोग अधिकारी के लिए एक डिजिटल सहायक सिद्ध होगा, जिससे निर्णय-प्रक्रिया तेज़ होगी, नागरिक सेवाएँ अधिक पारदर्शी होंगी, और नियमों के पालन में आसानी होगी। इस प्रकार ChatGPT का प्रयोग स्मार्ट गवर्नेंस और आधुनिक प्रशासन की दिशा में एक सार्थक कदम है।

महाबतार बाबाजी महाराज



श्री सुभास चन्द्र साँतरा , मानचित्रकार, डि.वि. - ।

पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

बाबाजी महाराज हिन्दी में “महाबतार बाबाजी” संदर्भित करता है, जो एक महानजोगी और गुरु हैं वे हिमालय में रहेते हैं। उन्हें लाहीड़ी महाशय जैसे प्रसिद्ध जोगियों के गुरु के रूप में माना जाता है। उन्हें “अमर” माना जाता है वे अपने शिष्यों के सामने विभिन्न रूपों में प्रकट होते हैं। ऐसा कहा जाता है कि महाबतार बाबाजी ने 1861 में इस गुफा में लाहीड़ी महाशय को दीक्षित किया था और क्रियायोग की शिक्षा दी थी। जो उत्तराखंड के कुमाऊँ क्षेत्र में द्वाराहाट से 25 किलोमीटर और कुकुचिना दुनागिरि पर्वत से 3 किलोमीटर दूर स्थित है।

आविर्भाव 30 नवम्बर 203 ख्रिस्ताब्द, तमिलनाडु अमर गुरुमहामुनि बाबाजी महाराज, महायोगी त्रम्बक बाबा, शिव बाबा, महाबतार बाबाजी से मिलने के व्यक्तिगत अनुभवों को अक्षर गहन और परिवर्तनकारी बताया जाता है। ये अनुभव स्वप्नों में, गहन ध्यान में, या बाबाजी के साथ गहरे आंतरिक जुड़ाव के माध्यम से हो सकते हैं। कोई व्यक्तियों ने बाबाजी के साथ मुलाकातों को साझा किया है और इन अनुभवों गहन आध्यात्मिक प्रभाव को व्यक्त किया है।

बाबाजी ने लाहीड़ी महाशय को दुनिया भर में क्रियायोग प्रसार करने का निर्देश दिया था। उनके चमत्कारी प्रकटन और तिरोभव कि दृश्य लील, जैसा कि उनके शिष्यों लाहीड़ी महाशय, स्वामी प्रनबानन्द, स्वामी श्रीयुक्तेश्वर और परमहंस स्वामी कबलानन्द द्वारा वर्णित है। अगर कोई लगातार आराम की तलाश में रहेते हैं तो उस तरह कामन और भावना क्रियायोग मार्ग के लिए अनुपयुक्त है। उन लोगों के साथ क्रियायोग नहीं किया जा सकता हैं, जो हर तरह “आजादी” की बात करते हैं।

परमहंस योगानन्द कि महाबतार बाबाजी से मुलाकात 25 जुलाई 1920 को हुई थी, यह मुलाकात योगानन्दजी की प्रार्थना का परिणाम थी, जो उन्होंने क्रियायोग की शिक्षाओं को दुनियाभर में फैलाने के लिए अमेरिका यात्रा किए थे। उन्होंने कहा श्री चक्र, श्री यंत्र के नाम भी जाना जाता हैं, एक पवित्र ज्यामितीय आरेख है जो अनन्त आदिम उर्जा का प्रतिक हैं क्योंकि यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त है।

कभी कभी बाबाजी का चेहरा लाहीड़ी महाशय से मिलता जुलता हैं। कभी कभी यह समानता इतनी स्पष्ट होती थीकी अपने अंतिम वर्षों में लाहीड़ी महाशय, युवा दिखने वाले बाबाजी के पिता प्रतीत होते थे। बाबाजी एक भारतीय सम्मान सूचक शब्द हैं जिसका अर्थ है “पिता” आम तौर पर बड़े सम्मान के साथ या किसी पुजारी के लिए। लाहीड़ी महाशय अपने अंतर्जामियों के साथ बाबाजी का संवाद किसी चमत्कार से कम नहीं है। उनमें अपनी इच्छानुसार प्रकट होने अदृश्य होने की शक्ति है, और अपने हिमालय के गुप्त अभयारण्यों में अपने शिष्यों को शिक्षा देते हैं।

महाबतार बाबाजी से मिलने के लिए ब्यक्तिओं को अबसर गहरी अध्यात्मिक प्रथायों जैसे ध्यान, प्रार्थना, और बाबाजी के नाम के श्रद्धा और प्रेम के साथ जप करने की सलाह दी जाती है। लाहीड़ी महाशय ने अपनी जन्म कथा में उन्होंने उल्लेख किया हैं। इन ब्रितान्तों का साथ साथ अन्य कथित घटनाओं का बर्णन किया हैं। बाबाजी महाराज और उनकी बहन दशास्वमेध स्नान घाट पर रामगोपाल के सामने एक प्रकाश कि चमक से प्रकट हुए, जिन्हें उनके गुरु लाहीड़ी महाशय ने वहां जाने के लिए कहा था।

आध्यात्मिक रूप से ये दिव्य उर्जाओं के साथ आप की जुड़ाव को गहरा करते हैं। मानसिक रूप से ये तनाब को कम करते हैं और एकाग्रता को बढ़ाते हैं। शारीरिक रूप से, ये शरीर के उर्जा केंद्र या चक्रों में समंजश्य स्थापित करते हैं, ध्वनि कम्पन इस प्रक्रिया कि कुंजी हैं, जो भीतर गूंज कर अपचार समंजश्य को बढ़ावा देते हैं। हाँ आप कह सकते हैं की हिन्दू शब्दबाली में बाबाजी बिष्णु के अबतार हैं। सान्निध्य पाने के लिए सच्ची भक्ति, इश्वर के प्रति प्रेम निश्चार्थ सेवा आवश्यक मानी जाती हैं। बाबाजी अपनी शारीर को इच्छानुसार बिघटित और एकीकृत कर सकते हैं। इसलिए वे केबल आबश्यकता पड़ने पर ही भौतिक शरीर धारण करते हैं। बाबाजी 64 सिशिन्याँ (अलौकिक शक्तिओं) से मुक्त एक शक्तिशाली गुरु हैं।

ऐसा माना जाता हैं की शक्ति को नब दर्शन देते हैं, जब वह अपनी इच्छा पूरी कर लेता हैं, और अपनी अध्यात्मिक यात्रा में अत्याधिक आगे बढ़ जाता हैं, इसलिए बाबाजी को महाबतार कहते हैं।

ॐ शांति: ॐ शांति: ॐ शांति:

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः । स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥

[क्रोध से उत्पन्न होता है मोह और मोह से स्मृति विभ्रम। स्मृति के भ्रमित होने पर बुद्धि का नाश होता है और बुद्धि के नाश होने से वह मनुष्य नष्ट हो जाता है। भगवद्गीता अध्याय -2, श्लोक-63]

भारतीय सर्वेक्षण विभाग की भू-स्थानिक नीति



श्री बबलू नस्कर, सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

प्रस्तावना :

भारतीय सर्वेक्षण विभाग (Survey of India) की स्थापना वर्ष 1767 में की गई थी। यह भारत सरकार का सबसे प्राचीन वैज्ञानिक विभाग है और देश का प्रधान राष्ट्रीय सर्वेक्षण एवं मानचित्रण संगठन है। यह विभाग विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय (Department of Science & Technology) के अधीन कार्य करता है।

इसका मुख्य दायित्व देश के वैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सुरक्षा हितों के लिए सटीक, अद्यतन एवं विश्वसनीय स्थलाकृतिक (Topographical) तथा भू-स्थानिक (Geospatial) आंकड़े उपलब्ध कराना है।

मुख्य दायित्व एवं कार्यक्षेत्र :

भारतीय सर्वेक्षण विभाग के प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं –

1. स्थलाकृतिक मानचित्रण (Topographical Mapping): देश के समस्त क्षेत्रों का विभिन्न पैमानों पर सर्वेक्षण एवं मानचित्रों का अद्यतन।
2. भू-देशीय सर्वेक्षण (Geodetic Survey): राष्ट्रीय भू-देशीय नेटवर्क का स्थापना एवं अनुरक्षण, जो सभी प्रकार के मानचित्रण एवं नेविगेशन का आधार होता है।
3. सीमाओं का निर्धारण (Boundary Demarcation): भारत की अंतर्राष्ट्रीय एवं अंतर-राज्यीय सीमाओं का वैज्ञानिक निर्धारण एवं संधारण।
4. विषयगत एवं डिजिटल मानचित्रण (Thematic and Digital Mapping): विकास योजनाओं, संसाधन प्रबंधन एवं आपदा न्यूनीकरण हेतु विशेष मानचित्रों की तैयारी।
5. रक्षा एवं रणनीतिक सहयोग: राष्ट्रीय सुरक्षा, सीमा प्रबंधन तथा रक्षा उपयोग के लिए सटीक मानचित्रों की उपलब्धता सुनिश्चित करना।

राष्ट्रीय भू-स्थानिक नीति (National Geospatial Policy – 2022):

भारत सरकार ने वर्ष 2022 में राष्ट्रीय भू-स्थानिक नीति (NGP) को अधिसूचित किया, जिसका उद्देश्य देश में भू-स्थानिक आंकड़ों की उपलब्धता, पहुंच एवं उपयोग को प्रोत्साहित करना है।

इस नीति के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

मानचित्रण एवं आंकड़ा उपयोग का उदारीकरण: भारतीय संस्थाओं को भू-स्थानिक आंकड़ों तक अधिक स्वतंत्र पहुंच प्रदान करना, जिससे निजी क्षेत्र, अनुसंधान एवं नवाचार को बढ़ावा मिले।

राष्ट्रीय भू-देशीय ढांचे को सुदृढ़ बनाना: उन्नत भू-देशीय तकनीकों जैसे Global Navigation Satellite System (GNSS), Continuously Operating Reference Stations (CORS) एवं अन्य उन्नत भू-देशीय विधियों के माध्यम से सर्वेक्षण की शुद्धता बढ़ाना।

नवाचार एवं उद्यमिता को प्रोत्साहन: सार्वजनिक-निजी भागीदारी के माध्यम से भू-स्थानिक उद्योग एवं स्टार्टअप्स को बढ़ावा देना।

क्षमता निर्माण (Capacity Building): अधिकारियों एवं तकनीकी कर्मियों को आधुनिक सर्वेक्षण तकनीकों, रिमोट सेंसिंग एवं ड्रोन संचालन का प्रशिक्षण देना।

राष्ट्रीय डिजिटल कार्यक्रमों के साथ एकीकरण: भू-स्थानिक नीति को डिजिटल इंडिया, स्मार्ट सिटीज मिशन, और भारत मैप्स जैसे कार्यक्रमों से जोड़ना।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग की भूमिका और आधुनिक पहल :

राष्ट्रीय भू-स्थानिक नीति के सफल क्रियान्वयन में भारतीय सर्वेक्षण विभाग अग्रणी भूमिका निभा रहा है। विभाग ने LiDAR, UAV (ड्रोन) आधारित मानचित्रण, GNSS आधारित नियंत्रण नेटवर्क तथा डिजिटल कार्टोग्राफी जैसी अत्याधुनिक तकनीकों को अपनाया है।

इस क्रम में पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम जीडी, पूर्वी क्षेत्र (Eastern Zone) के अधिकारियों द्वारा दो महत्वपूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया गया –

1. “Strengthening of Positioning Infrastructure through Advanced Geodetic Methods” नामक पाठ्यक्रम, जो आई.आई.टी. कानपुर में आयोजित हुआ।

2. ड्रोन पायलट प्रशिक्षण, जो गुरुग्राम (हरियाणा) में 01 से 06 सितम्बर 2025 तक आयोजित किया गया।

सभी प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूर्ण किया एवं नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (DGCA) द्वारा प्रदत्त ड्रोन पायलट प्रमाणपत्र प्राप्त किया।

ये प्रशिक्षण कार्यक्रम विभाग की उस नीति को सशक्त बनाते हैं जिसके अंतर्गत सर्वेक्षण कार्यों में आधुनिक तकनीकों का प्रयोग, आंकड़ों की सटीकता में वृद्धि एवं आत्मनिर्भरता (Self-Reliance) सुनिश्चित की जा रही है।

निष्कर्ष :

भारतीय सर्वेक्षण विभाग देश के विज्ञान, विकास एवं सुशासन का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। भू-स्थानिक नीति के कार्यान्वयन के माध्यम से यह विभाग भारत को एक डेटा-संचालित, तकनीकी रूप से सक्षम राष्ट्र बनाने में योगदान दे रहा है।

आधुनिक तकनीकों के प्रयोग, प्रशिक्षित मानव संसाधन, तथा सार्वजनिक-निजी सहयोग से भारतीय सर्वेक्षण विभाग अपने गौरवशाली इतिहास को आगे बढ़ाते हुए देश की भू-स्थानिक आत्मनिर्भरता की दिशा में दृढ़तापूर्वक अग्रसर है।

सेवा, संकल्प और संवेदना का अवसान-क्षण



श्री सुदेब नस्कर, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

सरकारी सेवा के वर्षों को समेटते हुए जब कोई कर्मचारी सेवानिवृत्ति के द्वार पर खड़ा होता है, तब उसके जीवन की फाइलों में केवल आदेश, टिप्पणियाँ और हस्ताक्षर ही नहीं होते—उन पन्नों के बीच अनकही थकान, मौन त्याग और अनवरत कर्तव्यबोध भी सहेजा होता है। मेरा जीवन भी आज ऐसे ही एक मोड़ पर खड़ा है, जहाँ कार्यालय की जिम्मेदारियाँ धीरे-धीरे विराम ले रही हैं, किंतु जीवन की सबसे बड़ी सेवा अभी भी निरंतर चल रही है।

सरकारी कार्यालय की समयबद्धता और अनुशासन के बीच मेरा प्रत्येक दिन आरंभ होता था—फाइलों की गंध, घंटियों की आवाज़ और कार्यालय की अपेक्षाओं के भार के साथ। परंतु कार्यालय से लौटते ही एक दूसरा संसार मेरी प्रतीक्षा करता था—जहाँ न कोई पद था, न कोई अवकाश, केवल सेवा थी। वृद्ध और रोगग्रस्त माता-पिता की सेवा, जो किसी भी सरकारी नियमावली में दर्ज नहीं, किंतु जीवन की सबसे पवित्र ड्यूटी है।

माँ की कमजोर होती आँखें और पिता की काँपती उँगलियाँ मुझसे कोई प्रश्न नहीं करती थीं; वे केवल मेरी उपस्थिति में ही आश्वस्त हो जाती थीं। दवाइयों का समय, चिकित्सकों की सलाह, रातों की जागरण और मन की चिंता—इन सबके बीच मैंने कभी अपने कर्तव्य को दो भागों में नहीं बाँटा। एक कर्तव्य था राष्ट्र के प्रति, दूसरा जन्मदाताओं के प्रति। दोनों ही मेरे लिए समान रूप से पवित्र रहे।

कई बार ऐसा हुआ कि कार्यालय की थकान शरीर को तोड़ देती थी, किंतु माँ के माथे पर हाथ रखते ही जैसे आत्मा को विश्राम मिल जाता था। पिता की चुप्पी में छिपा असहायपन मुझे यह स्मरण कराता था कि जिन कंधों पर बैठकर मैंने जीवन की ऊँचाइयाँ देखीं, आज उन्हीं कंधों को सहारे की आवश्यकता है। उस क्षण कोई प्रमोशन, कोई प्रशंसा पत्र महत्वपूर्ण नहीं लगता था।

सरकारी सेवा ने मुझे अनुशासन सिखाया, किंतु माता-पिता की सेवा ने मुझे मनुष्य बनाया। कार्यालय में समय की सीमा थी, पर घर में सेवा का कोई समय नहीं। बीमारी छुट्टी नहीं देखती, वृद्धावस्था अवकाश नहीं माँगती। फिर भी इस निःशब्द संघर्ष में कभी बोझ का अनुभव नहीं हुआ—क्योंकि सेवा, जब प्रेम से की जाए, तो वह थकान नहीं देती, बल्कि अर्थ देती है।

आज जब सेवानिवृत्ति का क्षण निकट है, मन में संतोष है कि मैंने अपनी भूमिका ईमानदारी से निभाने का प्रयास किया। मैंने न तो कार्यालय की जिम्मेदारियों से मुँह मोड़ा, न ही माता-पिता की सेवा को किसी बहाने से टाला। यह संतुलन ही मेरी सबसे बड़ी उपलब्धि है।

यह लेख किसी आत्मप्रशंसा का माध्यम नहीं, बल्कि समाज के लिए एक मौन आग्रह है—कि हम विकास और प्रगति की दौड़ में अपने मूल कर्तव्यों को न भूलें। माता-पिता की सेवा कोई बाधा नहीं, बल्कि जीवन का सबसे बड़ा संस्कार है। और यदि सरकारी सेवा हमें राष्ट्रभक्ति सिखाती है, तो माता-पिता की सेवा हमें मानवता का पाठ पढ़ाती है।

सेवानिवृत्ति के बाद शायद कार्यालय की फाइलें मेरे हाथों में न हों, किंतु माँ का सहारा बना हाथ और पिता की आँखों में झलकता विश्वास—यही मेरी सबसे बड़ी पूँजी रहेगी। यही मेरी असली पेंशन है, यही मेरा सम्मान।

साइबर सुरक्षा: आज की प्रमुख चुनौतियाँ और आसन्न खतरे



श्री उत्तम कुमार साधुखां, मानचित्रकार, डिव-1
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

1. एआई-आधारित साइबर हमले बढ़े

2025 में साइबर अपराधियों ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का इस्तेमाल न केवल रक्षात्मक बल्कि आक्रमण के लिए भी बढ़े पैमाने पर किया। AI-द्वारा संचालित फ़िशिंग, स्वचालित मालवेयर वितरण और सोशल इंजीनियरिंग हमले बेहद परिष्कृत हो गए हैं, जिससे पहचान-चोरी और डेटा उल्लंघन की घटनाएँ सामान्य हो गई हैं।

👉 AI “दोधारी तलवार” बन चुका है — जहां यह सुरक्षा उपकरणों को बेहतर बनाता है, वहीं यह अपराधियों को अधिक तेज, स्वचालित और लक्ष्य-अनुकूल हमले करने की शक्ति भी देता है।

2. रैंसमवेयर और डेटा चोरी में इज़ाफ़ा

रैंसमवेयर आज भी सबसे बड़ा साइबर खतरा है। वित्तीय संस्थानों, शिक्षा, स्वास्थ्य और संचालन नियंत्रण प्रणालियों को निशाना बनाने वाले इंफ़्रास्ट्रक्चर-लैवल रैंसमवेयर हमलों का ग्राफ़ 2025 में तेजी से ऊँचा हुआ है।

🔴 उदाहरण: एक लघु विद्यालय नेटवर्क पर बड़ा रैंसमवेयर हमला, जिसमें हजारों बच्चों और कर्मचारियों का डेटा चोरी कर लिया गया।

3. मैसेजिंग ऐप्स और नई तकनीकें हमले का ज़रिया

जैसे-जैसे उपयोगकर्ता मोबाइल मैसेजिंग ऐप्स (जैसे WhatsApp) पर भरोसा करते हैं, अपराधी इन्हें मालवेयर फैलाने के नए चैनल के रूप में उपयोग कर रहे हैं।

4. स्मार्ट-डिवाइस और IoT सुरक्षा जोखिम

स्मार्ट होम डिवाइसेज़ और इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स (IoT) उपकरणों पर हमले 2025 में तीव्र बढ़े। कमजोर पासवर्ड, पुराने सॉफ़्टवेयर और कमजोर प्रमाणीकरण के कारण ये डिवाइसेज़ साइबर अपराधियों के लिए आसान लक्ष्य बन चुके हैं।

5. Deepfake और नकली सामग्री की समस्या

साइबर अपराध अब केवल डेटा चोरी तक सीमित नहीं है — **डिफ़मेक (Deepfake) तकनीक** का इस्तेमाल असली की तरह दिखने वाले वीडियो/ऑडियो बनाकर धोखाधड़ी, अफ़वाह फैलाने, वित्तीय धोखों और पहचान छेड़छाड़ में किया जा रहा है।

भारत में साइबर सुरक्षा की स्थिति

1. सरकार की नई नीतियाँ

भारत सरकार ने 2025 में साइबर अपराधों से निपटने के लिए **नए साइबर सुरक्षा नियम** लागू किए हैं, जिनके तहत फर्जी कॉल/संदेशों और फसलों को रोकने के लिए टेलीकॉम और ऐप प्रदाताओं पर कड़े नियम लागू किए गए हैं।

- नया बदलाव: अब बिना सक्रिय SIM के WhatsApp जैसे ऐप्स काम नहीं कर पाएंगे, जिससे फ़ोन नंबर आधारित धोखों को रोकने में मदद मिलेगी।

2. कॉर्पोरेट और संस्थागत सुरक्षा

कई भारतीय कंपनियाँ अगले 12 महीनों में **समर्पित साइबर सुरक्षा विशेषज्ञों को नियुक्त करने** की योजना बना रही हैं ताकि डिजिटल पहचान, नेटवर्क सुरक्षा और सुरक्षा निगरानी को मजबूती दी जा सके।

3. बीएसएफ और राष्ट्रीय सुरक्षा

सीमा सुरक्षा बल (BSF) ने साइबर सुरक्षा उपायों को बढ़ाने की पहल की है, जिससे सीमा-आधारित नेटवर्क और डेटा संरचनाओं की सुरक्षा सुनिश्चित की जाएगी।

4. सोशल प्लेटफॉर्म सुरक्षा फीचर्स

Meta (WhatsApp/Facebook) ने खासकर वरिष्ठ नागरिकों और आम उपयोगकर्ताओं को साइबर धोखों से बचाने के लिए नए **सुरक्षा अलर्ट और फीचर्स** पेश किए हैं।

भविष्य की चुनौतियाँ और तैयारियाँ

📌 Zero Trust Security

समय-समय पर साबित हुआ है कि पारंपरिक सुरक्षा मॉडल अब पर्याप्त नहीं हैं। इसलिए कई कंपनियाँ **Zero Trust Architecture** अपना रही हैं — यानी “कभी भरोसा मत करो, हमेशा सत्यापित करो।”

AI-सुरक्षित सुरक्षा प्रणालियाँ

AI आधारित डिटेक्शन और ऑटोमेटिक रिस्पॉन्स सिस्टम्स रिस्क को कम करने में अहम भूमिका निभा रहे हैं। AI सुरक्षा उपकरण नेटवर्क ट्रैफिक का विश्लेषण, अनोखी पैटर्न पहचान और हमलों की पूर्व चेतावनी देने में सक्षम हैं।


Post-Quantum Cryptography

जैसे-जैसे क्वांटम कंप्यूटिंग का विकास हो रहा है, पुरानी क्रिप्टोग्राफी कमजोर हो सकती है। इसीलिए भारत और अन्य देशों में **Post-Quantum Cryptography (PQC)** जैसे सुरक्षित एन्क्रिप्शन पद्धतियाँ अपनाई जा रही हैं।

भविष्य के खतरे

2026 के लिए विशेषज्ञ कह रहे हैं कि पहचान (identity) मुख्य लक्ष्य क्षेत्र बनेगी और आक्रमणकारी एजेंटिक AI जो अपने आप निर्णय लेने में सक्षम होगा, नेटवर्क सुरक्षा को और कठिन बना देगा।

निष्कर्ष — सुरक्षित भविष्य की ओर

 साइबर सुरक्षा अब सिर्फ तकनीकी विषय नहीं है — यह **राष्ट्र-स्तर, कॉर्पोरेट रणनीति, तकनीकी अवसंरचना और व्यक्तिगत जागरूकता** का मुख्य भाग बन चुकी है।

अब सुरक्षा केवल फ़ायरवॉल या एंटीवायरस से आगे बढ़कर:

- ✓ AI-सक्षम निगरानी
- ✓ सुरक्षित प्रमाणीकरण
- ✓ प्रशिक्षण और जागरूकता
- ✓ सरकारी नीतियाँ
- ✓ सक्रिय जोखिम प्रबंधन पर आधारित हो रही है।

चित्रांकन

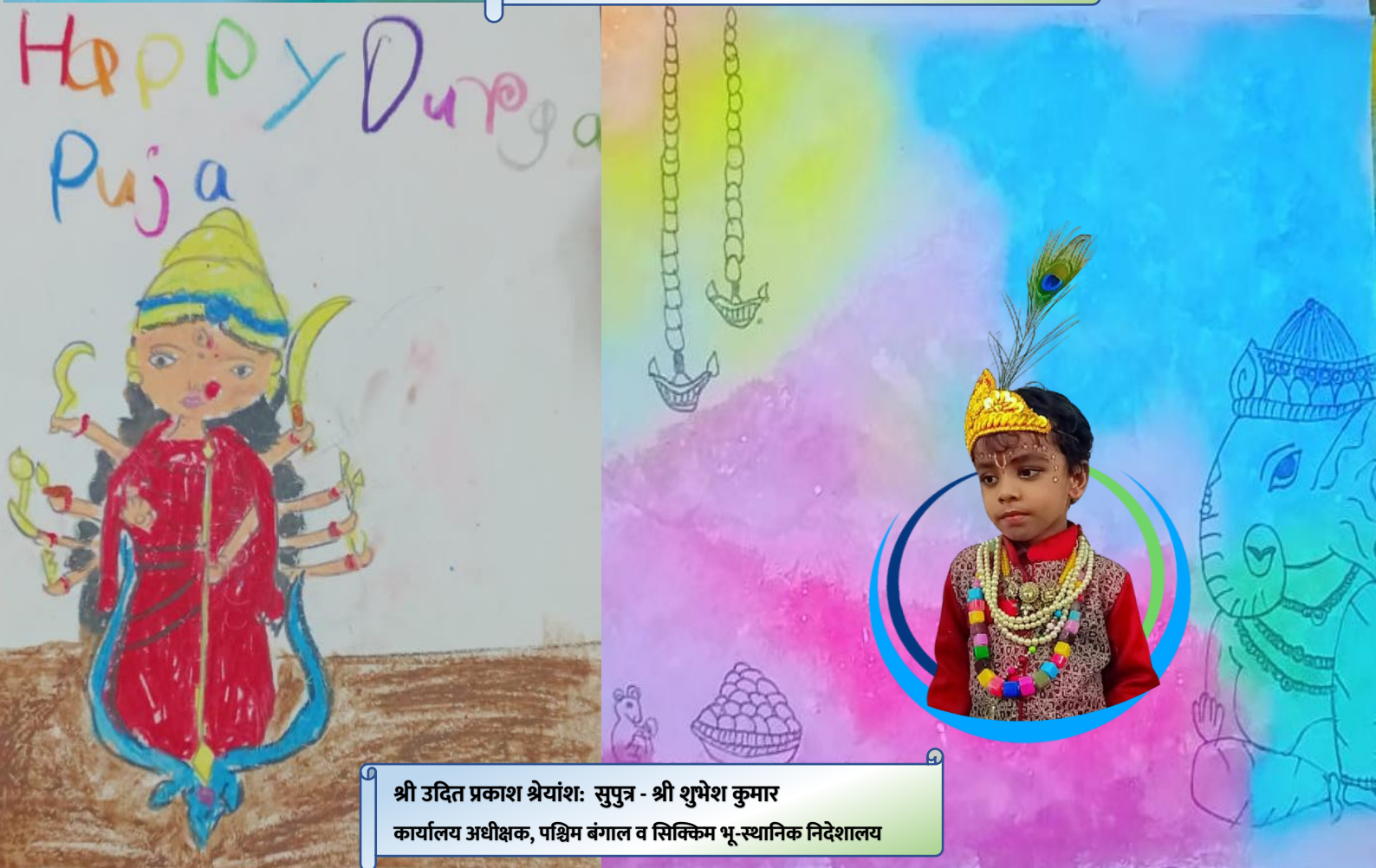
निदेशालय के कर्मियों के बच्चों की चित्रांकन प्रतिभा



सुश्री अस्मिता मित्रा, सुपुत्री: श्रीमती सीमा मित्रा
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



सुश्री शुचि दास: सुपुत्री - श्री शुभेश कुमार
कार्यालय अधीक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



श्री उदित प्रकाश श्रेयांशः सुपुत्र - श्री शुभेश कुमार
कार्यालय अधीक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



सुश्री संजुती दास: सुपुत्री - श्री प्रलय कुमार दास

अधिकारी सर्वेक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय

senjuti das



सुश्री प्रीती सरकार: सुपुत्री - श्री स्वपन कुमार सरकार
कार्यालय अधीक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



श्री अहान प्रसाद: सुपुत्र - श्री संतोष प्रसाद

अधिकारी सर्वेक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



सुश्री अन्विता प्रसाद: सुपुत्री - श्री संतोष प्रसाद

अधिकारी सर्वेक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



सुश्री शुचि दास: सुपुत्री - श्री शुभेश कुमार

कार्यालय अधीक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



POCO X5 PRO 5G

श्री कीर्तिमान सरकार: सुपुत्र - श्री स्वपन कुमार सरकार
कार्यालय अधीक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



सुश्री शुचि दास: सुपुत्री - श्री शुभेश कुमार
कार्यालय अधीक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



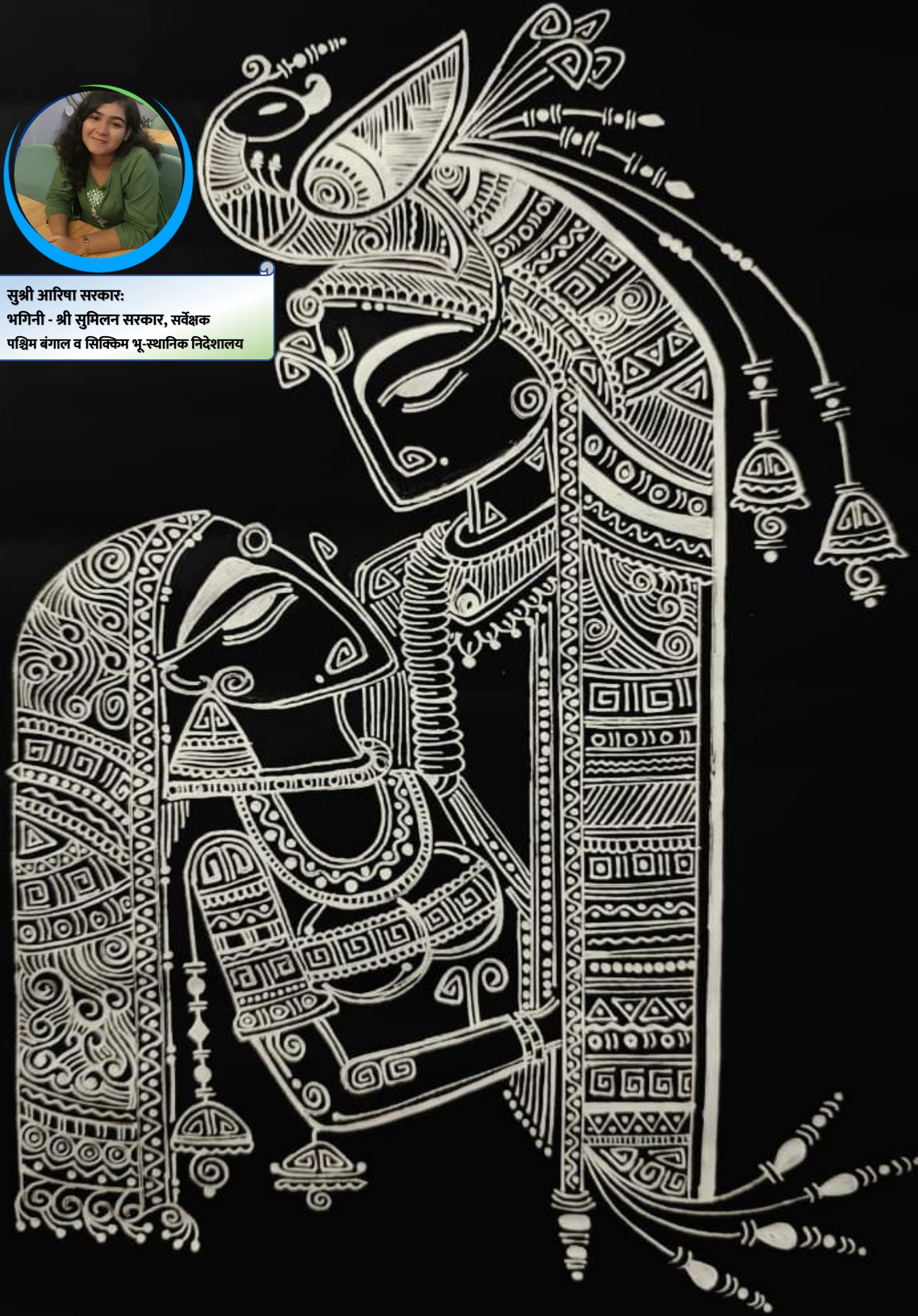
श्री उदित प्रकाश श्रेयांश: सुपुत्र - श्री शुभेश कुमार
कार्यालय अधीक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



सुश्री आरिषा सरकार:

भगिनी - श्री सुमिलन सरकार, सर्वेक्षक

पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय





सुश्री ज्योति कुमारी, प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय



हिन्दी

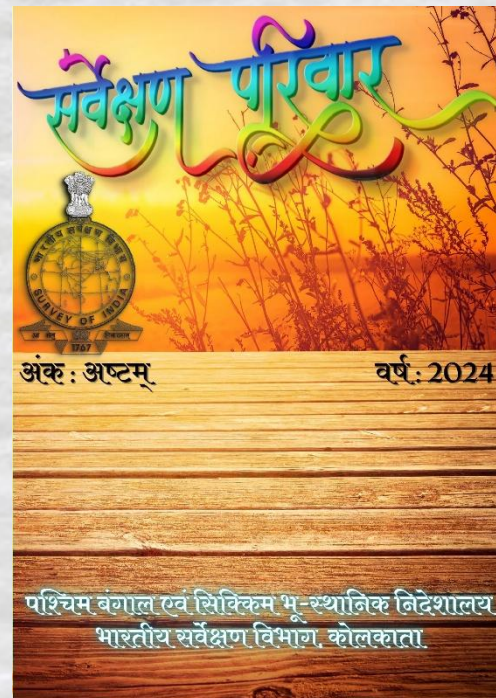
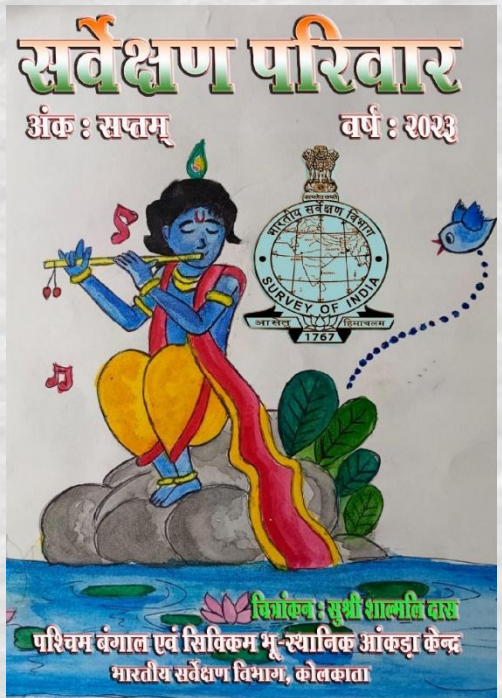
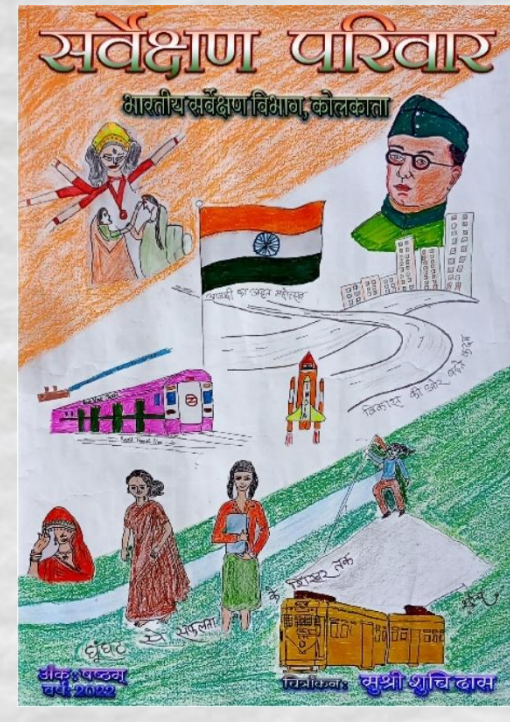
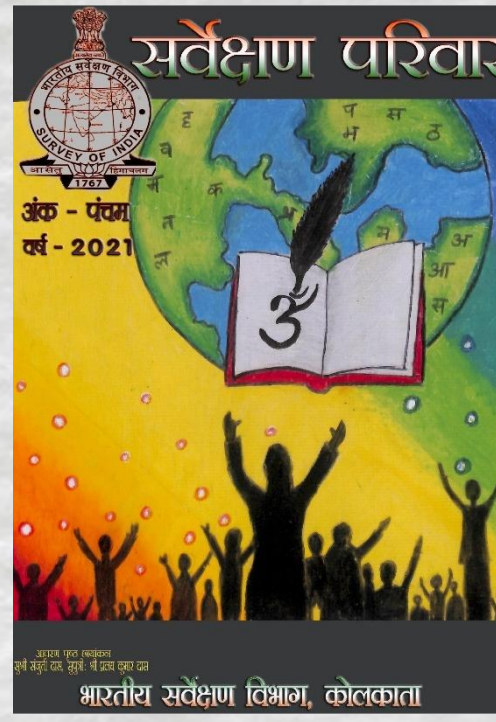
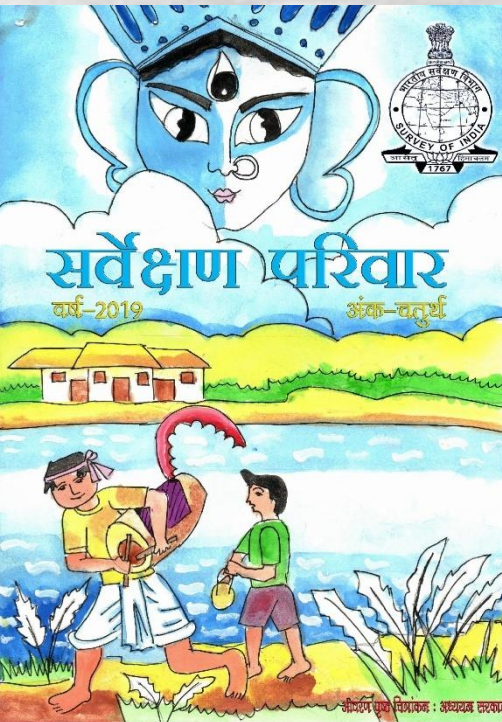
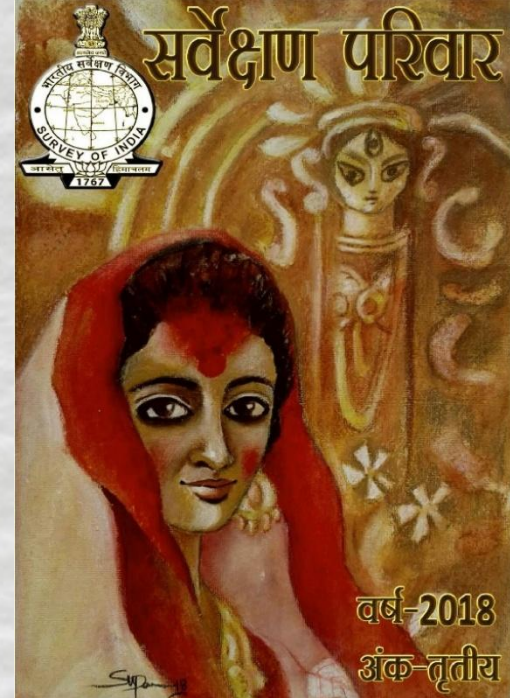
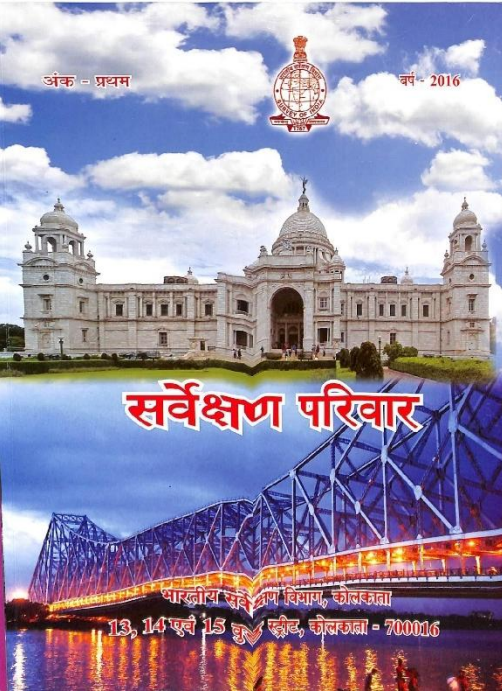
जो मेरा मान है, सबका अभिमान है,
जो मानभाषाओं की, करती सदा सम्मान है,
भारत की विविधता में, जो सृष्टि की पहचान है,
वो हमारी प्यारी 'हिन्दी,' भारत माँ की शान है।

शुचि दास
कक्षा - दूठी 'अ'



सुश्री शुचि दास: सुपुत्री - श्री शुभेश कुमार
कार्यालय अधीक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय





**‘सर्वेक्षण परिवार’
के पूर्ववर्ती अंकों
की झलकियां**

सर्वेक्षण परिवार

अंक: नवम्

वर्ष: 2025



पूर्वी क्षेत्र कार्यालय तथा
पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक निदेशालय